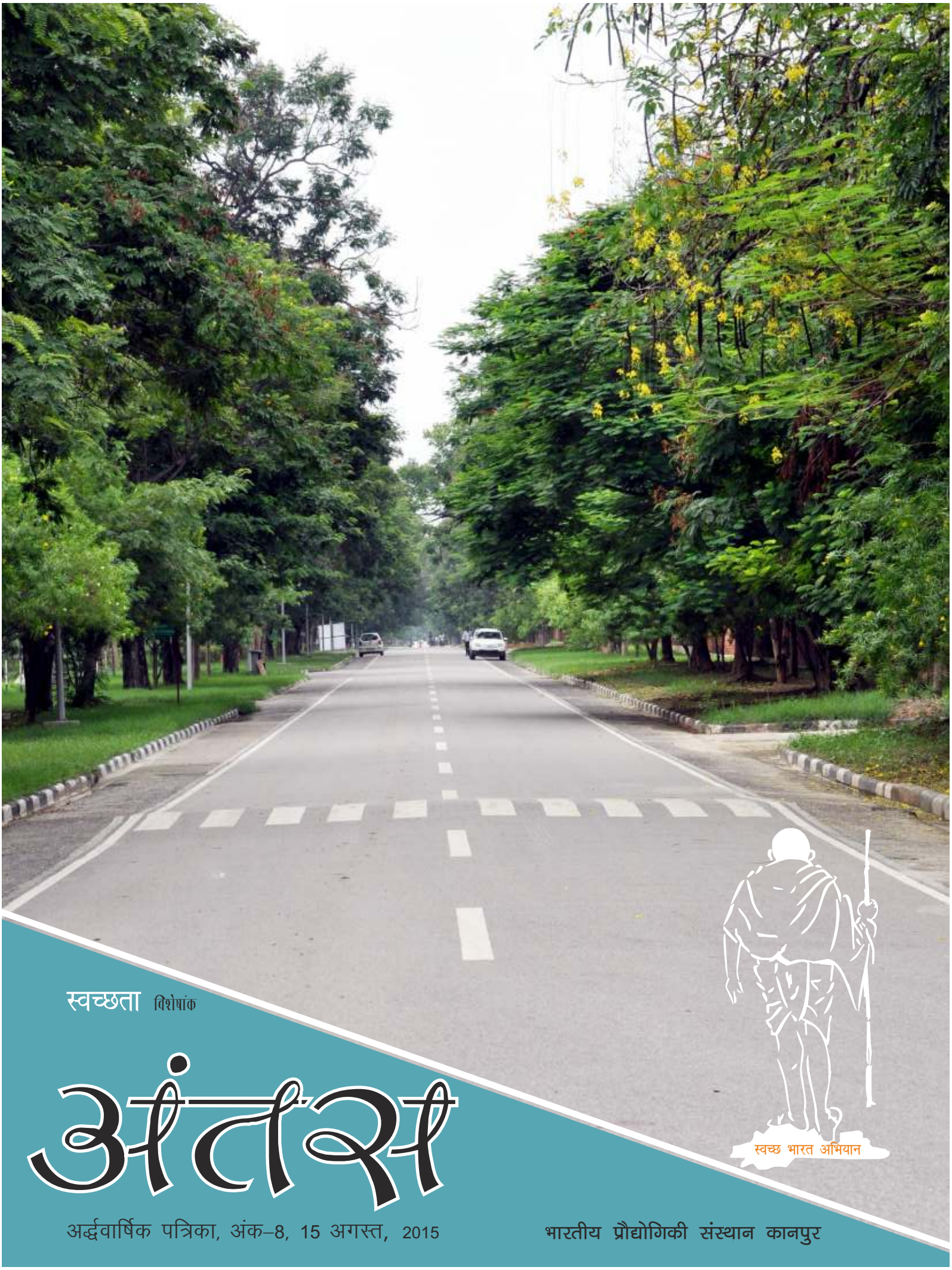

स्वच्छता विशेषांक

अंतस

स्वच्छ भारत अभियान

अर्द्धवार्षिक पत्रिका, अंक–8, 15 अगस्त, 2015

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

नियम-निदेश

- अंतस के आगामी अंक में प्रकाशन हेतु अपनी मौलिक एवं यथासंभव अप्रकाशित रचनाएं शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें।
- रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क नम्बर का उल्लेख अपेक्षित है।
- लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आंकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होने चाहिए। प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।
- अनूदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान राजभाषा प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।
- प्रकाशन के लिए किसी भी लेखक को किसी प्रकार का मानदेय नहीं दिया जाएगा।
- अंतस में उन सभी प्रकार के विचारों का स्वागत होगा जो संस्थान परिसर में रहने अथवा काम करने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं किन्तु किसी भी प्रकार के राजनीतिक विचारों को प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा।
- अंतस में प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मण्डल अथवा हिन्दी प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी ज़िम्मेदारी स्वयं लेखक की ही होगी।
- रचनाएं अंतस के अनवरत दो अंकों में प्रकाशित न होने की स्थिति में संबंधित रचनाकार राजभाषा प्रकोष्ठ में सुनीता सिंह से उसके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- ऑनलाइन पढ़ने के लिए क्लिक करें http://www.iitk.ac.in/new/antas

स-आभार
संपादक मंडल

संरक्षक
प्रोफेसर इन्द्रनील मान्ना
निदेशक

परामर्शदाता
प्रोफेसर अजित चतुर्वेदी
उपनिदेशक

मुख्य संपादक
प्रोफेसर भारत लोहनी

संपादक
डॉ. वेदप्रकाश सिंह

संपादन-सहयोग
प्रोफेसर अरुण कुमार शर्मा
प्रोफेसर समीर खांडेकर
प्रोफेसर सर्वेश चन्द्रा
प्रोफेसर शिखा दीक्षित
प्रोफेसर कांतेश बलानी
विष्णु प्रसाद गुप्ता

अभिकल्प (Design)
सुनीता सिंह

वर्तनीशोधन
जगदीश प्रसाद
भारत देशमुख

छायाचित्र
रवि शुक्ल

सहयोग
(विद्यार्थी) हिंदी साहित्य सभा

अंतस परिवार

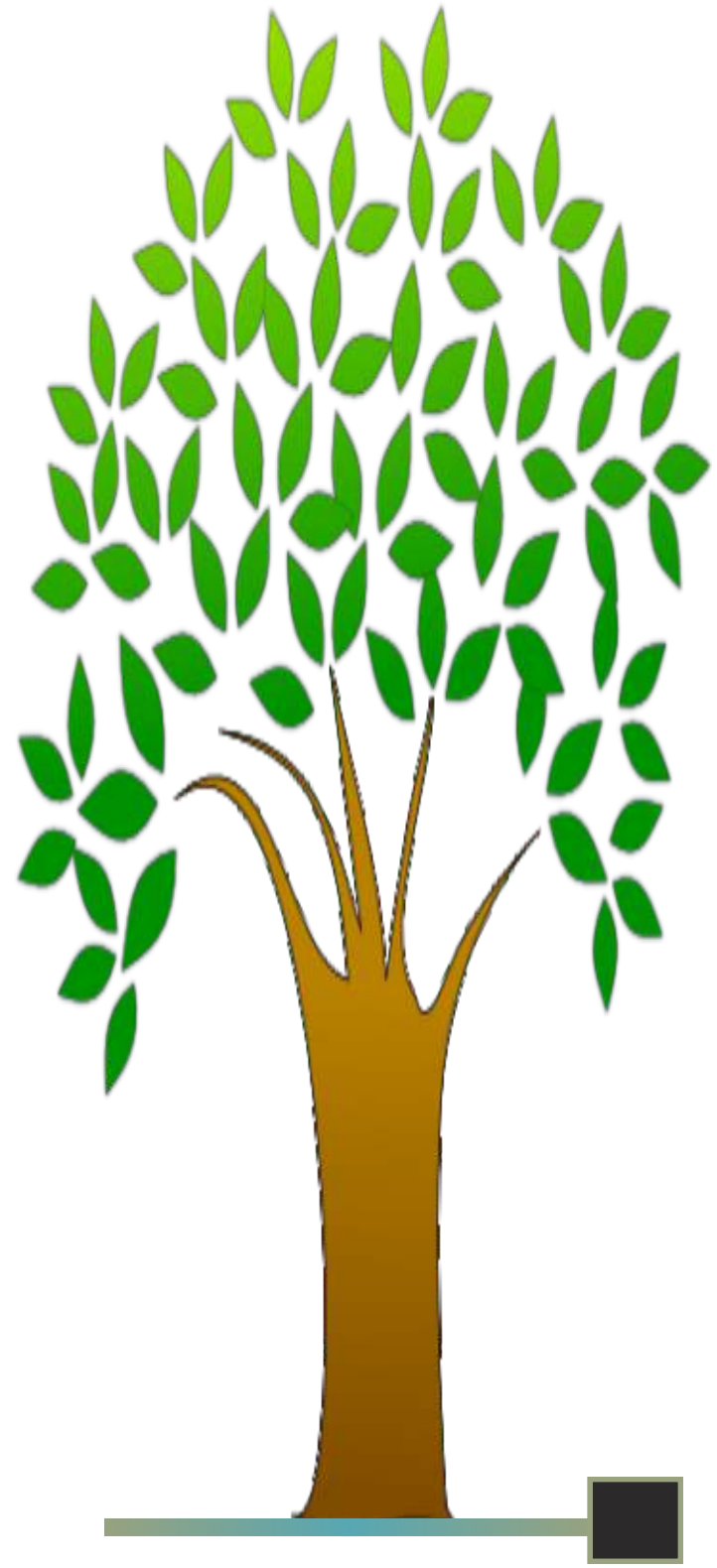

संकेतक

शुभेच्छा

निदेशक की कलम से 1
उप निदेशक की दृष्टि में 2
सम्पादकीय 3

साक्षात्कार

श्री मिशेल डनिनो 4

अतिथि लेख

सोशल मीडिया : इस्तेमाल पर निर्भर असर 8
खिड़कियाँ 9

सरोकार

शीतकाल में सावधान : स्वाइन फ्लू के प्रति जागरूकता व बचाव 11

साहित्य यात्रा

एक दिन (कविता) 10
खुद को मैं ढूँढ़ता हूँ (कविता) 10
पगडंडी (कविता) 13
वक्त बुरा है छूटे साथी (कविता) 13
स्वच्छ भारत (लेख) 14
क्यों कर रहे अपमान तुम? (कविता) 18
नकाब (कविता) 18
16 lakhs per annum ctc (पैकेज) के जॉब के इंटरव्यू के कुछ अंश....(लेख) 19
आस (लेख) 21
वो (कविता) 22
परिवर्तन की बयार (लेख) 23
एक गान (कविता) 26
व्यर्थ वस्तु की खोज (लघु कथा) 27
पहली बारिश का पहला शो (रेखाचित्र) 28
परछाईयाँ (कविता) 29
स्वच्छता, खुशहाली की ओर एक कदम (कविता) 30
एक बोझ (कविता) 40
भा.प्रौ.सं.कानपुर में रासायनिक अपशिष्ट प्रबंधन (लेख) 41
हिंदी की गौरव गाथा (लेख) 43
समय की सिकता (कविता) 45
हवा की सीख (कविता) 45
स्वच्छ भारत अभियान और हम (लेख) 46
भा.प्रौ.सं.-कल, आज और कल (लेख) 48
आपके नाम की (कविता) 50

परिसर की गतिविधियाँ (छायाचित्र) 31
हिंदी व्याख्यान
प्रथम महिला एल्युमनी मीट
शैक्षणिक श्रेष्ठता पुरस्कार
आरटीआई पर कार्यशाला
योग दिवस

बालबत्तीसी

बेईमानी का नतीजा (कहानी) 37
आओ सीख 39
अंधकाल मिटा दे (कविता) 39

भाषा विमर्श

काव्य हेतु 33
राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निर्देष 34

हिंदी साहित्य सभा 36
परिचय

कार्यालयीन उपयोगी टिप्पणियाँ 51

निदेशक की कलम से

हम सदा से मानते आये हैं कि शिक्षा व्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ आभूषण है जो उसे सदैव अलंकृत रखता है, आलोकित करता है तथा उसे एक सौम्य आभामंडल प्रदान करता है। अपनी शैक्षिक पृष्ठभूमि से वह न केवल दूसरों का अज्ञान दूर करता है, अपितु उनके अंतर की मलिनता दूर कर उन्हें निर्मल बनाता है। यहाँ हम मन की निर्मलता की नहीं वरन् बाह्य स्वच्छता की बात कर रहे हैं जो व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से अपने नेत्रों से दिखाई देती है। पुरानी कहावत है कि अपना घर और अपने घर के सामने सफाई रखो तो सारा गाँव स्वच्छ दिखाई देता है। परन्तु क्या हमारा देश हकीकत में ऐसा ही है? क्या हमारे गाँव, शहर, प्रदेश एवं देश सचमुच में स्वच्छ, साफ-सुथरे दिखाई देते हैं? हमें सोचना होगा हम अपने को ही देखें। जब हम बाह्य देशों में जाते हैं तो वहाँ की स्वच्छता से हमारे नेत्र विस्फारित हो जाते हैं? मॉरीशस, न्यूजीलैंड, जापान, जैसे छोटे-छोटे भी देश कितने साफ-सुथरे दिखाई देते हैं। यह वास्तव में इसलिये है कि यह वहाँ के लोगों के संस्कार हैं, जिसमें उन सबकी स्वत: स्फूर्त एक अनकही भागीदारी है। इसके विपरीत एक हम हैं जो विश्व की अग्रणी, समृद्धि की ओर उन्मुख अर्थव्यवस्था होते हुए भी स्वच्छता से कोसों दूर हैं।

आखिर हम क्यों और कब तक देश में आने वाले यात्रियों, भ्रमण कर्ताओं को नाक भौं सिकोड़ने का मौका देते रहेंगें? जरूरत है कि अब हम भी स्वच्छता के मामले में विश्व जमात में शामिल होने की ठोस कोशिश करें। हम निस्संदेह ऐसा कर सकते हैं। इसके लिए हमें बस परिवार एवं अपनी शिक्षा प्रणाली को इस तरह ढालने की जरुरत कि वह समाज के सभी अंगों में स्वच्छता के संस्कारों का सिंचन कर सके ताकि समय के साथ 'सर्वत्र स्वच्छता' हमारे जीवन का अपरिहार्य अंग बन जाए। आइए, इसकी शुरुआत में हम विलम्ब न करें।

मुझे अंतस का अष्टम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इस अंक को हम "सर्वत्र संपूर्ण स्वच्छता" को समर्पित करते हैं।

आपका शुभेच्छु

इन्द्रनील मान्ना
निदेशक

उपनिदेशक की दृष्टि में

स्वतंत्रता दिवस के इस पावन पर्व पर आप सबको हार्दिक बधाई।

संस्थान की पत्रिका अंतस का आठवाँ अंक आपके समक्ष है। मुझे प्रसन्नता है कि अंतस हिन्दी के प्रचार, प्रसार तथा प्रयोग में अपनी भूमिका सक्रिय रूप से निभा रही है तथा संस्थान समुदाय इसके माध्यम से इसमें अपना योगदान दे रहा है।

अंतस का यह अंक स्वच्छता को समर्पित है। संस्थान को पूर्णतया स्वच्छ रखकर हम स्वच्छता के प्रति अपने संकल्प को सिद्ध कर सकते हैं किन्तु इस हेतु संस्थान के प्रत्येक अंग को अपनी भूमिका निभानी होगी। छात्रगण अपने छात्रावासों को स्वच्छ रखें, परिसरवासी अपने आस-पास स्वच्छता बनायें रखने के लिए सतर्क रहें और दूसरो को भी प्रेरित करें। इसी तरह कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारीगण भी इस अच्छे कार्य में अपना योगदान दें। निर्माणाधीन स्थलों में तो इस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि निर्माण कार्यों में निर्माण सामग्री का फैलाव अधिक होता है जिससे वातावरण भी प्रदूषित होता है।

मुझे विश्वास है यदि संस्थान का हर सदस्य स्वच्छता को अपने आचरण का व्यावहारिक हिस्सा बना ले तो धीरे-धीरे वह न केवल अपने संस्थान बल्कि संस्थान के बाहर अन्य लोगों को भी स्वच्छता के प्रति जागरूक बनाने में सफल होगा।

आप सब इस अंक को अवश्य पढ़ें और हमें अवगत करायें कि यह अंक आपको कैसा लगा। आपके सुझाव निश्चय ही अंतस को समृद्ध करने में सहायक होगें।

धन्यवाद,

शुभेच्छा के साथ,

अजित चतुर्वेदी

अजित चतुर्वेदी

उपनिदेशक

सम्पादकीय

अंतस का यह अंक आप तक पहुँचाते हुये मुझे आज एक दंतकथा याद आ रही है। एक गांव में एक पहलवान रहता था। उसके घर में एक हाथी था। पहलवान हाथी को रोज हवा में ऊपर उठा लेता, फिर इधर-उधर घूमने के बाद उसे नीचे रख देता। गांव में आये एक मेहमान को यह सब देखकर अत्यंत आश्चर्य हुआ और उसने पहलवान से पूछा कि इतने बड़े हाथी को वह कैसे उठा लेता है? पहलवान बोला कि उसने हाथी को हाथी के पैदा होते ही उठाना शुरू कर दिया था। तब से वह रोज हाथी को उठाता है और हाथी को उठाना अब उसे कठिन नहीं लगता क्योंकि उसे इसकी आदत पड़ गयी है। बात सही भी है, अगर कोई काम हमारी आदत में शुमार हो जाये तो वह काम कठिन नहीं लगता। ऐसी ही आदत कुछ-कुछ हमारे संस्थान की भी है। जब संस्थान नया व छोटा था, हमारे प्रथम निदेशक प्रोफेसर केलकर ने संस्थान को कई अच्छी आदतों में ढाल दिया। उन्हीं आदतों में से एक आदत यह भी थी कि अपने संस्थान को हम साफ-सुथरा रखें। संस्थान जैसे-जैसे बड़ा होता गया, हर सुबह संस्थान की सड़कों पर सफाई कर्मचारियों के श्रम करने का जज़्बा भी बढ़ता गया।

आज पूरे देश में स्वच्छता अभियान चल रहा है। देश उद्वेलित है कि हमारी आदत ऐसी क्यों नहीं है कि हम अपने घर के साथ-साथ अपने गली-कूचों को भी साफ़ रखें। हम कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं कि अपने कूड़े को मनमाने ढंग से न बिखेरें। देश की इस वैचारिक उथल-पुथल का साहित्य के माध्यम से व्यक्त होना स्वाभाविक ही है। इसीलिए अंतस का यह अंक स्वच्छता को समर्पित है, जो स्वच्छता तथा उसके महत्व के बारे में बतलायेगा और बहुत-कुछ सोचने के लिये मजबूर करेगा।

हमारा प्रयास है कि अंतस में लिखने वालों और पढ़ने वालों का दायरा बढ़ाया जाए। इस प्रयास के तहत ही हमने अंतस को अपने पूर्वछात्रों के मध्य अधिकाधिक प्रचारित करने की कोशिश की है। हमारे चार पूर्वछात्रों के द्वारा इस अंक में अपनी रचनाएं भेजना हमारे इस प्रयत्न को सार्थक करता है। एक नन्ही परी गार्गी जोशी द्वारा रचित कविता का अंतस में प्रकाशन भी इसी प्रयास का एक हिस्सा है।

अंतस के सभी पाठकों से निवेदन है कि अपनी और अपने परिजनों की रचनाएँ हमें प्रकाशनार्थ भेजें। यही नहीं बल्कि अपनी अमूल्य प्रतिक्रियाएं भी हमें भेजें जिससे हमें पत्रिका के स्तर में सुधार लाने में मदद मिलेगी।

स्वतंत्रता दिवस की इस शुभ बेला पर मैं आपको बधाई देता हूँ और अपने तथा अपने संपादक मंडल की ओर से अंतस की यह प्रति आप सुधी पाठकों को समर्पित करता हूँ।

धन्यवाद,

भारत लोहनी

भारत लोहनी
मुख्य संपादक

अतिथि साक्षात्कार

श्री मिशेल डनिनो मूलतः फ्रांस के रहने वाले हैं जहाँ उनका जन्म 4 जून, 1956 को हालफ्ल्यू में मोरक्को के समृद्ध आप्रवासी परिवार में हुआ था। श्री डनिनो को बचपन से ही अध्यात्म में रुचि थी और अपनी जिज्ञासु वृत्ति को शांत करने हेतु वे अंततः भारत आ पहुँचे जहाँ अब वे स्थायी रूप से रहते हैं। भारतीय अध्यात्म विशेषतः श्री ऑरबिन्दों एवं वेदों में उनकी गहन पैठ है। श्री मिशेल डनिनो एक पुरातत्वविद भी हैं। श्री डनिनो आज भारतीय लेखक के रूप में प्रख्यात हैं। उनकी अनेक पुस्तकें अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं। श्री डनिनो भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में अतिथि व्याख्याता भी रहे हैं।

प्रस्तुत हैं उनसे वार्ता के अंश...

अंतस - सर! आपका जन्म एवं पालन-पोषण फ्राँस में हुआ था किन्तु अपनी कर्मस्थली आपने भारत को बनाया। कृपया हमें बतायें कि आपको इसकी प्रेरणा कैसे और कहाँ से मिली ?

श्री मिशेल डनिनो : फ्राँस में मेरा जीवन हर तरह की भौतिक सुख- सुविधाओं से परिपूर्ण रहा, किन्तु वहाँ मैं अपने जीवन से संतुष्ट नहीं था। क्योंकि सब कुछ होते हुए भी मेरे जीवन का कोई सार्थक उद्देश्य नहीं था। पश्चिमी देशों के विचारक एवं वहाँ के धर्म मेरी जिज्ञासा को शांत करने में असफल रहे तथा विज्ञान भी मेरे सवालों का जवाब नहीं दे पा रहा था। वैसे भी विज्ञान केवल "कैसे" का उत्तर देने में ही सक्षम है, "क्यों" का नहीं! संयोग से कुछ पुस्तकों में मुझे भारत के महान दार्शनिकों एवं विचारकों जैसे रामकृष्ण, विवेकानंद एवं श्री ऑरबिन्दो (Sri Aurobindo) जिन्होंने जीवन-दर्शन पर नितांत आधारभूत बातें कही हैं, के बारे में पढ़ने व समझने का अवसर मिला और इसके बाद मैंने तय कर लिया कि मुझे भारत में जाकर बसना है।

अंतस - सर! क्या भारत के प्रति लगाव आपको बचपन से ही रहा है? उन दिनों भारत के बारे में आपके मित्र कितना जानते थे ?

श्री मिशेल डनिनोः बचपन से तो नहीं, किन्तु 15 या 16 साल की अवस्था होने पर मैं भारत के बारे में जानने लगा था। मेरा ज्ञान कुछ-कुछ पुस्तकों तथा थोड़ा-बहुत अनुभवों पर आधारित था। कम अनुभव होने के बावजूद मैं baccalaureat की परीक्षा (बारहवीं बोर्ड के समकक्ष फ्राँस में परीक्षा और उन दिनों जिसे कठिन माना जाता था) में दर्शनशास्त्र में केवल एक शब्द मुक्ति (freedom) की परीक्षा हुई और मैंने बिना ज्यादा

श्री मिशेल डनिनो धोलाविरा पर

सोचे 'वेदान्त में मुक्ति की अवधारणा' की व्याख्या कर दी। उस समय मैंने अपनी उम्र के मात्र 17 साल पूरे किये थे और मैं समझता हूँ कि वेदान्त के बारे में तब मैं बहुत अधिक नहीं जानता था जब कि पश्चिम के दर्शन के बारे में मेरा ज्ञान तो और भी कम था! (फिर भी मुझे उस परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त हुए।)

अंतस - सर! आपने अपने जीवन का अधिकतम समय ओरोविले (Auroville) में बिताया। कृपया वहाँ के अपने अनुभवों के बारे में हमें कुछ बतायें।

श्री मिशेल डनिनोः मैं 1977 से 1982 तक ओरोविले में रहा। यह स्थान जैसा आज दीखता है, उन दिनों वह उससे बिल्कुल भिन्न था। वहाँ की जनसंख्या बहुत कम थी तथा पर्यटकों की संख्या भी कम हुआ करती थी। उस दौरान ओरोविले का माहौल तनावपूर्ण था। तब ओरोविले श्री ऑरबिन्दो आश्रम (Sri Aurobindo Ashram) से संबंधित एक सोसाइटी के चंगुल से स्वयं को मुक्त कराने के लिए संघर्ष कर रहा था। अन्ततः इस मामले में केन्द्रीय सरकार ने हस्तक्षेप किया और एक अधिनियम पारित करके ओरोविले की भूमि तथा वहाँ के प्रशासन को अपने नियंत्रण में ले लिया। इससे इतर ओरोविले मेरे लिए एक अच्छा प्रयोग रहा, शायद उन सभी समस्याओं के संदर्भ में जो किसी भी सामुदायिक जीवन के प्रयोगों के साथ जुड़ी हुई हैं। ओरोविले के संबंध में माँ मीरा कितना सही थीं जब उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा था कि यदि ओरोविले के निवासी अपनी चेतना-शक्ति को बदल देंगे, तो यहाँ की समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। ("माँ" मीरा श्री ऑरबिन्दो की आध्यात्मिक सहयोगी थीं तथा ओरोविले की स्थापिका थीं।)

व्यक्तिगत रूप से ओरोविले में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। जब मैं इससे जुड़ा तब मेरी उम्र मात्र 21 वर्ष की थी। मुझे ग्रामीणों की जीविका और पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं के माध्यम से भारत को पहली बार वास्तविक रूप से देखने एवं समझने का मौका मिला।

अंतस -सर! आपकी समझ में श्री ऑरबिन्दो (Sri Aurobindo) के दर्शन के मुख्य लक्षण क्या हैं?

श्री मिशेल डनिनो : यदि एक शब्द में कहा जाए तो - "क्रमिक विकास"। श्री ऑरबिन्दो के दर्शन में अनुभव एवं योग, सब कुछ क्रमिक विकास के स्तर पर हैं यहाँ तक कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य एवं सृष्टि भी। क्रमिक विकास की कार्य-पद्धति एवं उसका वास्तविक ध्येय भौतिक न होकर आध्यात्मिक है। जब वे लिखते हैं कि "मनुष्य एक परिवर्ती प्राणी है" तो 'परिवर्ती' से उनका तात्पर्य सभी स्तरों पर मनुष्य की चेतनाशक्ति को शिखर पर ले जाने से है।

अंतस-सर! आपकी कार्य-प्रणाली विज्ञान पर आधारित है और आपने पुरातत्व के क्षेत्र में अनेकानेक महत्वपूर्ण कार्य किये हैं जो मील के पत्थर साबित हुए हैं। कृपया हमें पुरातत्व से जुड़े अपने अनुभवों के बारे में बतायें।

श्री मिशेल डनिनो : प्राचीन सभ्यताओं के बारे में अध्ययन करना एवं उनका विश्लेषण करना मेरी रूचि का विषय रहा है। इसी कड़ी में मैंने भारत में कांस्य युग की एक प्राचीन सभ्यता- "सिंधु अथवा हड़प्पा सभ्यता" का अध्ययन आरंभ किया। यह स्वाभाविक रूप से हुआ और उसके साथ मुझे भारत के अनेक वरिष्ठ पुरातत्वविदों के सान्निध्य का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ जिनसे मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। मैं यहाँ उल्लेख करना चाहूँगा कि पुरातत्व के क्षेत्र में वैज्ञानिक कार्य-प्रणाली की अहम भूमिका है, भले ही भारत में इसका समुचित प्रयोग नहीं हो रहा है।

अंतस-सर! आपके एवं आपके मित्रों के विचार में आपकी श्रेष्ठ कृतियाँ/पुस्तकें कौन-कौन सी हैं।

श्री मिशेल डनिनो : यह बताना थोड़ा कठिन होगा, फिर भी मैं कह सकता हूँ कि मेरी पुस्तक Lost River : On the Trail of the Sarasvati से मुझे बहुत संतोष मिला है। मेरी आने वाली पुस्तक The Dawn of Indian Civilization and the Elusive Aryaṅ जिसमें आर्यों के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है, से भी मुझे बहुत उम्मीद है।

अंतस-सर! आप भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में दो महीने के लिए स्कॉलर इन रेजीडेंस भी रहे हैं। हम उम्मीद करते हैं कि आपने इस संस्थान को करीब से देखा होगा और यहाँ पर आपका ध्यान जरूर गया होगा। उन्हें आप किस प्रकार व्यक्त करना चाहेंगे?

श्री मिशेल डनिनो : जैसा कि आप जानते हैं मैं भा.प्रौ.सं. कानपुर दूसरी मर्तबे आया हूँ। इसके पूर्व मैं यहाँ सन् 2011 में आया था। मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि संस्थान के लोगों ने मेरे व्याख्यानों को तल्लीनता से सुना और भारत की विरासत को जानने का प्रयास किया। मुझे प्रसन्नता है कि यहाँ मुझे विभिन्न अभिरुचियों वाले एवं प्रबुद्ध संकाय-सदस्यों एवं छात्रों के साथ विचारों के आदान-प्रदान का अवसर मिला। चूँकि मैं यहाँ कम समय रह पाया, अतएव यहाँ की कमियों का आकलन मैं नहीं कर पाया। हाँलाकि, मैंने अपने कुछ साथियों से यहाँ विद्यमान कमियों के बारे में सुना है और मुझे लगता है ये कमियाँ किसी भी पुराने भा.प्रौ.संस्थान में हो सकती हैं।

अंतस-सर! भा.प्रौ.सं.कानपुर ने हाल में अतीत की खोज के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रयोग में रुचि दिखाई है। इस संबंध में आपने भी भा.प्रौ.सं.कानपुर के वैज्ञानिकों एवं प्रयोगशाला प्रभारियों से बात की है। आपने भारत की विरासतों के संरक्षण की दिशा में बहुत काम किया है। भारत की विरासतों के संरक्षण में भा.प्रौ.सं.कानपुर की आपके विचार में क्या भूमिका हो सकती है?

श्री मिशेल डनिनो : यह एक अच्छी पहल है। भा.प्रौ.सं. गाँधीनगर जहाँ मैंने लगभग चार वर्ष अतिथि संकाय के रूप में काम किया है, में भी भारत की ऐतिहासिक विरासतों के संरक्षण का प्रयास किया जा रहा है। मेरा मानना है कि कोई भी सरकार केवल अपने बलबूते देश की विरासतों को बचाये रखने में सफल नहीं हो सकती, इसलिए मैं व्यक्तिगत रूप से भारत के पुरातत्वों एवं विरासतों के संरक्षण में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों की भागीदारी बढ़ाने का प्रयास कर रहा हूँ तथा उन्हें इसके लिए प्रोत्साहित कर रहा हूँ।

जहाँ तक पुरातत्व में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रयोग की बात है, पश्चिम के देशों की तुलना में भारत में अभी भी इस क्षेत्र में वैज्ञानिकता का अभाव है। समय की माँग के अनुसार अब देश में पुरातात्विक प्रयोजनों के लिए एक या दो नहीं बल्कि दर्जनों

अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं की स्थापना की जरूरत है। अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं की स्थापना होने से प्राचीन अवशेषों का वैज्ञानिक तरीकों से विश्लेषण करने एवं उनका विवरण प्रस्तुत करने में तथा पुरातात्विक परिस्थितियों एवं काल-निर्धारण के अध्ययन में सहायता मिलेगी। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों से सहज ही यह अपेक्षा की जाती है कि वे मार्गदर्शक के रूप में अपनी भूमिका निभायें।

अंतस-सर! क्या भारत सरकार देश की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति सजग है और क्या वह उनके संरक्षण के लिए समुचित कदम उठा रही है? क्या आपके अनुसार सरकार को इस दिशा में किसी प्रकार की कार्य-योजना बनानी चाहिए?

श्री मिशेल डनिनो : सरकार के लिए यह काम निस्संदेह चुनौतीपूर्ण है। सरकार ने देश के हजारों स्मारकों एवं स्थलों में साइनबोर्ड (जो अब जर्जर हो चुके हैं) तो जरूर लगवायें हैं लेकिन वे किसी काम के नहीं हैं क्योंकि उन पर लिखी चेतावनी का कथित असामाजिक तत्वों पर कोई असर नहीं पड़ता । स्मारकों की जितनी संख्या है उसके अनुपात में बहुत ही कम स्मारकों का संरक्षण हो पा रहा है और उनके संरक्षण के लिए अभी भी पुराने तरीकों को ही अपनाया जा रहा है। मैं समझता हूँ कि यदि भा.प्रौ.संस्थान [भा.प्रौ.सं मद्रास ने स्मारकों के संरक्षण की दिशा में बहुत अच्छा काम किया है] तथा पुरातात्विक धरोहरों के संरक्षण से जुड़े संगठन मिलकर यह काम करेंगे तो बहुत अच्छे परिणाम सामने आ सकते हैं। उदाहरण के लिये यद्यपि सरकार ने इस योजना को सैद्धान्तिक तौर पर तो स्वीकार कर लिया है तथापि इसके क्रियान्वयन की गति बहुत धीमी है।

मेरे विचार में विरासतों के संरक्षण के लिए जिम्मेदार सार्वजनिक अथवा निजी क्षेत्रों के संगठनों की क्षमता का मूल्यांकन करने के लिए प्रभावी एवं निष्पक्ष कार्य-योजना तैयार किया जाना बेहद जरूरी है। भारत सरकार के पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग में अधीनस्थ स्तर पर हजारों पद रिक्त पड़े हैं जिन पर शीघ्र भर्ती की जानी चाहिए साथ ही साथ इस विभाग के सभी अधिकारियों को आधुनिक कार्यप्रणाली का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। कला, इतिहास संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान के राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान(National museum Institute of History of Art Conservation and Museology), में वैज्ञानिक आधार पर

विशाल स्नानागार

ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण की शिक्षा दी जाती है किन्तु अफसोस की बात है कि वहाँ एक भी प्रयोगशाला नहीं है! जरूरी यह है कि हैरीटेज टूरिज्म पर जो करोड़ों रुपये खर्च किये जा रहे हैं, उसके बजाए उसे इन ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण में ज्यादा से ज्यादा लगाया जाये और देश भर में सुसज्जित प्रयोगशालायें स्थापित की जायें।

अंतस-सर! माना जाता है कि आर्य भारत के मूल-निवासी थे। इस संबंध में आपके क्या विचार हैं?

श्री मिशेल डनिनो : मैं आर्यों के अस्तित्व पर विश्वास नहीं करता भले ही वे यहाँ के मूल निवासी रहे हों अथवा बाहर से आये हों। ऋग्वेद में कहीं पर भी आर्यों का वर्णन नहीं है। आर्य शब्द एक विशेषण है जिसका अर्थ है 'सभ्य' या लौकिक कार्यविधि को मानने वाला आदि। वेदों में इन्हें यदु, तुर्वश, पुरुस, अनुस आदि शब्दों से संबोधित किया गया है - न कि कथित 'आर्य' शब्द से। शोध का विषय तो वास्तव में संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं तथा वैदिक संस्कृति की उत्पत्ति है। यह काम जटिल जरूर है फिर भी अपनी अगली पुस्तक में मैं इनकी व्याख्या करने का प्रयास करूँगा।

अंतस-सर! "प्राचीन भारत में प्रौद्योगिकी" विषय पर आपने अपने विचार रखे हैं। इस विषय पर थोड़ा प्रकाश डालने की कृपा करें।

श्री मिशेल डनिनो : अब सर्वविदित है कि भारत में प्राचीन काल से प्रौद्योगिकी उन्नत अवस्था में रही है। यदि देखें तो यहाँ के धातुकर्म, कृषि, रसायन, चिकित्सा शास्त्र, वस्त्र उद्योग, परिवहन, निर्माण कार्य, जल प्रबंधन इत्यादि में भारत की विशेषज्ञता सर्वोच्च स्तर की रही है जो साहित्य, दीर्घकालीन

परम्पराओं एवं प्रथाओं के द्वारा समर्थित रही है। इन विशेषताओं के कारण ही प्राचीन काल एवं मध्य काल में भारत की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ थी। अफसोस की बात है कि भारत के विद्यार्थी यहाँ तक कि वयस्क भी अपनी ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति एकदम अनभिज्ञ हैं। मैंने अपने स्तर पर यथासंभव भारत के समृद्धशाली इतिहास को लोगों तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

अंतस-सर! हम अक्सर सुनते हैं कि भारत में इतिहास को सही रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता है। इस विषय पर आप क्या कहेंगे?

श्री मिशेल डनिनो : इस संबंध में मैं कहना चाहूँगा कि हर देश में वहाँ के इतिहास को लेकर विवाद की स्थिति बनी रहती है, विशेष रूप से तब जब इतिहास में पहचान, राष्ट्रीयता और संस्कृति की बात होती है। भारत में आर्यों, सरस्वती नदी, अयोध्या विवाद, मुस्लिम आक्रमण, औपनिवेशिक शासन के अत्याचार, स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रवाद की भूमिका, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति जैसे विषय विवाद के विषय माने जाते हैं, विशेष रूप से जब लोग इन्हें अपनी-अपनी विचारधारा के तहत देखते हैं। खेद की बात है कि स्वस्थ चर्चा करने के बजाए हम अधिकांशत: या तो निंदा करने लगते हैं या सीधे आरोप लगाने लगते हैं। उदाहरण के तौर पर आर्यों के आक्रमण सिद्धान्त का विरोध करने वाले अथवा हरियाणा एवं पंजाब की घग्गर-हकरा नदी को सरस्वती नदी मानने वाले लोगों को कट्टरवादी हिन्दू कहा जाता रहा है जबकि आरोप लगाने वाले भूल जाते हैं कि बहुत पहले यही बात पश्चिम के विद्वानों ने भी कही थी! इस तरह की बातों से लगता है जैसे हम अब भी बौद्धिक रूप से पिछड़े हुए हैं। यदि कोई मेरी सोच से भिन्न सोच रखता है तो मुझे कोई परेशानी नहीं है परन्तु उनकी सोच का आधार मजबूत होना चाहिए। हमें इस पर विचार करने की जरूरत है।

अंतस-सर! माना जाता है कि भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की समृद्धशाली परंपरा रही है। आपके मत में आधुनिक प्रौद्योगिकी की समस्याओं के समाधान के संदर्भ में हमारी परंपरा कितनी प्रासंगिक है? क्या आप हमें उदाहरण सहित बता सकते हैं कि हमारा प्राचीन विज्ञान आज के संदर्भ में कितना उपयोगी सिद्ध हुआ है?

डॉ. बिस्ट धोलावीरा के पूर्व द्वार के बारे में बताते हुए

श्री मिशेल डनिनो : भारत में प्राचीन काल से ही आयुर्वेद, जैविक कृषि, जल प्रबंधन, पर्यावरण-अनुकूल वास्तुकला अत्यंत उन्नत अवस्था में थे। भारत में इन क्षेत्रों में उत्कृष्ट काम हुए थे और इनके पुनरुत्थान का काम आज महज व्यक्तिगत प्रयासों से हो पा रहा है। प्रकृति के संरक्षण के पुराने तरीकों की पुर्नस्थापना, प्रकृति को नष्ट किये बिना उससे कुछ प्राप्त करना तथा इस दृष्टिकोण को मानना कि हमारे आधार वृक्ष, नदियाँ, पहाड़ हैं और इनमें चेतना व्याप्त है, मेरे विचार से भारत की परम्परा के महत्तम योगदान हैं। किन्तु तमाम उपलब्धियों के बावजूद आधुनिक प्रौद्योगिकी पूरी तरह से भटक गई है तथा इसने कम समय में ही पृथ्वी की पारिस्थितिकी को जोखिम में डाल दिया है। आधुनिक प्रौद्योगिकी के चलते हम अब लगभग भूल चुके हैं कि प्रकृति हमें हमारी जरूरतों से कई गुना अधिक प्रदान करती है।

अंतस-सर! क्या आप फिर से भा.प्रौ.सं.कानपुर आकर यहाँ के लोगों के साथ काम करना चाहेंगे।

श्री मिशेल डनिनो : जरूर! यदि मुझे यहाँ आने का अवसर मिला तो मुझे निस्संदेह बेहद खुशी होगी ।

अंतस-सर!आने वाले वर्षों में आप अपने काम को किस रूप में आगे बढ़ायेंगे?

श्री मिशेल डनिनो : मैं (तीन आगामी) पुस्तकों तथा भारतीय सभ्यता से जुड़े पाठक्रम एवं अध्ययन सामग्री पर कार्य कर रहा हूँ। बाकी सब परिस्थितियों पर निर्भर है।

सोशल मीडिया : इस्तेमाल पर निर्भर असर

सोशल मीडिया की पिछले दिनों काफी धूम रही। बहुत सारे लोगों ने अपने प्रोफाइल फोटो इंद्रधनुषी कर लिए। इसकी वजह यह थी कि अमेरिका में समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता प्रदान कर दी गई है। इस फैसले को सारी दुनिया में भरपूर समर्थन मिला। सोशल मीडिया पर लोगों ने जिस तरह अपने फोटो इंद्रधनुषी किए, उसके बारे में पोस्ट डाले या ट्वीट किए, वह इसका समर्थन ही था।

दरअसल, यह सोशल मीडिया की ताकत है, जिससे पल भर में सारी दुनिया में बात फैल जाती है और लोग किसी बात के समर्थन या विरोध में आ जाते हैं। इसके पहले हमारे पास जो संवाद के माध्यम थे, वे एकतरफा थे। पहले हम समाचारपत्र पढ़ते या टीवी देखते थे और उसके बारे में अपनी राय भी रखते थे। पर वहां चंद लोग ही आपस में विचार-विमर्श कर लिया करते थे। अब लोग किसी खबर या घटना के बारे में सुनते हैं तो उसके बारे में अपनी राय सोशल मीडिया पर रखते हैं, दूसरों के विचार पढ़ते हैं। इस दो-तरफा संवाद में लोगों को इतना मज़ा आने लगा है कि दिन-प्रतिदिन सोशल मीडिया के यूजर्स की संख्या बढ़ती जा रही हैं।

इसकी लोकप्रियता की वजह से ही आज कोई भी इसको इग्नोर नहीं कर पाता है। कहा जाता है कि मिस्र की क्रांति में सोशल मीडिया की बहुत बड़ी भूमिका रही हैं। वहां के युवाओं ने हर छोटी-छोटी बात को भी फेसबुक और दूसरी वेबसाइटों पर शेयर किया, लोगों तक हर जानकारी पहुंचती रही। फिर चुनाव के बाद सबने देखा कि किस तरह पूरी सत्ता ही बदल गई थी। मिस्र की घटना नई नहीं है। इसके पहले लेबनान में भी सीडार रिवोल्यूशन के दौरान सबसे पहले ब्लॉगिंग की ताकत दिखी थी। सीरिया के तीस साल के शासन को खत्म करने वाली इस क्रांति के हर पल की जानकारी ब्लॉगर्स ने दुनिया तक पहुंचाई थी। इसी तरह तेहरान में भी राष्ट्रपति अहमदीनेजाद पर चुनावों में धांधलियों के संगीन आरोप लगे, तब लाखों की संख्या में लोग सड़कों पर उतरे और उनकी मोबाइल फोन से ली हुई तस्वीरों को ईरान की जनता ने यू-ट्यूब और फेसबुक के जरिए दुनिया तक पहुंचा दिया।

सोशल मीडिया के दुनिया भर में बढ़ते दायरे और जनता पर इसके व्यापक असर का नतीजा है कि आज सत्ता और सरकारें तक इससे डरती हैं। यही वजह है कि कई ब्लॉगर्स को अपनी जान गंवानी पड़ गई। बांग्लादेश में ब्लॉगर अनंत बिजॉय दास और अविजीत राय की हत्या कर दी गई। इसी तरह सऊदी में ब्लॉगर रफीक बदालवी को सौ कोड़ों की सजा दी गई। जाहिर है, सबको अंदाजा है कि सोशल मीडिया के जरिए पूरी दुनिया में बात पहुंच जायेगी और उस पर नियंत्रण करना मुश्किल है। इसलिए आजकल हर देश में सरकारें चुनाव के समय सोशल मीडिया कैम्पेन को भी बहुत महत्त्व देती हैं। इसके लिए बाकायदा अलग से सोशल मीडिया सेल बनाती हैं।

राजनीति के परे भी सोशल मीडिया का उपयोग आजकल हर कोई करता है। सेलेब्रिटी से लेकर आम आदमी तक अपने विचार दुनिया भर में शेयर कर रहे हैं। फिल्म स्टार अपनी फिल्म के बारे में, लेखक अपनी किताबों के बारे में लोगों को बताते हैं और उन से सीधे जुड़ जाते हैं। ऐसे लोगों के अलावा सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति के नए द्वार उन लोगों के लिए भी खोल दिए हैं जो अपनी चीजें कहीं प्रकाशित नहीं करवा पाते थे। वे आज फेसबुक पर अपने लेख ,कविताएं, कहानियां खूब शेयर करते हैं, क्योंकि इन माध्यमों की पहुंच आज कई अखबारों और पत्रिकाओं से भी ज्यादा है। एक पहलू यह भी है कि लोग इस सार्वजनिक मंच का उपयोग कई स्थितियों में अपनी निजी बातों के लिए भी करते हैं। अपनी समस्या पोस्ट करके लोग मित्रों से उसके बारे में राय लेते हैं। कुछ दिन पहले एक लड़की की शादी का विज्ञापन काफी वायरल हुआ था। उसने अपनी शादी का थोड़ा अलग-सा विज्ञापन दिया था। इसमें उसने लिखा था कि उसे ऐसे लड़के की तलाश है जो शादी के बाद उसे अपने तरीके से जीने दे और उसकी

आजादी में बाधक न बने। इस विज्ञापन को खूब चर्चा मिली थी, हजारों लोगों ने इसको शेयर किया। इसकी लोकप्रियता की वजह से बीबीसी ने इस पर अलग से स्टोरी की थी। जाहिर है, अब टीवी चैनल और समाचार पत्र भी सोशल मीडिया का रुझान देखते हैं। कुछ पत्र-पत्रिकाओं ने तो बाकायदा अलग से एक कॉलम बना दिया है जिसमें वे सोशल मीडिया की कोई चर्चित पोस्ट डालते हैं।

घरेलू स्त्रियों के जीवन में भी इस माध्यम ने बहुत महत्त्वपूर्ण जगह बनाई है। घर के काम से फ्री होने के बाद काफी स्त्रियां सोशल नेटवर्क का इस्तेमाल करती हैं, जहां वे अपनी छोटी-छोटी बातें, अपनी फोटो आदि शेयर करके खुद को व्यक्त करती हैं। जिन स्त्रियों की जिंदगी पढ़ाई-लिखाई के बाद भी सिर्फ घर के कामकाज तक सीमित थी, उनके लिए सोशल मीडिया एक नई उड़ान साबित हुआ और उन्होंने खुद को जी भर कर इसमें अभिव्यक्त किया है। सच कहें तो यह उनका अकेलापन दूर करने का एक माध्यम भी हो गया है।

अब सवाल यह है कि क्या वाकई सोशल मीडिया के सारे पहलू इतने सकारात्मक हैं और यह मीडिया दूसरे मीडिया की तरह पूर्वाग्रह से प्रेरित नहीं है? दरअसल, सोशल मीडिया में भी सब कुछ इतना अच्छा नहीं है। इसके साथ भी उपयोग वाला पहलू जुड़ा है कि कहां तक इसकी पहुँच है और किन हाथों में है। उदाहरण के तौर पर अगर राजनीतिक दल इसका उपयोग करते हैं और वे इतने समर्थ हैं कि अलग से मीडिया सेल बना सकते हैं तो अपने

हिसाब से वे इसका उपयोग करके लोगों के माइंड सेट पर असर डाल सकते हैं। यहां भी वही बात आ जाती है कि ज्यादा संसाधन वाला व्यक्ति अपने हिसाब से चीजों को चला सकता है। भारत जैसे देश जहां अभी तक बिजली जैसी बेसिक सुविधाएं भी नहीं हैं, शिक्षा नहीं है, वहां इंटरनेट एक दूर की बात है। ऐसे में एक बड़ा वर्ग है जो इस ग्लोबल गांव से कटा है और बस अपने गांव तक सीमित है। इस प्रकार यह एक खास शहरी वर्ग ही है जो इसके माध्यम से अपनी बात कहता है और हर व्यक्ति तक इसकी पहुंच में अभी शायद वक्त है।

बड़े शहरों में सोशल मीडिया को लेकर दूसरी तरह की समस्याएं आ रही हैं।

जहां इसकी पहुँच बहुत ज्यादा है, वहां लोग वास्तविक जीवन से कट कर एक आभासी दुनिया में जीने लगते हैं। शहरों का अकेलापन उन्हें इस काल्पनिक दुनिया से इतना ज्यादा जोड़ देता है कि वे अपनी पल-पल की दिनचर्या की खबर अपने आभासी मित्रों को देते हैं, उनसे बातचीत करते हैं। हर लम्हा, हर घटना उनके लिए एक पोस्ट होती है, जिसमें वे अपनी आभासी दुनिया के दोस्तों की प्रतिक्रियाएं जानना चाहते हैं।

सोशल मीडिया के अति उपयोग की वजह से लोगों के जीवन में तमाम समस्याएं भी आयी हैं। कई ऐसी घटनाएं हुई हैं जब लड़कियों ने सोशल मीडिया पर दोस्ती करके किसी पर भरोसा कर लिया और वह व्यक्ति फर्जी और धोखेबाज निकला। इस मीडिया पर काफी लोग अपनी फेक आई डी भी बना लेते हैं और बहुत से लोग उनके बहकावे में आ जाते हैं। इस तरह से हर वक्त एक आभासी दुनिया में रहने से तमाम तरह की मनोवैज्ञानिक समस्याएं भी पैदा हो रही हैं। लोग अवसाद के शिकार हो रहे हैं, क्योंकि वास्तविक जीवन से कट कर हर पल वे एक काल्पनिक दुनिया में रहते हैं जिसमें सारी संवेदनाएं भी आभासी ही होती हैं।

जाहिर है सोशल मीडिया भी विज्ञान और टेक्नोलॉजी की अन्य तमाम खोज की तरह ही है। हालाँकि मूल प्रश्न इसमें भी यही है कि हम इसका किस तरह से उपयोग करते हैं। अगर हम लोगों की समस्याओं को उठाने, किसी की मदद करने, विचारों के आदान-प्रदान के लिए इसका उपयोग करते हैं तो यह इसका एक सकारात्मक इस्तेमाल है और एक बड़ा हथियार हमारे हाथ में है, जिसका हम सामाजिक बदलाव के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन अगर हमारे लिए सोशल मीडिया का मतलब अपनी दिनचर्या लिखना, मित्र बना कर सिर्फ बातें करना या सेल्फी पोस्ट करना है तो इस प्रकार इसकी उपयोगिता को हम बहुत कुछ एक दायरे के अंदर ही सीमित कर रहे होते हैं। ■

अनीता मिश्रा
प्रसिद्ध स्वतंत्र लेखिका, कानपुर

खिड़कियाँ

बहुत दिनों से खड़ी हैं वो खिड़कियाँ
कुछ देखती हुई
जैसे बाहर छज्जे पर खड़ी हो कोई लड़की
और देख रही हो अपने बचपन को जाते हुए
और बंधते हुए खुद को ज़िंदगी की बेड़ियों में...

जाने क्या सोचती हैं यह खिड़कियाँ यूं ही खड़ी खड़ी?
क्या यह भी कोई जाते हुए मेहमान को देख
ख़ुशी ख़ुशी उसे बाय-बाय कर रही हैं?
या फिर उसके जाने का दर्द
दिल में समेटे हुए आंसू बहा रही हैं?
या फिर मन में खुशी की लहर है उनके
और सिर्फ दुनिया वालों के लिए
रुदाली की तरह रो रही हैं?

खिड़कियों के मन में झांकना
मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है
क्योंकि उनके कांच हो चुके हैं
धुंधले, अस्पष्ट और उलझन भरे...

शायद इसे ही तो
परिपक्वता कहते हैं...

नीलम सक्सेना चंद्रा
डायरेक्टर, इंडियन रेलवे, लखनऊ
और प्रसिद्ध लेखिका

एक दिन

कल एक दिन गुजरा.....
तुमसे बिना कुछ कहे....
बिना कुछ सुने....
होश था हमें, मगर
खुद से बेज़ार नज़र आए
कोई सन्नाटा कोई तन्हाई नहीं थी
बस एक अजीब सा शोर था
एक गुबार था....
बात करने का ही तो वादा था सिर्फ
जिंदगी में आने की शर्त ही कहाँ रखी थी मैंने
बेवजह ही, मोहब्बत को सज़ा दे डाली

जानती हूँ तुम एक लहर हो
एक दिन सागर में मिल जाना है तुम्हें
सोचती हूँ मगर, साहिल तो मैं भी हूँ
क्या हमसे कभी नहीं टकराओगे
ऐसे क्यों रूठ जाते हो
लगता है फिर कभी नहीं आओगे
यकीन मानो,
दिल के चंद लफ़्ज ही काफी हैं
ज़िंदगी की हर खुशी के लिए
तो एहसान ही सही
कुछ शब्द कह दिया करो....
कुछ बात कर लिया करो....
कल एक दिन गुजरा....
तुमसे बिना कुछ कहे....
बिना कुछ सुने....

प्रियंका दुबे, परिसरवासी

खुद को मैं ढूँढ़ता हूँ

दुनिया की इस भीड़ में, अकेला मैं घूमता हूँ।
इस मिथ्या संसार में, सच को मैं खोजता हूँ।
देखता हूँ जब खुद को, बुराईयों में पाता हूँ।
उन बुराईयों में, कुछ अच्छा भी देखता हूँ।
खुद को मैं ढूंढ़ता हूँ, खुद को मैं ढूँढ़ता हूँ।

सुनता हूँ सबको, कभी न अपनी सुनाता हूँ।
इस बोलने वाली दुनिया में, शांत ही रहता हूँ।
हैं असीमित इच्छायें मेरी भी,
सीमित उनको मैं करता हूँ।
इन सीमित इच्छाओं की भी, पूर्ति मैं नहीं करता हूँ।
खुद को मैं ढूँढ़ता हूँ, खुद को मैं ढूँढता हूँ।

ढूँढते हैं सुख को लोग यहाँ,
खुद की परिभाषा मैं खोजता हूँ।
मतलबियों के बीच, सज्जनों को खोजता हूँ।
खुद ही खुद से सवाल पूँछता हूँ,
तथा जवाब भी ढूँढ़ता हूँ।
अहंकारी में भी ज्ञान को ढूँढ़ता हूँ,
खुद को मैं ढूँढ़ता हूँ।

चलने के लिए हर दिन एक नया रास्ता खोजता हूँ।
इन नये रास्तों पे चलने को, साथी मैं खोजता हूँ।
मिलते हैं जब साथी थोड़ा खुश हो जाता हूँ।
साथी भी है साथ हमारा, ये भी समझाता हूँ।
आरंभ है अलग, रास्ते हैं अलग
किंतु अंत एक है यह जानता हूँ।
फिर भी उनको मैं ढूँढता हूँ,
खुद को मैं ढूँढता हूँ।

नितिन अग्रवाल, छात्र

शीतकाल में सावधान : स्वाइन फ्लू के प्रति जागरूकता व बचाव

जैसा कि आप जानते हैं पिछले कुछ माह पूर्व पूरे देश में हँगामा मचा हुआ था कि स्वाइन फ्लू आ गया, स्वाइन फ्लू आ गया। अखबारों में मुख्य पृष्ठ पर खबर थी तथा TV चैनलों पर इसके अलावा दूसरी कोई खबर ही नहीं थी। कुछ महीनों से इस प्रकार की खबरें नहीं आ रही हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि स्वाइन फ्लू समाप्त हो गया है। हाँ ऋतु परिवर्तन के कारण इन दिनों इस वाइरस की वृद्धि में कमी आयी है और संचार माध्यमों को जनता को आकर्षित करने के लिए दूसरी अनेक खबरें उपलब्ध हैं। जैसे-जैसे ठंड के दिन आएंगे, यह वाइरस पुन: दस्तक देने वाला है। इसके बारे में हमें ठीक-ठीक समझने की आवश्यकता है। सावधानी बरतें किन्तु भयग्रस्त न हों।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्वाइन फ्लू एक विषाणुजनित रोग है। विषाणुजनित रोगों की संक्रामकता ने कई बार इस संसार में जन स्वास्थ्य के लिए चुनौतियाँ पैदा की हैं किन्तु अनेक प्रकार के विषाणुजनित रोगों पर विज्ञान के माध्यम से विजय भी प्राप्त की गयी है। इसी प्रकार की एक बीमारी स्वाइन फ्लू ने फिर दस्तक दी है जिससे बचाव के लिए जनसाधारण का जागरूक होना बेहद जरूरी है। चिकित्सा शास्त्र तो अपना कार्य कर ही रहा है। संभव है कि प्लेग, चेचक आदि की भांति स्वाइन फ्लू भी एक दिन लुप्त हो जाए।

चिकित्सा विज्ञान के अनुसार स्वाइन फ्लू श्वसन-तंत्र से जुड़ी बीमारी है जो 'ए' टाइप के इनफ्लुएंजा वायरस से होती है। यह वायरस एच1एन1 के नाम से जाना जाता है। ज्ञात रहे कि यह वाइरस केवल स्वाइन फ्लू में ही नहीं पाया जाता अपितु अन्य प्रकार के मौसमी फ्लू में भी यह वायरस सक्रिय होता है।

ये विषाणु बहुत संक्रामक होते हैं। खांसने या छींकने से हवा में प्रवेश कर या थूक और बलगम के माध्यम से भी आसपास उपस्थित दैनिक उपयोग की चीजों को संक्रमित कर सकते हैं। फिर ये हवा के द्वारा, या किसी के छूने से दूसरे व्यक्ति के शरीर में मुँह या नाक के जरिए प्रवेश कर जाते हैं। यदि लगातार नाक बहने, छींक आने, नाक जाम होने, मांसपेशियों में दर्द या अकड़न महसूस होने, तेज सिरदर्द, खांसी, थकान, ज्वर होने की स्थिति में दवा खाने के बाद भी फायदा न हो, और गले में खराश लगातार बढ़ने जैसे लक्षण हों, या ऐसे किसी मरीज के सम्पर्क में आने के 7 दिनों के अंदर आपमें भी ऐसे लक्षण दिखें, तो तुरन्त चिकित्सकीय परामर्श लेना चाहिए।

सावधानी के रूप में इस बीमारी में आप मास्क का प्रयोग करें। व्यक्ति को 7 से 10 दिन तक आराम करना चाहिये और भीड़-भाड़ या कार्यक्षेत्र में जाने से बचना चाहिए।

यूँ तो वायरस से होने वाले रोगों में शरीर अगली बार के लिए प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर लेता है किन्तु वायरस के बदलने की दशा में दोबारा बीमारी होने की आशंका हो सकती है।

ऐसे लक्षणों में बचाव के लिए घरेलू उपाय के रूप में तुलसी के 5-6 पत्ते और काली मिर्च के 2-3 दाने पीसकर चाय में डालकर दिन में दो-तीन बार पीना लाभदायक होता है।

भयग्रस्त न हों।

क्या आप जानते हैं? हमारे देश में हर दिन कैंसर से औसतन 1500 लोग मरते हैं। लेकिन कोई खबर नहीं आती।

दमा, अस्थमा, ट्यूबर क्लोसिस से लगभग 1200 लोग रोज मरते हैं लेकिन कोई खबर नहीं आती।

हार्ट अटैक से हर दिन 800 से 1000 लोग मरते हैं। मौत के ये तो इतने बड़े आंकड़े हैं। लेकिन कोई खबर नहीं आती।

कैंसर, दमा अस्थमा, ट्यूबरक्लोसिस, हार्ट अटैक इनके बारे में मीडिया में कहीं कोई चर्चा नहीं, चर्चा सिर्फ एक थी-स्वाइन फ्लू।

इसका एक रहस्य है। वो यह है कि कैंसर का वैक्सीन नहीं बनता! वैक्सीन का अर्थ आप समझते हैं? जो दवा पहले पिला दी जाती है कि ये ले लो, आपको ये बीमारी नहीं होगी! !

अर्थात् कैंसर का वैक्सीन नहीं बनता। दमा का वैक्सीन नहीं बनता। अस्थमा तथा हार्ट अटैक का भी वैक्सीन नहीं बनता।

मतलब ये कि जिन बीमारियों का वैक्सीन नहीं बनता, मीडिया उनकी चर्चा नहीं करता। क्योंकि औषधियां निर्माण करने वाली कंपनियों को इन बीमारियों की चर्चा से कोई लाभ होने की उम्मीद नहीं है।

लेकिन स्वाइन फ्लू का वैक्सीन बन सकता है, avian flu का वैक्सीन बन सकता है, sars का वैक्सीन बन सकता है और थोड़े दिन पहले bird flu आया था! उसका वैक्सीन बन सकता है। avian flu gS bird flu है इन सबके वैक्सीन बन सकते हैं और बाजार में बिक सकते हैं। दवा कंपनियों को इस सबमें भयंकर मुनाफा है। इसीलिए मीडिया में ये सब सुनियोजित तरीके से दिखाया जाता है। लेकिन जो विद्वान डॉक्टर हैं, जो इन कंपनियों के चक्कर में नहीं फँसते, वो बताते रहे हैं कि जीवन रक्षा के लिए आवश्यक न होने तक tami flu कभी मत खाओ क्यूँकि यदि आपने tami flu खाया, जो स्वाइन फ्लू से उत्पन्न वायरस है और structure बदलने में माहिर है, वो तुरंत एक नया structure ले सकता है और फिर उसमें रेजिस्टेन्स आ सकता है। फिर जितना मर्जी tami flu, खाओ वह ठीक ही नहीं होगा।

अर्थात् मुझे आपसे जो बात कहनी है वो ये है कि स्वाइनफ्लू का वायरस बस इसी तरह का एक प्रचार है और ये स्वाइन फ्लू नहीं बल्कि दवा कंपनियों का सुविचारित केवल एक मीडिया फ्लू है। हाँ यदि कुछ अन्य बीमारियाँ साथ में हों या रोगी की स्थिति बिगड़ रही हो, तो डाक्टर की सलाह अवश्य लें। स्वास्थ्य नियमों का पालन करें। होमियोपैथी में भी विषाणुजनित रोगों के लिए रोकथाम और उपचार की व्यवस्था है। आसपास के प्रशिक्षित होम्योपैथिक डॉक्टर से संपर्क करें। ■

डॉ.एस.के.मिश्रा

संतवचन

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तम:।
भविता न च मे तस्मादन्य: प्रियतरो भुवि।।

मेरे ज्ञान का जो कोई संसार में प्रचार करेगा उससे बढ़कर मेरा प्रिय कार्य करने वाला मनुष्यों में कोई भी नहीं है तथा पृथ्वी भर में उससे बढ़कर मेरा प्रिय दूसरा कोई भविष्य में होगा भी नहीं।

(भगवद्गीता 18.69)

स्वामी विवेकानंद कहते थे- 'जिस घर में सत्साहित्य नहीं, वह घर नहीं, श्मशान है।'

पगडंडी

जंगल के झाड़ झंखाड़
के बीच से घुसती है
गाँव को जाने वाली
टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी,
वह लम्बी दूरी को कम
कदमों से जल्द नापने,
आज भी लोगों के दिलों
में रची-बसी है।
लोगों को जोड़े रखती है
वह अपनी माटी से,
उसे वही है चाह
पक्की सड़क की तरह
चिकनी व सपाट बनने की,
वह खुश है जन-जन से,
जिनके गतिशील कदमों ने सृजन कर
उसकी उपयोगिता को पहचान दी।
वह आनंदित होती है, स्कूल जाते बच्चों
और काम के लिए जाती उत्साही
महिलाओं के कदमों से,
वह खिलखिलाने लगती है जब सर्दी की
अलसाई धूप में
सरसों के मनभावन पीले
खेतों के बीच से गुजरती है।
वह लोगों को बचाती है
ये गुजरने वाले वाहनों की
रफ्तार के कहर से
चिग्घाड़ती आवाज़ और
उड़ती धूल माटी से,
वह तो लोगों को जोड़े रखती है
हरी-भरी प्रकृति और पर्यावरण से,
सचमुच अपनेपन की मिठास से,
जन-जन की यात्रा को मंगलमय कर देती है।

नकुल खुराना, छात्र

वक्त बुरा है छूटे साथी

वक्त बुरा है छूटे साथी रंग नहीं है फूलों में
हर लम्हा बस एक चुभन है गुजर बसर है शूलों में।।
उम्मीदों की नैया उतरी घेर लिया तूफानों ने
अपनों को ही जहर घोलते खूब सुना है कानों ने।
उम्र गुजारी गिरते पड़ते हमने अपनी भूलों में
हर लम्हा बस एक चुभन है गुजर बसर है शूलों में ।।
पतझड़ में पत्ते गिरते हैं और गिरे हम नजरों से
खाली सागर भरने को जब आस लगाई कतरों से।
तन्हाई कैसी होती है देखो सूने झूलों में
हर लम्हा बस एक चुभन है गुजर बसर है शूलों में।।
अंधों को क्या सूरज चंदा सारे लम्हे काले हैं
जीने की क्यों आस लगाये जब साँसों के लाले हैं।
अब के सावन जो गुजरा तो आग नहीं है चूल्हों में
हर लम्हा बस एक चुभन है गुजर बसर है शूलों में।।

भरत त्रिपाठी, परिसरवासी

कहते हैं कि जिस प्रकार पवित्रता से आत्मा को कोई हानि नहीं होती, उसी प्रकार शरीर को ब्रह्मचर्य से कोई क्षति नहीं पहुँचती। इन्द्रिय संयम सबसे उत्तम आचरण है।

सर जेम्स मैगट

नवयुवकों के लिए बह्मचर्य–शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक;तीनों दृष्टियों से उनकी रक्षा करता है।

डॉ. पेरियर

स्वच्छ भारत

"स्वच्छ भारत" हमारे देश का अधनुातन नारा है जो किसी ऐसे-वैसे या सामान्य कोने से नहीं बल्कि स्वयं भारत के कार्यपालिका प्रमुख अर्थात् माननीय प्रधानमंत्री महोदय के मुखारविन्द से उद्घोषित किया गया है। प्रश्न उठता है कि ऐसी स्थिति क्यों आयी कि स्वयं प्रधानमंत्री को आगे आकर सीधे जन-समुदाय से ही देश को स्वच्छ रखने का बीड़ा उठाने का आह्वान करना पड़ा। हमारे देश को आजाद हुये अब 67 वर्ष बीत गये हैं। हमें मालूम है कि आजादी के पूर्व भारत में लगभग 200 वर्षों तक ब्रिटिश शासन रहा। उसके पूर्व लगभग इतनी ही अवधि के लिये मुगलों, उससे भी पहले मुस्लिम शासकों, पुष्यभूति वंश के महाराजाओं, शक, कुषाण, गुप्तवंशीय और सुदूर अतीत में मौर्यवंशीय शासकों ने इस देश पर राज्य किया। लेकिन स्वच्छता के बारे में किसी भी शासनकाल में इस तरह की कोई पहल हुयी हो ऐसा हमने ना तो सुना, ना जाना और ना ही इतिहास-वेत्ताओं दारा इस सन्दर्भ में वर्णित कहीं कोई आलेख या वृत्त ही हमें पढ़ने को मिला। हम भारतीय हैं तथा हमें भारतीय होने का दंभ है, हिन्दुत्व हमारी आध्यात्मिक विरासत है। हमारा दावा है कि भारतीय संस्कृति विश्व की मूल संस्कृति है, आदि संस्कृति है। हम गौरवान्वित अनुभव करते हैं कि आदिकाल से लेकर भगवान कृष्ण तक ईश्वर के दशावतार इस देवभूमि-भारतभूमि में ही हुये। वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, गीता, रामचरित मानस हमारी शाश्वत थाती हैं। अध्यात्म-ईश आराधन-धर्माचरण-सदाचार एवं सद्व्यवहार हमारे रोम-रोम में, हमारे नित्यप्रति के सामान्य आचार एवं व्यवहार में मानों नैसर्गिक रूप से माला से पृथक न की जा सकने वाली डोरी की भाँति पिरोये हुये हैं। असत, दुराचार से हमें स्वाभाविक विरक्ति है। बुराई अथवा 'कु' के नाम से ही हमें घिन-उबकाई आती हैं। संसार के प्राणिमात्र अर्थात् थलचर, जलचर, नभचर से हमारा असीम अनुराग है। 'वसधैव कुटुम्बकम्' हमारी सनातन अभिव्यक्ति है। सर्वसाधारण के प्रति हमारे अंदर गहनतम प्रेम है। मन तथा अन्तः में सदैव चरम निर्मलता है और किसी के प्रति हृदय में कलुष की कौंध मात्र से हम भयाक्रान्त हो उठते हैं कि आखिर यह भावना हमारे निर्मल-पावन मन में प्रविष्ट ही कैसे हुयी ?

अर्थात दूसरे अर्थो में यह एक सच्चाई है कि मन और हृदय की निर्मलता हमारी विरासत रही है तथा इसी विरासत के चारो ओर हमारे आचरण की भी आवृत्ति होती रही है और 'सर्वसमभाव' ने हमारे अंतर में एक सहज सरलता की अभिव्याप्ति बना रखी है। हमने मन के साथ-साथ अपने नैत्यिक व्यवहार में तन की स्वच्छता-निर्मलता को भी सदा-सर्वदा उचित स्थान दिया है। किन्तु इसी के सापेक्ष यह भी एक कटु यथार्थ है कि जब हम अपने आसपास या चतुर्दिक देखते हैं तो बस गंदगी का ही साम्राज्य दिखाई देता है। जहाँ देखिये, केवल गंदगी के अम्बार। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, असम-मेघालय से गुजरात-राजस्थान तक अर्थात सारे भारतवर्ष में बस गंदगी और गंदगी। हमारे पास अवसर ही अवसर हैं कि हम इस गंदगी के मध्य निर्बाध-अगाध आँखें सेंकते रहें, श्वास-प्रश्वास में दूषित वायु से अपने फेफड़ों को स्वस्थ बनाये रख सकें, गंदगी के मध्य विचरण करते हुए भरपूर आत्म-तुष्टि प्राप्त कर सकें, प्रदूषित

जल-वायु-वातावरण से अनवरत स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकें, तथा स्वस्थ जीवन के सारे नियमों को सहजता से ताक पर रख सकें इत्यादि-इत्यादि।

अरे। गंदगी क्या हमारी सनातन धरोहर नहीं है, क्या अपनी इस विरासत को हमें संजोकर नहीं रखना चाहिए, हम इससे विरत हो गये तो संसार हमारा उपहास नहीं करेगा, हमें स्वयं की अवमानना महसूस नहीं होगी? बस में, ट्रेन में, पार्क-सड़क-गली-सार्वजनिक स्थलों पर या कहीं भी, कभी भी केले-मूंगफली के छिलकों, खाद्य वस्तुओं के अवशिष्ट, प्लास्टिक के थैलों, अप्रयोज्य वस्तुओं को फेंक देना, शौच-मलत्याग-लघुशंका, घर-दुकान-व्यवसाय स्थलों का कबाड़ फेंकना, ये सब तो हमारे जन्मसिद्ध एवं नैसर्गिक अधिकार हैं। इस बारे में हमें कोई ज्ञान दे, अन्यथा या इतर समझाने की कोशिश करे, विदेशो की अभूतपूर्व साफ-सफाई स्वच्छता का बखान करे या फिर विदेश में स्वयं सब कुछ देखने के बाद भी स्वदेश लौटने पर पहले की भाँति आचरण न करे तो क्या हमारा स्वाभिमान आहत नहीं हो जायेगा, हमारी सहस्त्रों वर्ष की निर्बाध परम्परा विखंडित नहीं हो जायेगी, हमारे संस्कार कलंकित नहीं हो जायेंगे, हमारे अंह का पराभव नहीं हो जायेगा और इनकी मजबूत इमारत भरभरा कर गिर जाने से हमारा हृदय विदीर्ण नहीं हो जायेगा?

एक ओर हमारी युगों पुरानी आध्यात्मिक-सांस्कृतिक विरासत, हृदय की चिर-निर्मलता-पावनता वहीं दूसरी ओर देश भर में सर्वत्र प्रसरित गंदगी तथा उसके प्रति हमारी आदतों का अभेद्य दुराग्रह। कितना अद्भुत एवं जबरदस्त विरोधाभास है? कैसी संत्रासप्रद विडम्बना है? ऊपर से करेला और नीमचढ़ा की भाँति स्थिति यह कि व्यक्ति में, समाज में अस्वच्छता के लिए कोई क्षोभ नहीं-आक्रोश नहीं-उसका नामोनिशान तक नहीं यहाँ तक कि तिक्तता की भी झलक नहीं, बल्कि इसके विपरीत इससे अभिन्न रूप से जुड़े हुये? वर्षों पहले अपने एक मित्र की एक अफ्रीकी यात्री से हुयी भेंट का इस संदर्भ में मुझे सहसा स्मरण हो आता है। संयोग से मैं भी उस समय उनके साथ था। भेंट के दरम्यान उस अफ्रीका वासी द्वारा उच्चरित एक वाक्य ने मानों मुझे पल भर में अपने इस महान देश का आइना दिखा दिया था और मुझे अन्दर तक बींध कर रख दिया था। उसने कहा था "हमारे अफ्रीका में नीग्रो भी शौचोपरान्त मल को मिट्टी से ढँक देता है लेकिन इण्डिया! इण्डिया तो पूरा का

पूरा ओपन शौचघर है।"

सुनकर मुझे जैसे स्वयं से वितृष्णा हो गयी थी और मैं औंधे मुँह जमीन पर गिर पड़ा था। इस एक वाक्य ने मानों मुझे जीवन भर का दंश दे दिया था। यह ऐसी पीड़ा थी जिसे मैं किससे, किन शब्दों में व्यक्त करता? अफ्रीका जैसे महाद्वीप जिसे हम सदैव इतना पिछड़ा, अशिक्षित, गरीब समझते हैं, के समक्ष हम इतने बौने ?

यह मानने का कोई अर्थ नही है कि प्रधानमंत्री का नारा सम-सामयिक है बल्कि इससे उलट यह तो हम सबको अपने गिरहबान में झाँकने को विवश करता है क्योंकि साफ-सफाई या स्वच्छता किसी काल अथवा समय की दरकार नहीं है बल्कि यह तो सर्वत्र, सदा-सर्वदा ही अभीष्ट है। अतएव इस आह्वान के विरोध में न तो कभी कोई तर्क था और ना ही आज हो सकता है। पुरातन कहावत है "अपना घर और अपने घर के सामने सफाई रक्खो, पूरा गाँव साफ दिखने लगेगा" लेकिन हकीकत तो इसके सर्वथा विपरीत है। हमने तो इस नियम का भी पालन छोड़ दिया है। कभी भी देख लीजिए, आपको आज की दुरवस्था का तत्काल बोध हो जायेगा। हमारी वृत्ति इस अधोगति पर पहुँच गयी है कि हम आँख बचाकर अपने घर का कूड़ा-कचरा किसी तरह अथवा यथासंभव दूसरे के घर के सामने या अगल-बगल फेंक ही देते हैं। विचार करने की जरूरत है कि हम आखिर यह कर क्या रहे हैं और किस दिशा की ओर उन्मुख हो रहे हैं ? देखा जाये तो आज के युग में अर्थव्यवस्था के तमाम मानदण्ड बदल गये हैं। हमारी जीवनशैली विगत की तुलना में आद्योपान्त बदल गयी है। एक

ओर जहाँ यह सत्य है कि भारत की जनसंख्या बेहद तीव्र गति से बढ़ रही है (और कदाचित अतिशीघ्र विश्व में सर्वाधिक हो भी जाये), वहीं यह भी सत्य है कि इन सभी चुनौतियों के बावजूद हमें देशवासियों को प्रगति पथ पर आगे ले जाना है, उनका जीवन स्तर सुधारना है, उनके दैनिन्दिन जीवन का उन्नयन करना है एवं उसे विकासोन्मुखी बनाना है। किन्तु इसके लिये हमें देश को हर तरह से समृद्ध करना होगा और अपनी अर्थव्यवस्था को नये आयाम देने होंगे। गौर करने पर ज्ञात होगा कि विश्व के वर्तमान आर्थिक पटल पर पर्यटन बेहद महत्वपूर्ण उद्योग के रूप में स्थापित हो चुका है तथा तमाम देशों की आर्थिक योजनाओं का यह अनिवार्य अंग बन गया है। दुनिया के अधिकांश देश पर्यटन को अधिकाधिक बढ़ावा देने, पर्यटकों को सुविधायें देने की होड़ लगाये हुये हैं। उसका कारण यह है कि सारे विश्व में तरक्की हो रही है और लोगों की आय तथा उनके आर्थिक संसाधनों में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। इसी भाँति उसी अनुपात में दुनिया भर में पर्यटकों के आवागमन में भी तीव्र गति से विस्तार हो रहा है। लेकिन हमें विचार करना है कि क्या हम इन असंख्य आगत-यात्रियों के स्वागत को तत्पर हैं? क्या हमने अपने देश में उन स्थितियों में सुधार किया है कि ये पर्यटक यहाँ आने पर नाक-भौं ना सिकोडें, तथा पुनः आने के लिये उत्सुक बने रहें? जब कि चाहिये तो यह कि हम उन्हें इतने लुभावने, सुन्दर, आत्मीयतापूर्ण, सब प्रकार से आकर्षक एवं स्वच्छ वातावरण से युक्त ऐसा आतिथ्य दें कि उनमें भारत आने के लिए निरन्तर अभिलाषा, उत्कंठा, उल्लास, उत्साह बना रहे। यह अनायास नहीं है कि विश्व के अधिकांश देशों में उत्कृष्ट साफ-सफाई रहती है। इसमें एक ओर जहाँ उनके संस्कारों, उनकी व्यवस्था, उनकी जीवन शैली का योगदान है वहीं उसकी पृष्ठभूमि में पर्यटन उद्योग के लिए उनका एक अप्रत्यक्ष एवं अनकह संरक्षण भी हैं। स्विटजरलैण्ड, न्यूजीलैण्ड, मॉरीशस, नार्वे, हॉलैण्ड आदि अनेक देश हैं जिनकी आय का सबसे बड़ा स्रोत पर्यटन है जब कि अमेरिकन, यूरोपीय देशों के साथ-साथ जापान, थाईलैण्ड, सिंगापुर, आदि देशों की अर्थव्यवस्थाओं में तो इसकी अत्यन्त महत्वपूर्ण भागीदारी भी है।

कहना अनुचित ना होगा कि भारत में पर्यटन को आकर्षक बनाने के लिए हमें जहाँ अपने सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक स्थलों का संरक्षण-संवर्धन करना होगा, उन्हें दर्शनीय बनाना होगा, वहाँ तक पर्यटकों की पहुँच सुगम बनानी होगी, उनके लिये सुव्यस्थित, सहज, सुगम आवासीय व्यवस्था सुलभ कराने

हेतु देश के होटल-रेस्त्राँ उद्योग को बढ़ावा-विस्तार देना होगा तथा उसे स्तरीय बनाना होगा अपितु यह भी सुनिश्चित करना होगाा कि आगत पर्यटकों को हर तरह से तथा पूरी सक्षमता से यथापेक्षित वातावरण और सुविधायें उपलब्ध हो रही हैं। हमें देखना होगा कि हम सर्वत्र नियमित साफ-सफाई रख रहे है लेकिन उसके लिये हमें क्रमशः स्वच्छता की आदतों को अंगीकृत करना होगा, अपने को उनका अभ्यस्त बनाना होगा, उनके अनुकूल अपनी मनोवृत्ति को ढालना होगा साथ ही साथ स्वयं को और अगली पीढ़ियों को इस तरह के संस्कार भी देने होंगे। ऐसे नये परिवेश में, एक नये भारत में जब दुनिया भर से आने वाले यात्रीगण हमारी सनातनी आत्मीयता से ओत-प्रोत स्वागत परम्परा से रूबरू होंगे तो हम पायेंगे कि हमें तथा हमारे देश को निश्चयात्मक सुफल मिल रहे हैं। अर्थात् स्वच्छता केवल इसलिये जरूरी नही है कि इससे देशवासियों के रहन-सहन, उनकी मनोवृत्ति की पहचान होती है बल्कि यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि इससे हर एक के मन को जैसे एक शीतलता सी मिलती है। प्रातः जब मनुष्य ईश्वर-आराधना, पूजा-अर्चना के लिये तत्पर होता है तो उसके पूर्व वह पूजन-स्थल की सफाई करता है, स्नान करता है तथा इतने मात्र से ही उसके मन में जैसे कुछ स्थिरता, शान्ति आ जाती है, पूजा के लिये मानों एक अनुकूल सा वातावरण सृजित हो जाता है, उसी भाँति कहीं आने-जाने में वहाँ

पर विद्यमान वातावरण से भी मन में प्रतिक्रियायें होती हैं। स्वच्छता से अनायास ही मन के विकृत विचार तिरोहित होने लगते हैं, अंतस में एक ठहराव, संतोष, स्वीकार्यता, अनुकूलता, शान्ति व्याप्त होने लगती है। हम अन्य देशों की यात्राओं पर जाते हैं तो वहाँ की स्वच्छता हमें अभिभूत कर देती है तथा हमें ऐसे स्थानों पर बार-बार जाने की इच्छा होती है। स्वच्छ स्थान, अच्छे समारोहों की सुव्यवस्था से हमारा मन तरंगित हो जाता है।

अतः इसी भाँति हमें देश, मातृभूमि के प्रति भी सोचना चाहिये।

हमें यह चिन्ता तो होती है कि एवरेस्ट, नन्दादेवी, धौलगिरि, हिमालय की पर्वत श्रंखलायें अधिकाधिक पर्वतारोहण के कारण दूषित हो रही हैं। लेकिन यह भी जरूरी हैं कि हम अपने देश के लिये भी ऐसी ही चिन्ता करें तथा उससे आगे की कुछ सोचें। हम जानते हैं, कि ऐसा करना दुःसाध्य नही है। इस हेतु बस हर कदम को थोड़ा आगे बढ़ना है। एक के साथ एक को ग्यारह बनकर साथ देना है, मन से इस भाव को मिटा देना है कि यह एक हीन या तुच्छ कार्य है अथवा यह कार्य मेरा नहीं है, मेरे लायक, मेरे स्तर का नहीं है। हम अपने अंग-प्रत्यंग को स्वयं साफ करतें हैं, उसी भाँति यह घर,गली, गाँव, शहर, प्रदेश और देश भी तो हमारा अपना है। इन्हें स्वच्छ रखने में, उसके लिये सहयोग देने में कैसी ग्लानि , कैसी हीनभावना?

स्वच्छता ऐसा विषय है जिस पर दो मत नहीं हो सकते और ना ही इसमें मत-वैभिन्न्य के लिये कोई स्थान है। यह कोई तर्क नहीं है कि घर की साफ-सफाई केवल दीपावली या पर्व विशेष में होनी चाहिए। घर की सफाई तो नित्य की जाती है। सरकारी संस्थायें सड़कों-गलियों की रोज सफाई कराती हैं। जरा सोचिये कि चन्द दिन सफाई न हो? महज इस कल्पना मात्र से हम सिहर उठते हैं, उसी भाँति जैसे कुछ दिनों के लिए पानी या बिजली की आपूर्ति न होने पर। इस कार्य को सरकारी, स्वायत्त संस्थाओं का उत्तरदायित्व मानकर हम अपने कर्तव्य से विमुख हो जायें इसका कोई औचित्य नहीं है। इन संस्थाओं में कार्य करने वाले भी तो हम और आप ही हैं, ऐसे में उसका-मेरा का विभेद कैसा? इसके लिए तो मात्र कंधा से कंधा मिलाने की जरूरत है। हमें स्वच्छता के प्रति केवल अपना नजरिया बदलना है, तथा नजरिये के साथ-साथ इस कार्य में, आन्दोलन में अपनी सहभागिता बढ़ानी है। कहने की आवश्यकता नहीं कि चन्द क्षणों में हमें देश भर का परिदृश्य बदला हुआ दृष्टिगोचर होने लगेगा।

हाँ, सदूर गाँवों में स्वच्छता की दृष्टि से आवश्यक टॉयलेट्स आदि की व्यवस्था प्रथम दृष्ट्या एक महत्वपूर्ण कार्य लगता है, जिनके निर्माण, स्थापन तथा उन्हें सुलभ कराने के लिये सरकार से परे सामाजिक संस्थाओं, उद्यमों, औद्योगिक घरानों को स्वयंमेव आगे आने के बारे में सोचना होगा तथा इसमे सक्रिय एवं रचनात्मक सहयोग से सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति उन्हें अपनी भूमिका, सहभागिता तथा जागरूक सोच को जनमानस के मध्य सिद्ध करना होगा। इस सब के मध्य इस तथ्य को भी बराबर ध्यान में रखने की जरूरत है कि स्वच्छता के प्रति हमें बड़े पैमाने पर जन-जागरण भी करना होगा। इन सब का कार्यान्वयन होते ही हमें तत्काल समझ में आ जायेगा कि संसार में कोई भी कार्य दुरूह नहीं है और उसी के साथ असंभाव्यता के तमाम पर्दे स्वतः अनावृत्त होते चले जायेंगे। ■

वी०पी० गुप्ता
श्रम सलाहकार

सद्विचार

दूसरों की बड़ाई देखकर उनसे ईर्षा न करो और न ही अपनी शक्ति को उनके विरोध में व्यर्थ नष्ट करो, अपितु अपनी वास्तविक आत्म-उन्नति में लगो। दूसरों को गिराकर स्वयं को आगे मत बढ़ाओ।

श्री परमहंस अवतारजी महाराज

क्यों कर रहे अपमान तुम?

अपने बदन का मंदिर बना,
निज नयन के दीपक जला,
कर रही हो नादान आत्मा,
किस देव की स्थापना तुम?

इस दिवस के अवसान पर,
आगमन पर फिर रात्रि के,
कर रहे हो नदां हृदय मेरे,
किस निष्ठुर की आस तुम?

जीवन के अंतिम क्षणों में,
मृत्यु शय्या पर पड़े हो तुम,
किस आस और विश्वास से,
कर रहे अब, प्रस्थान तुम?

मानव को मादक बनाकर,
फिज़ा में मादकता बहाकर,
पर होश में रह, मधुशाला में,
क्यों कर रहे हो अपमान तुम?

शैलेन्द्र रस्तोगी, पूर्वछात्र

नकाब

नकाबों के पीछे ही इंसान दिलचस्प होते हैं।
वर्ना सतहे-खाल के नीचे तो वही हैवानी है।।

चश्में-नकाब रहने दे चेहरे पे हमेशा प्यारे।
बेनकाबी से ना जाने कहाँ गाज गिर जाये।।

हम दोनों ही वाकिफ हैं दरमियानी नकाबों के।
फिर भी क्यों कोशिश में हैं दिल फुसलाने के?

आदत सी हो चली है इन नकाबों में रहने की।
अंधेरे में जागने की और उजियारे में सोने की।।

रंगीन चेहरा तो नज्मों शायरी में खिलता है समीरा।
हकीकते नकाब के पीछे तो है वही स्याह चेहरा।।

प्रो. समीर खांडेकर
यांत्रिक अभियांत्रिकी

खुदा का बंदा

प्रसिद्ध सूफी संत उमर का स्वभाव था कि वे परोपकार या लोकहित के उद्देश्य से लोगों की परीक्षा लेते रहते थे। एक बार वे देशाटन पर निकले तो उन्हें मार्ग में एक चरवाहा मिला। उमर ने उससे एक बकरी देने को कहा। चरवाहे ने अपने मालिक का हवाला देकर ऐसा करने में असमर्थता जताई। तब उमर ने उससे कहा–इतनी बकरियाँ हैं। इनमें से एक कम भी हो जाएगी तो तुम्हारे मालिक को पता थोड़े ही चलेगा। वैसे भी तुम्हारा मालिक तो यहाँ नहीं। चरवाहा बोला– मेरा मालिक तो नहीं देख रहा, पर सबका मालिक खुदा तो देख ही रहा है। उसके साथ धोखा कैसे कर सकता हूँ? उमर उसको लेकर उसके मालिक के पास पहुँचे और उसे सारा किस्सा कह सुनाया। वह चरवाहा उस व्यक्ति के यहाँ गुलाम के रूप में कार्यरत था। उमर ने मालिक से कहा–खुदा के बंदे को कौन गुलाम बना सकता है तुम इसे मेरे साथ आने दो। चरवाहे के मालिक ने उसे आजाद कर दिया और वह चरवाहा सूफी संत उमर के शिष्य के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

16 lakhs per annum ctc (पैकेज़) के जॉब के इंटरव्यू के कुछ मज़ेदार अंश ....

इस सम्बन्ध में बहुत लोगों ने पूछा लेकिन कॉलेज के दोस्तों और घर के अलावा मैंने शायद ही किसी को कम्पलीटली बताया जॉब के बारे में। उन दिनों अलग ही माहौल था। इंटरव्यू का प्रेशर अजीब ही होता है। व्यक्तिगत जीवन में भी उथल-पुथल मची थी। मजबूरन दसवें दिन से सॉफ्टवेयर के लिए C रिवाइज करना शुरू कर ही दिया। 12 वें दिन सुबह इंटरव्यू के लिए कॉल आया, मैं सो रहा था। फ़ोन रखते ही अपना अकाउंट चेक किया तो पाया कि लगभग 200 लोगों में Aptitude Test के आधार पर 15 लोग इंटरव्यू के लिए सेलेक्ट हुए है जिसमे मैं भी हूँ और ये भी पाया कि मैं अपने स्लॉट से आधे घंटे लेट हो चुका हूँ सोने के चक्कर में। आनन -फानन में सूट पहना और बिना नहाये धोये ही पहुँच गया इंटरव्यू के लिए। यह सॉफ्टवेयर का मेरा दूसरा इंटरव्यू था, सेलेक्ट होने की संभावना जीरो प्रतिशत थी इसलिए पहले से ही बकवास काटने का मूड बना लिया था। वक्त से देर था इसलिए HR इंटरव्यू पहले शुरू हुआ

HR –Today is 12th day of placement- why are you unselected till now ?

मैं – Can I talk in Hindi ?

HR – Yes, of course- हम सब हिंदी में ही बात करते हैं।

मैं – Thanks . हाँ तो अभी तक unplaced होने की वजह कोई ख़ास academic achievement की कमी और शायद bad कम्युनिकेशन स्किल।

HR – आप सिविल डिपार्टमेंट से हैं। फिर सॉफ्टवेयर प्रोफाइल में क्यों जाना चाहते हैं?

मैं – पहले नहीं जाना चाहता था। Analyst और consulting के लिए कोशिश कर रहा था लेकिन अभी तक नहीं हुआ सो दो दिन से सॉफ्टवेयर के लिए पढ़ना शुरू कर दिया।

HR– तो फिर कैसे सॉफ्टवेयर इंजीनियर की जॉब कर पायेंगे?

मैं– लगभग 3 साल पहले कॉलेज आने के बाद मैंने पहली बार लैपटॉप टच किया था और सिर्फ तीन सालो में बहुत कुछ सीखा, और फाइनली आपके सामने इंटरव्यू भी दे रहा हूँ एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर की जॉब के लिए ..... इसलिए मैं sure हूँ कि जॉब अच्छे से कर लूँगा

HR – good ... मान लीजिये, ये आपका लास्ट चांस है और आप सेलेक्ट नहीं होते है , फिर आप क्या करेंगे ?

मैं – सेलेक्ट होने और ना होने, दोनों स्थिति में सिविल सेवा की तैयारी करुँगा। सेलेक्ट होता हूँ तो कुछ साल बाद शुरू करुँगा, अन्यथा अभी से।

HR – policybazaar के बारे में क्या जानते हैं ?

मैं – कुछ नहीं जानता। पहली बार नाम सुना था जब यह कंपनी प्लेसमेंट की लिस्ट में ऐड हुई थी।

HR – policybazaar में जॉब कब तक करेंगे?

मैं – जब तक काम और मेरी स्किल के हिसाब से पैसा और ऑफिस के लोगों का अनुकूल व्यवहार मिलता रहेगा।

फिर ढेर सारे प्रश्न पूछे गए , कुछ प्रोबेबिलिटी के ,कुछ गेस एस्टीमेशन के सवाल। फिर टेक्निकल इंटरव्यू शुरू हुआ

Interviewer 1 (resume देखते हुए) – ग्रेजुएशन में कुछ खास नहीं है।

मैं – हां ग्रेजुएशन में कुछ खास नहीं है तभी तो 12 वें दिन आपके सामने इंटरव्यू दे रहा हूँ। वर्ना पहले ही हो जाता

Interviewer 1 (हँसते हुए) दूसरे से , देखो लड़का क्या कह रहा है ....

Interviewer 2 – resume देख कर लग रहा है, खूब फक्के (fail) लगे हैं।

मैं – नहीं , फक्के एक भी नहीं लगे हैं। पास हो ही जाता हूँ।

interviewer 2 – तो मतलब डिक्के (D ग्रेड) की भरमार है ... हा... हा... हा

मैं – हाँ, कुछ ऐसा ही :)

Interviewer 2 – बोर्ड में तो काफी अच्छे मार्क्स है, उ. प्र. में टॉप लिस्ट में होगे ?

मैं - नहीं सर, दसवीं में जिले में था, 1 प्रतिशत से मेरिट लिस्ट में रह गया था । वो आप सब के जमाने में इतने पर टॉप कर जाते थे, आज कल तो उ.प्र. बोर्ड में भी 95 प्रतिशत से ज्यादा मार्क्स जाते हैं।

Interviewer 1 - प्रोग्रामिंग अच्छे से कर लेते हैं ?

मैं - नहीं, बस दो दिन से पढ़ना शुरू किया हूँ इसलिए अभी तो रिवीजन भी नहीं कर पाया हूँ। और सिर्फ दो दिन की पढ़ाई से मैं सॉफ्टवेयर की कई कंपनी के लिए शॉर्टलिस्ट हो चुका हूँ।

Interviewer 1 - ऐसा भी क्या। दो दिन से क्यों शुरू किये , 7 दिन पहले शुरू करते तो अब तक कर लिए होते पूरे?

मैं - जी सर , आप भी जानते हैं कि सात दिन पहले से पढ़ना शुरू करता तो पढ़ लेता। फिर ये तो मैं सेलेक्ट होने के बाद भी पढ़ लूँगा। बहुत वक्त है joining में।

(शायद यही आंसर मेरे सेलेक्ट होने की वजह बनी :)

Interviewer 1 - recursion आता है ?

मैं - अभी सिर्फ स्ट्रिंग तक पढ़ा हूँ। प्रोग्रामिंग नहीं कर सकता , हां लॉजिक बता सकता हूँ recursion से रिलेटेड प्रोब्लेम्स की।

Interviewer 1 - Pointer के बारे में कुछ बतायें।

मैं - सर! इतने कम वक्त में ज्यादा कुछ नही पढ़ पाया। pointer भी नहीं पढ़ा अभी।

Interviewer 1 - कुछ तो बताइये , आपको कैसे सेलेक्ट करेंगे।

मैं - सर , जो सच है बता दिया। सेलेक्ट करना और ना करना तो आप पर है।

फिर ढेर सारे टेक्निकल क्वेश्चन जो coding से related नहीं थे, पूछे गए। इन सब के जवाब भी दिये। इंटरव्यू लगभग 40 मिनट से ज्यादा तक और चला।

दोपहर कॉल आया कि पोलिसीबाज़ार ने तीन लोगो को सेलेक्ट किया है और मैं सेलेक्ट हो गया हूँ , Hall -10 आ जाओ .. यकीन तो हुआ ही नहीं।

दुबारा सूट लाद कर आया ,

Interviewer 2 (हाथ मिलाते हुए) - congratulation Rahul , welcome in policybazaar

मैं-थैंक्स सर, लेकिन आपने सेलेक्ट क्यों किया?(grin emoticon)

Interviewer 2 — हा...हा...हा...हा .....अबे तुम्हारे genuine आंसर तुम्हें इस जॉब के लायक बनाते हैं बाकि सब कुछ ट्रेनिंग में सिखा देंगे, वैसे भी तुम हमेशा सेल्फ स्टडी किये हो तो बहुत जल्दी सीख जाओगे सब कुछ। मैं भी तो यहीं का passout हूँ, जानता हूँ सब कितना पढ़ते हैं B.Tech में, grin emoticon ■

राहुल बिन्द, पूर्व छात्र

गाँधीजी को किसी ने खत लिखा कि बापूजी अब आप यह दौड़-धूप छोड़ दो, सत्याग्रह छोड़ दो। बुढ़ापा आ गया है, अंतकाल नजदीक है। यह संसार तो कुत्ते की पूँछ है, ऐसे ही चलता रहेगा। रामजी आये, कृष्णजी आये, सुधार किया लेकिन फिर भी कुत्ते की पूँछ ऐसी की ऐसी, अब आप सब काम छोड़ के भगवान की शरण में जाकर अपना जीवन धन्य कर लो।
गाँधी जी बोले मेरा अपना कोई काम ही नहीं है। मैं मेरे राम का ही काम करता हूँ। लोग अंग्रेजों के रीति-रिवाज के प्रभाव से दबे हैं, अपने अंतरात्मा राम का सुमिरन और आनंद भूल गये हैं। कमाना-खाना, खाना-कमाना यह यंत्र की नाईं जीवन गँवाना है। राम तो मेरा प्राणाधार है। मैं भोजन, पानी, वस्त्र और मकान के बिना रह सकता हूँ लेकिन मेरे राम के बिना मैं नहीं रह सकता।

महात्मा गाँधीजी

आस

एक शनिवार की शाम मैं बाजार से खरीददारी के बाद लौटते समय चाय पीने के लिए मोतीझील चौराहे पर गाड़ी खड़ी करके चाय आने का इंतजार कर रही थी। ठीक उसी समय एक बड़ी गाड़ी हमारे सामने रुकी और उससे आज के समय के सभ्य कहे जाने वाले लोग निकले। उन्होंने आइसक्रीम पार्लर में जाकर बढियाँ-बढियाँ आइसक्रीम लीं। हाँलाकि पार्लर के गेट पर ही दो कूड़ेदान रुपी पहरेदार हाथ फैलाए बैठे थे लेकिन उस सभ्य परिवार ने उनकी तरफ देखा तक नहीं, उन्हें तो अपनी पसंदीदा आइसक्रीम खाने की इतनी जल्दी थी कि आइसक्रीम का कवर हटाया, उन्हें वहीं सड़क पर फेंक कर शान से चारो ओर देखकर-देखकर पूरे मजे लेकर आइसक्रीम चट की और अपनी गाड़ी की ओर बढ़ गए। तब तक मिट्टी के कुल्हड़ में मेरी चाय भी आ गयी। मैंने चाय पी और कुल्हड़ अपनी गाड़ी में ही रख लिया क्योंकि मेरा प्रण था कि यदि मैं अपनी सड़क को साफ करने में सहयोग नहीं कर सकती तो कम से कम उसे गंदा करने का भी मुझे हक नहीं है। मैं यह भी सोचती हूँ कि यदि सड़कों पर गंदगी न फैलाने की आदत सब बना लें तो नगरपालिका को अपना काम करने में कुछ सरलता तो हो जाएगी क्योंकि इससे सड़कें साफ दिखेंगी और नगरपालिका का काम भी कम हो जाएगा। हमारा शहर, सारा देश सुन्दर तथा स्वच्छ दिखने लगेगा।

हमारे लिए कितने शर्म की बात है कि आज हमारे प्रधानमंत्री जी को देश की बड़ी समस्याओं के साथ हमें सफाई का महत्व भी बताना पड़ रहा है अरे, ये सब आदतें तो हमें माँ की घुट्टी के साथ मिल जानी चाहिए। जिस तरह हमें अपनी मातृ भाषा सीखने नहीं जाना पड़ता क्योंकि घर में परिवार के सान्निध्य में वह स्वतः आ जाती है, उसी भाँति हमें समाज में कैसे रहना है, देश के प्रति हमारा क्या कर्तव्य हैं, इसके संस्कार भी हमें अपने माता-पिता एवं शिक्षकों से मिल जाने चाहिए। हमारे परिवार तथा शिक्षकों का यह परम धर्म होना चाहिए कि वो अपने बच्चों को पेट पालने वाली पढ़ाई के साथ-साथ समाज में स्वच्छता के महत्व, नैतिकता के महत्व, देश के प्रति हमारे कर्तव्य आदि को हमारे रोम-रोम में इस तरह पिरो दें ताकि युग-युगान्तरों तक, पीढ़ी दर पीढ़ी इसका ज्ञान,

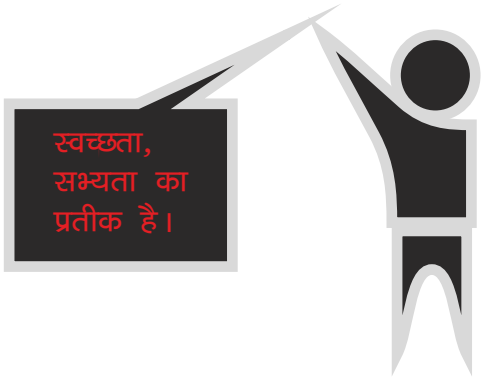

क्रियान्वयन हम सबके जीवन का अनिवार्य अंग बन जाये। किंतु इसके विपरीत लग तो यह रहा है कि माता-पिता एवं शिक्षकों के अंतर में व्यावहारिक ज्ञान के लिए कोई स्थान ही नहीं है। उन्हें जैसे यह पता ही नहीं है कि शिक्षा के इस बेहद अनिवार्य पहलू के अलावा सार्वजनिक स्थलों पर हमारा आचरण मनुष्य का नहीं वरन दो पैर वाले पशु जैसा ही रहता है। आप किसी विवाह समारोह या दावत में जाइए फिर देखिए कि असलियत में कितने मनुष्य हैं और कितने दो पैर वाले पशु। चाट, आइसक्रीम, मिष्ठान्न इत्यादि कुछ भी खाया, पत्ते एवं कागजों की प्लेटें वहीं शान से फेंकीं, कूड़ेदान तो महज परम्परा का निर्वहन हेतु ही रखे होते हैं। कितना अद्भुत विरोधाभास है कि एक ओर हमारा देश विकास की ऊँचाइयों को छू रहा है तो दूसरी ओर हमें दैनिक कार्यों का भी ठीक-ठाक बोध नहीं है। हाँ, हम विदेशियों की भाषा, रहन-सहन को तो आँख मूँद कर अपना रहे हैं लेकिन उनके स्वच्छता के पाठ को न पढ़ने की जैसे कसम खा रखी है। वो अपने देश को स्वच्छ रखने की परम्परा का कितना सम्मान करते हैं। लोग विदेश से आकर बताते हैं कि विदेश में उन्होंने एक बार चिप्स खाकर सड़क पर ही पैकेट फेंक दिया तो पीछे से आ रहे एक बुजुर्ग व्यक्ति ने उसे उठाकर कूड़ेदान में डाला और जैसे बिना कुछ कहे ही कितना कुछ सिखला गया। ऐसा देश प्रेम यहाँ क्यों नहीं दिखता, हम क्यों केवल अपने घर को ही अपना मानते हैं, घर के बाहर गंदगी फैलाते हैं, क्यों? क्या घर के बाहर की सफाई केवल नगरपालिका का काम है या फिर यह देश आपका अपना नहीं है? क्यों आप घर से बाहर निकलते ही कहीं भी थूंक देते हैं, कहीं भी कुछ भी फेंक देते हैं, कहीं भी नित्य-क्रिया कर देते हैं, आखिर क्यों? क्या आपको लगता हैं, हम विकसित हुए हैं?

हमको तो नहीं लगता। क्या हम अभी तक सभ्य नहीं हो पाए? सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी इत्यादि ही वे सब कारण हैं जिनके रहते हम अनेकानेक बीमारियों से जूझते रहते हैं और विदेशी पर्यटकों के सामने हमेशा हंसी का पात्र बनते हैं।

आज हम मैकाले की पेटपालू पढ़ाई ही पढ़ रहे हैं जिसके मूल में केवल अपने लिए पैसा कमाना है। यह नीति बहुत ही घातक है। इससे बचने के लिए हमें अपने पूर्वजों, ऋषियों-मुनियों से सीखना चाहिए जो सारे ब्रह्मांड की सुख-शांति के लिए कामना करते हैं, और अपने स्वार्थ मात्र के लिए नहीं जीते। जरूरत है कि अब हम अपनी संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठें और सही अर्थों में अपने को शिक्षित करें किन्तु हमें इतनी छोटी सी बात समझ में नहीं आती कि वातावरण में सर्वत्र स्वच्छता-निर्मलता का व्याप्त रहना कितना जरूरी है। बहरहाल इस उद्देश्य के निमित्त हमें पूरी ईमानदारी से तथा पर्यावरण के हित में कार्य करना होगा, तभी हम इस लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। जैसे एक-एक तिनके से चिड़िया घोंसला बनाती है, एक-एक बूँद से घड़ा भर जाता है, वैसे ही हम सब मिलकर इस समस्या को खत्म कर सकते हैं।

निष्कर्ष यही है कि इस समस्या को मात्र अभियान से नहीं खत्म किया जा सकता। इसके लिए जरूरी है कि जन मानस को यह सोचने के लिए मजबूर कर दिया जाए कि सफाई का ध्यान रखना हर व्यक्ति का नैतिक एवं राष्ट्रीय कर्तव्य है यह केवल सफाई कर्मियों का कर्तव्य नहीं है। ■

सुनीता सिंह
उप परियोजना प्रबंधक,

वो

आज फिर वो
हताश और अकेला
आसमाँ में चाँद को निहार रहा था,
बड़ी उथल-पुथल थी
सारे स्वप्न टूट रहे थे उसके
काँच की भाँति ही चरमर-चरमर।
था व्यथित वो लेकिन जानता था
वो काँच तो दर्पण का हिस्सा था
नहीं चाहता था वो ऐसा
मगर
दर्पण का रखवाला तो कोई और था
सँभाल न सका या समझ न सका रखवाला
अब तक बूझ न पाया वो।
आकाश में बिखरे तारों का पीछा करते-करते
शायद कुछ खोज रहा था वो,
कोई गम जो जोड़ देगा हर टूटे ख्वाब को,
नयनों में उसके उम्मीदों का सागर था
याद करते-करते
यूँ रात एक और गुज़र गई,
बस मिलने की ख्वाहिश एक, ताक पर रह गई।
तभी आवाज़ आई साकार और तन्द्रा टूट गई।
चारो तरफ पसरा सन्नाटा था,
नैनों में अद्भुत छवि थी
और वो सोचते-सोचते हँसने लगा।
हकीकत है या स्वप्न???

आयुष गुप्ता, साकार, छात्र

परिवर्तन की बयार

जरा सोचिये, अगर आपको किसी ऐसे स्थान पर भेज दिया जाय जहाँ हमेशा दिन रहता हो तो कैसा लगेगा? किसी ऐसी राह में चलना कैसा लगता होगा जिस पर केवल छाँव हो? अगर जीवन में सुख ही सुख हो और कुछ करना ना पड़े तो जीवन शायद नीरस सा लगने लगे और अगर परिवर्तन ना हो तो शायद इस पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीवों का जीवन बदरंग हो जाये। मनुष्य का मन तो वैसे भी बहुत शीघ्र एकरसता से ऊब जाता है और परिवर्तन ही उसे वह लाभ देता है जिससे एक समय के बाद वह स्वत: तरोताजा हो जाता है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। "गीता" में भी कहा गया है "अधिभूतं क्षरो भाव:" अर्थात् यह प्रकृति निरंतर परिवर्तित होती रहती है। हम बदलाव के साथ-साथ उसे परिभाषित होते हुए भी देख रहे हैं। प्रकृति के सारे बदलावों को हम समझ नहीं सकते क्योंकि जब बदलाव की बयार चलती है तो वह प्रकृति के हर पहलू को प्रभावित करती है। वह ये नहीं देखती कि कौन सा घर अमीर का है और कौन सा गरीब का, वह तो सबके लिए समान होती है। परिवर्तन निरंतर बहती उस हवा के समान है जो विशाल वृक्षों से लेकर छोटे पौधों तक को प्रभावित करती रहती है। वैज्ञानिक मनुष्य तथा अन्य जीवों पर बदलाव के पड़ने वाले दैहिक प्रभावों का अध्ययन तो कर सकते हैं पर मानसिक प्रभावों का नहीं। ऐसी कोई मशीन विज्ञान ने नहीं बनायी जिससे दैहिक और मानसिक प्रभावों का एक साथ अध्ययन किया जा सके। जब परिवर्तन का प्रभाव देह पर पड़ता है तो मन कैसे बच सकता है। जो खुद प्यासा हो वह दूसरों की प्यास कैसे बुझा सकता है। ऐसे में बदलाव ने मनुष्य की मन:स्थिति बदली है। देखा जाय तो प्राकृतिक रूप से सारे परिवर्तन मौलिक हैं पर उनके प्रभाव भिन्न-भिन्न हुए हैं।

पूरा अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय आज एक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। लोगों में अन्याय और अत्याचार के खिलाफ उभरे गुस्से ने आन्दोलनों का रूप ले लिया है। पिछले कई सालों में पूरे विश्व में अनेक विद्रोही आन्दोलन हुए। चाहे मिस्र, सीरिया की बात हो या इराक, अफगानिस्तान या गाजा पट्टी की , सबमें

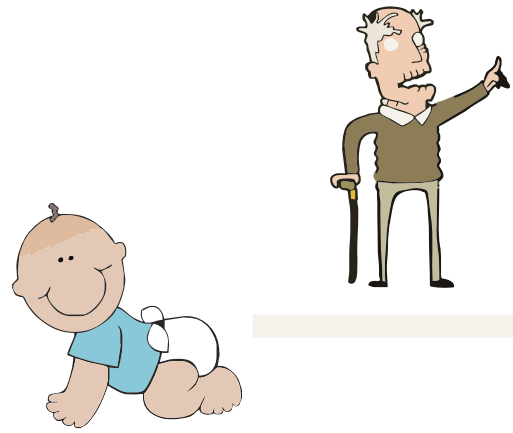

एक बात समान थी कि जनता जागरूक हो रही है। हमारा देश भी इससे अछूता नहीं रहा। लोकपाल के लिए, भ्रष्टाचार के खिलाफ चला अन्ना हजारे का आन्दोलन अब तक का सबसे बड़ा अहिंसक आन्दोलन था। आज अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के मायने भी बदले हैं। आज भारत और चीन की विकास दर अनेक विकसित देशों से ज्यादा है। कभी युद्ध में पाकिस्तान का साथ देने वाला अमेरिका आज हमारे साथ असैन्य परमाणु समझौता कर रहा है। जहाँ हम कभी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की बुराई करते थे, आज हम उसी का समर्थन करते हैं। आज का दौर ग्लोबलाइजेशन का दौर है, आर्थिक विकास का दौर है। लेकिन आर्थिक विकास से जीवन स्तर में हमेशा सुधार नहीं होता। लोगों की क्रय शक्ति व चुनाव शक्ति में वृद्धि होने से आर्थिक अवस्था में सुधार तो हो सकता है लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उससे जीवन में खुशहाली भी हो।

लोकतंत्र, समाजवाद और आधुनिक राजनीति भी परिवर्तित हो रही हैं। आज लोकतंत्र को भाषा, धर्म, जाति, और सम्प्रदाय के नाम पर बिखरना पड़ा है। राजनीतिक स्वार्थों ने लोकतंत्र को तिलांजलि दे दी है तथा राजनीति के सारे मूल्य जैसे खो चुके हैं। आज राजनीतिक लहर की बातें होती हैं। लोकतंत्र अब प्रकारान्तर से भीड़तंत्र में बदल रहा है, राजनीति समाजवाद के बजाय व्यक्ति केन्द्रित होती जा रही है, झूठे वादे करके जनता को मूर्ख बनाया जा रहा है, अवसरवादिता राजनीति का अभिन्न अंग बनती जा रही है, राजनीति में देशप्रेम की जगह परिवारवाद, जातिवाद और सम्प्रदायवाद ने ले ली है, भ्रष्टाचार दीमक की तरह अंदर ही अंदर अर्थव्यवस्था को कमजोर करने

में लगा हुआ है, आये दिन नेताओं के भ्रष्टाचार के किस्से बाहर आ रहे हैं और देश के युवावर्ग में राजनीति के प्रति उदासीनता बढ़ती जा रही है। भ्रष्टाचार का यह घुन लोकतंत्र के चारो स्तम्भों में इस कदर लग चुका है कि पैसे लेकर खबरें छापी जाती हैं, चुनावों को प्रभावित करने के लिए झूठे एक्जिट पोल करवाए जाते हैं, सरकार बनाने के लिए विधायक और सांसद खरीदे जाते हैं, लोकसभा में नोट उछाले जाते हैं। आलम ये है कि सी बी आई की स्वायत्तता पर भी सवाल उठने लगे हैं। बस अपवाद के रूप में कैग और सुप्रीम कोर्ट बचे हैं जिनके कारण भारत का आम नागरिक अभी भी कुछ-कुछ आशावान बना हुआ है।

अगर सामाजिक परिवर्तनों की बात की जाय तो बात सबसे पहले उस आधी आबादी की जिसके कारण दुनिया का अस्तित्व है। पहले लैंगिक विभेद की बातें होती थी, लड़के और लड़कियों में अंतर किया जाता था यहाँ तक कि काम का भी बँटवारा था जैसे कि अमुक काम लड़कियाँ नहीं कर सकती। लेकिन दुनिया को छाँव देने वाला आँचल आज सशक्त हो रहा है। समय, काल और जमाने की सोच को बदलते हुए महिलाएं अपने कदमों के निशान छोड़ रही हैं। आज वह फेसबुक और ट्विटर जैसे सोशल मीडिया पर अपनी दस्तक दे रही हैं। आज महिलाएं अपने परंपरागत कार्यों से परे पुरुषों के कार्यक्षेत्र में न केवल अपनी मौजूदगी दर्ज करा रही हैं बल्कि अपने काम को कहीं बेहतर अंजाम दे रही हैं। पुरुष प्रधान खेल मुक्केबाजी में मैरीकॉम, बैडमिंटन में ओलंपिक पदक विजेता साइना नेहवाल, बैंकिंग में चंदा कोचर जैसे नामों को आज कौन नहीं जानता। पाकिस्तान की मलाला यूसुफजई महिला संघर्षों के लिए चिरस्मरणीय हो गई है। आज देश में राजनीति से लेकर प्रशासन, साइंस, टेक्नालॉजी, कॉरपोरेट, मनोरंजन जैसे तमाम क्षेत्रों में महिलाओं की दमदार हिस्सेदारी है। पूरी दुनिया में हो रहे जलवायु परिवर्तन के कारण रहन-सहन और खान-पान के साथ मनोरंजन के साधन भी बदले हैं। हम पश्चिम की चीजों को तेजी से अपनाते जा रहे हैं और मूल्यों को खोते जा रहे हैं। हमें घर के खाने के बजाय बाजार के चटपटे भोजन ज्यादा पसंद हैं। हम चाइनीज नूडल्स, बर्गर, चाऊमीन जैसे फास्टफूड बड़े चाव से खाते हैं यद्यपि उनका पाचन कठिन है तथा जिसके कारण मोटापा व पेट की तमाम समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं। हम सूती और आरामदायक वस्त्रों के बजाय जींस और चमकीले वस्त्रों का चयन करते हैं। हम बस दिखावे के लिए बाहर से अच्छा दिखने की कोशिश करते हैं। लड़कियों का भड़काऊ कपड़े पहनना एक चलन सा हो गया है। विज्ञान और टेक्नालॉजी के निरंतर विकास से मनुष्य की जीवन पद्धति तेजी से बदल रही है। जीवन में परिवर्तन की यह गति इतनी तेज है कि एक पीढ़ी दूसरी पीढी को आश्चर्यजनक ढंग से अजनबी लगने लगती है। दो पीढ़ियों के बीच का अंतर इतना गहराता जा रहा है कि लोग अपने बूढ़े माता-पिता को वृद्धाश्रम में भेजने लगे हैं।

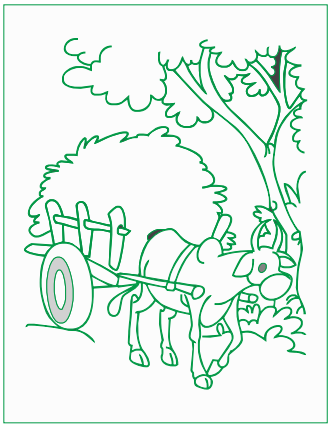

वहीं वैज्ञानिक प्रगति के परिणामस्वरूप आज जीवन-यापन अत्यंत सरल हो गया है। बड़ी से बड़ी दूरी क्षण भर में तय की जा सकती है। रेल और वायुयानों से हजारों किलोमीटर की दूरी कुछ घंटों में तय हो जाती है। आज मानव चाँद और मंगल पर भी अपने कदमों की दस्तक दे रहा है। जहाँ पहले सगे संबंधियों का संदेश मिलने में महीनों लग जाते थे, आज मोबाइल फोन के कारण लोग उनसे सतत् संपर्क में रहते हैं। कम्प्यूटर ने दुनिया को एक घर में समेटकर रख दिया है और इंटरनेट की सहायता से हजारों जानकारियाँ एक बटन दबाते ही मिल जाती हैं। आज हमनें मानो मौसम पर विजय प्राप्त कर ली है। एयर कंडीशनर से हमने मौसम को अपने अनुकूल बना लिया है। चिकित्सा जगत के अविष्कारों ने आज तमाम असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त कर ली है। कुल मिलाकर अगर कहा जाय कि आज विज्ञान ने लंगड़े को पैर, अंधों को आँख, बहरों को कान यहाँ तक कि कुरूपों को सुन्दरता दी है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

कहते हैं चिराग तले अँधेरा होता है। हर अच्छी चीज़ कुछ ना कुछ बुराई भी लेकर आती है। विज्ञान की उपलब्धियों ने जहाँ मनुष्य का जीवन बेहद सहज बना दिया है वहीं अब मनुष्य जैसे एक यंत्र मात्र होकर रह गया है। इसीलिए विकास में हमें वह सब भी मिल रहा है जिसके प्रयोग से क्षणमात्र में मानव जाति का अस्तित्व समाप्त हो सकता है। तात्पर्य यह है कि विकास की जिन ऊँचाईयों को हम छू रहे हैं उस अनुपात में हमारी चेतना का विकास नहीं हो पाया है। और यही हमारा मुख्य संकट है। सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के लालच में जंगल दिन प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं, हरियाली पर तुषारापात हो रहा है और नदियों का जल दूषित होता जा रहा है। यद्यपि हालात सुधारने के तमाम प्रयास सुझाये जा रहे हैं परंतु इन प्रयासों के परिणाम निराशानजनक हैं। पर्यावरण से आज हमारा वह रिश्ता नहीं है जो कभी मनुष्य का अपने खेत-खलिहानों से हुआ करता था। हमें चाहिए कि हम पर्यावरण की संस्कृति को अपने जीवन में उतारें नहीं तो नदियों को रोकने के लिए जितने बाँध बनेंगे, हमारे डूबने का खतरा उतना ही बढ़ता जायेगा। हम सब कुछ बदलना चाहते हैं पर खुद को नहीं। वायु प्रदूषण, भूमि प्रदूषण आदि पर चिंता व्यक्त करने वाले ऐसे न जाने कितने लोग हैं जिन्होने अपने जीवन में कभी कोई पेड़ नहीं लगाया, जो घरों से निकलते समय लाइट या ए. सी. के स्विच तक नहीं बंद करते। अभी हाल में संपन्न महाकुंभ में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पॉलीथीन पर प्रतिबंध लगाया, पर हममें से ऐसे अनगिनत लोग हैं जो घरों से स्वयं थैला लेकर नहीं निकलते और दुकानदार को पॉलीथीन रखने और हमें देने पर मजबूर करते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि वर्तमान समय में महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। परन्तु नित्य के दहेज हत्या के आंकड़े बताते हैं कि महिलाओं को बराबरी का दर्जा कितना मिला है? उन्हें बराबरी का दर्जा देने में हमारे सामंती संस्कार सामने आ जाते हैं। यही कारण है कि नारी की पूजा करने वाले इस देश में सती प्रथा की घटनाएं अंतरिक्ष के इस युग में भी घटती हैं। हम जैसे एक विरोधाभाषी युग में जी रहे हैं जहाँ बलात्कार के विरोध में लोग सड़कों पर तो उतर आते हैं तथा कड़कड़ाती ठंड और पुलिस के डंडे भी उन्हें रोक नहीं पाते लेकिन राह चलते जब किसी लड़की को मदद की जरूरत होती है तब क्या वे कभी रुकते हैं? बलात्कार पर खूब हो हल्ला मचाने वाले लोगों ने खुद 187 ऐसे सांसदों को लोकसभा में भेजा है जो यहाँ तो नारीवाद पर भाषण देते हैं परन्तु जिनके ऊपर महिला अपराध से जुड़े आरोपों की भरमार है। जो नारी स्वतंत्रता और अधिकारों की बातें करते हैं, वही नारी पर शासन करना चाहते हैं और लड़कियों के बाहर जाने पर न जाने कितने सवाल पूछते हैं पर लड़कों से यह कभी नहीं पूछते कि वह कब और कहाँ जा रहे हैं।

एक खुशहाल जीवन के लिए हमें अच्छा समाज चाहिए, अच्छी न्यायिक व्यवस्था चाहिये, अच्छी सरकार, अच्छा तंत्र, अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं चाहिए। लेकिन परिवर्तन का यह रास्ता अगर कहीं से शुरू होता है तो सिर्फ हमारे अंदर से। आंदोलन, क्रांति ये शब्द हमें कितना रोमांचित कर देते हैं? इसका हिस्सा बनकर हम कितना गर्व महसूस करते हैं? लगता है हम से बड़ा राष्ट्रवादी कोई हो ही नहीं सकता। अन्ना आंदोलन में भी यह देखा जा चुका है पर बीच सड़क पर जब कोई मदद के लिये पुकारता है तब हम दुनिया के सबसे व्यस्त इंसान बन जाते हैं। हम भ्रष्टाचार रहित देश चाहते हैं पर हेलमेट घर भूल जाने पर 50-100 रुपये का नोट निकालकर पुलिस वाले को थमाने में संकोच नहीं करते। हम लाइन में खड़े होने से बचने के लिए बाबू को रिश्वत देने में संकोच नहीं करते। हम सच का नहीं, पैसे और ताकत का समर्थन करते हैं और अपने स्वार्थ के खातिर रिश्तों में संतुलन नहीं रख पाते, यहाँ तक कि टी.वी. पर घोटालों की खबर सुनते समय राजनेताओं को कोसने वाले लोग चुनावों में अपने स्वार्थवश अपराधिक प्रवृत्ति के लोगों को ही वोट डाल आते हैं।

कुल मिला कर कहा जा सकता है कि बेहतर समाज का अपेक्षित परिवर्तन तभी होगा जब हम बाह्य परिवर्तनों के साथ-साथ अपनी आंतरिक चेतना को भी परिवर्तित करें अन्यथा विरोधाभास का यह संकट भविष्य में और गहराता ही जायेगा। ■

अखिल कुमार सिंह, छात्र

एक गान

आने की तैयारी करें
उस गान की
जिसकी प्रतीक्षा में हैं
हम सब आतुर
जन्म-जन्मातरों से।

वह गान
शब्दों, व्याकरण, भाषा, संस्कृतियों,
सम्प्रेषण से बाहर
मित्राक्षर, अमित्राक्षर
भेदों से चुप-चुप निकलकर
हम सब के मन का
प्राणों का गान
जिसकी आत्माओं में हैं सब के प्राण।

वह जो शब्दों के चंद्रमा की तरह
इस अभिशापित वन की हर इकाई में
पहाड़ से पेड़ों में, चटाई से बिछे सूखे पत्तों में
शांत पड़े सरोवरों में
खुदी पड़ी भुरभुरी मिट्टी में
झकझोर देगा
अपार्थिव सितार
नीले जल में कंपित
सूर्य की हीरक तरंगों की तरह
जिसको सुनने के लिए
आ चुके हैं अति-तृषित जन।
वह गान कागज के सफेद पृष्ठ पर हो
या लिखा हुआ, टंगा हुआ आकाश में
वह किसी कवि के मुख से
या गूंगे, वंचित से
उसे न ध्वनि या स्वर का आश्रय
वह गान जिसके लिए मैं जीवित हूँ

वह जो देवहीन मंदिरों का गुप्त गान
अंधकार सेंकती उपत्यकाओं का गान
निरावरण
अचिंत्य सौंदर्य का गान
प्रेम, प्रेम और प्रेम का गान
मैं देख पाता हूँ कि वह अपने आप की प्रतीक्षा में है
तैयारी करें हम उसके आगमन की।

प्रोफेसर अरुण कुमार शर्मा

वसुधैव कुटुम्बकम्

भारतीय संस्कृति श्रेष्ठतम मानवीय मूल्यों की जन्मदात्री है। उसका उद्घोष है कि जब मनुष्य-मात्र चाहे वे किसी भी देश, जाति, धर्म एवं रंग के हों, एक ही परम पिता परमेश्वर के पुत्र हैं तो निश्चित निष्कर्ष निकलता है कि वे सब आपस में भाई हैं।

भारतीय संस्कृति जिन गुणों से युक्त है उनमें सर्वश्रेष्ठ गुण उसका विश्वमुखी होना है। अपने इस गुण के बल पर उसे विश्व संस्कृति का मूलाधार होने का गौरव प्राप्त है। इसी को दृष्टि में रखकर भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम् के सूत्र द्वारा विश्व को एकता का उत्कृष्ट उपदेश देती है। वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात् यह समस्त वसुधा एक ही कुटम्ब है।

व्यर्थ वस्तु की खोज

एक ऋषि के पास एक युवक ज्ञान के लिए पहुँचा, ज्ञान प्राप्ति के बाद युवक ने गुरु दक्षिणा देनी चाही। गुरु भी अद्‌भुत थे। उन्होंने गुरु दक्षिणा के रूप में वह चीज माँगी जो बिल्कुल व्यर्थ हो।

शिष्य व्यर्थ चीज की खोज में चल पड़ा। व्यर्थ समझकर जब शिष्य ने मिट्टी की ओर हाथ बढ़ाया तो मिट्टी चीख पड़ी- "तुम मुझे व्यर्थ समझते हो, धरती का सारा वैभव मेरे गर्भ से ही प्रकट होता है। विविध रूप, रस, गंध क्या मुझसे ही उत्पन्न नहीं होते?"

घूमते-घूमते उस युवक को गंदगी का ढेर मिला, जिसके लिए मन में घृणा के भाव थे। उसने गंदगी की तरफ हाथ बढ़ाया, तभी गंदगी से आवाज आई- "क्या मुझसे बढ़िया खाद धरती पर मिलेगी, सारी फसलें मेरे से ही प्राण और पोषण पाती हैं। ये अन्न, फल सब मेरे ही रूप हैं, फिर भी तुम मुझे व्यर्थ समझ रहे हो।"

वह सोचने लगा, "मिट्टी और गंदगी का ढेर इतना मूल्यवान है, तब भला व्यर्थ क्या हो सकता है" तभी उसके मन में आवाज़ आई कि सृष्टि का हर पदार्थ अपने में उपयोगी है। व्यर्थ और तुच्छ तो वह है, जो दूसरों को व्यर्थ और तुच्छ समझता है। वह अहंकार के सिवा और क्या हो सकता है।

शिष्य गुरु के पास गया और क्षमा माँगते हुए कहा कि वह दक्षिणा में अहंकार देने आया है।

यह सुन गुरु प्रसन्न भाव से बोले, ठीक समझे हो वत्स! अहंकार के विसर्जन से ही विद्या सार्थक और फलवती होती है।

गंगानारायण त्रिपाठी,
सेवानिवृत्त कर्मचारी

मातृवत् परदारेषु

मातृवत् परदारेषु अर्थात् परायी स्त्री के प्रति अपनी माताश्री की भांति भावना होनी चाहिए। "दुर्गादास राठौर एवं औरंगजेब में घोर शत्रुता थी। परन्तु जब औरंगजेब की पौत्री दुर्गादास के हाथों में पड़ी तो उन्होंने अत्यंत कठिनाई से अजमेर से एक इस्लाम धर्मावलम्बी अध्यापिका को बुलाया और औरंगजेब की पौत्री को उसके संरक्षण में रख दिया ताकि उसका ठीक इस्लाम धर्मावलम्बी बालिका की तरह पालन-पोषण हो सके।"

इंदौर के महाराजा मल्हार राव होल्कर ने दिल्ली की बेगमों को गिरफ्तार कर तीन वर्ष रखा। वे सुन्दर बेगमें थीं परन्तु किसी को हाथ नहीं लगाया।

भरतपुर के महाराजा जवाहर सिंह ने भी बेगमों को कैद करके रखा। राजा बलराम सिंह जो महाराजा के मामा थे, बेगमों को अपनी देख-रेख में साथ ला रहे थे। बेगमों ने रास्ते में उनसे नाश्ते को कहा तो वह बोले उतर कर खेतों में मटर खा लो और फौज से कहा, ''मुँह मोड़ कर खड़े हो जाओ कोई इन्हें देखेगा नहीं'' इनके विषय में कवि मधूसूदन ने लिखा-

दिल्ली की बेगमें नागा पान चबाएं।
पाले पड़ी बलराम के तो मटर खेत में खाएं।।

भारतीय संस्कृति का तो आदर्श ही यह रहा है कि विजित राज्य की संस्कृति की रक्षा करना विजयी राजा का परम धर्म है।

चाणक्य नीतिदर्पण

पहली बारिश का पहला शो

धूप का आखिरी शो चल रहा था। सभी पेड़ पौधे शांत थे। हवा भी जैसे तैसे धूप का आखिरी कार्यक्रम देख रही थी। गर्मी अपने क्लाइमैक्स पर थी, इसलिए गरमी कुछ ज्यादा ही थी। गली के कुत्ते गटर क्लास में बैठे उकता रहे थे। सभी पंछी ऊँची डाल की बालकनी से शो को छोड़ रहे थे।

गिलहरियों को अब अपनी सीटों से जैसे कोई मतलब नहीं था और वे अरुचिपूर्ण ढंग से इधर-उधर भटक रही थीं। कोयल का संगीत अब समां नहीं बाँध पा रहा था।

मच्छरों को इस शो में घुसने की इजाजत नहीं दी गयी थी क्योकि गर्मी का वास्तविक अभिनय वे लोग झेल ही नहीं पाते।

धूल की उड़ती हुई धुंध मंच पर अभी भी एक अलग तरह का स्पेशल इफेक्ट दे रही थी। इस शो को देखते-देखते पेड़ पौधों की कमर दर्द होने लगी, इसलिए उन्होंने अब थोड़ा झुकना ही ठीक समझा। वास्तव में यह शो अब सब पर भारी पड़ने लगा था ।तभी अचानक सूरज की लाइट जलने-बुझने लगी।

एकाएक सभी का ध्यान टूटा। सबसे पहले इसकी जिज्ञासा कब से बैठी हुई हवा को हुई और वजह जानने के लिए उसने तेजी से दौड़ लगानी शुरू की।

यह देख कर पेड़ पौधों के पत्तों ने सरसराहट करके जोरदार तालियाँ बजायीं।

शायद सभी को पता चल गया था कि नया शो चालू हो चुका है।

बिजली की फ्लैश लाइट और उसके धमाकेदार रॉकम्यूजिक ने सभी को झूमने पर मजबूर कर दिया। कोयल, गली के कुत्ते, सभी अपनी-अपनी भाषा में नए शो की खुशखबरी दे रहे थे।

लेकिन अभी तक शो का असली हीरो तो आया ही नहीं था। सभी को लगा कि कहीं उन्हें बेवकूफ तो नहीं बनाया गया है। किसी को समझ नहीं आ रहा था, अत: उन्होंने झूमना बंद किया।

सभी अब धीरे-धीरे चुप होने लगे , हवा की सांस भी फूलने लगी थी और जैसे ही वह थक कर बैठी, बिजली की कड़कड़ाहट का म्यूजिक भी बंद हो गया। सब निराश होने लगे और सभी जगह शांति छा गयी। तभी आसमान से कुछ नन्ही सी चीज गिरी जिसे एक प्यारे से फूल ने देख लिया वह जोर से चिल्लाया 'वह' आ गया है। लेकिन किसी को उस फूल की बात पर विश्वास नहीं हुआ। तभी वह नन्ही सी चीज पुन: झोंकों के साथ ढेर सारी संख्या में गिरी और एक सोंधी सी महक ने सबका ध्यान अपनी तरफ खींचा। उस तरफ से कुछ-कुछ मद्धम संगीत भी सुनाई देने लगा था। तथा अब धीरे धीरे बढ़ने लगा था, उनकी तरफ आने लगा था।

उन्हें यकीन होने लगा कि वह फूल सही बोल रहा था कि उनका हीरो नन्ही बूंद, नहीं-नहीं, बूँदें बनकर आ रहा है। और फिर सभी उस पहली बारिश के पहले शो के रिमझिम संगीत पर पहले की तरह झूमने लगे।

राहुल कोठारी
छात्र

परछाईयाँ

तस्सवुरात की परछाईयाँ उभरती हैं
कभी गुमान की सूरत, कभी यकीं की तरह
------साहिर लुधियानवी

(1967)
सहमे सहमे डरे से कदमों से
हमनें Campus में पाँव रक्खे हैं
क्या मिलेगी हमें कभी Degree
यह सवालात जी में रक्खे हैं
कितना साहस है कितनी उम्मीदें
कितने अरमान ले के आए हैं
अपने अपने शहर के आला हैं
कितना अभिमान ले के आये हैं

तस्सवुरात की परछाईयाँ उभरती हैं ...

हुई ragging शुरू और झिड़कियां Muthanna+ की
सारा साहस भी गया, दिल भी गया, अरमां भी
रह गयी एक दुआ, ना निराश हो जायें
जैसे तैसे किसी "धुप्पल" में pass हो जाएँ

तस्सवुरात की परछाईयाँ उभरती हैं ...

(और इस घुप अँधेरे में)
जल उठी दोस्ती की शम्मा एक चुपके से
दिल ने रानायिओं के सपने बुने
हो गए दूर जब हम अपनों से
जो पराये थे मिल के अपने बने

तस्सवुरात की परछाईयाँ उभरती हैं...

कितने खुशहाल थे वो दिन वो पुर-सुकूं रातें
वो बेसबब झगड़े, बेइन्तहा बातें
वो बेशुमार लतीफे, वो कहकहे, वो हंसी
वो तीन पत्ती की महफ़िल की सुबहों तक रातें
वो दोस्त जिनके सहारे कटे हैं पांच बरस
अगर वो दोस्ताना होते तो जाने क्या होता

तो कौन हाल पूछता मेरा मायूसी में
तो कौन वक्त-ए-खुशी में शरीके-ए-मय होता

तो कौन लड़ता झगड़ता हंसाता दम-बेदम
सुबहो से शाम तलक कौन गालियाँ देता

अगर वो दोस्त ना होते तो जाने क्या होता

तो कौन मेरा इब्तदा में राजदां होता
तो कौन मेरा इबादत में हमसफ़र होता
तो कौन इम्तहां में साथ परेशां होता
तो कौन वकूत-ए-मुसीबत में आशना होता

अगर वो दोस्त ना होते तो जाने क्या होता

(पांच बरस बाद)
कट गए पांच बरस और मिल गयी डिग्री
दोस्त को अलविदा कहने के दिन अब आये हैं
जो पराये कभी हुए अपने
आज क्यों फिर से वो पराये हैं ?

तस्सवुरात की परछाईयाँ उभरती हैं...

(IITK छोड़ने के बाद)
हुई सुबह मगर वो हवा न चल पाई
किये गुनाह बहुत वो खता ना हो पाई
लगा है दिल मगर वो दिल्लगी न हो पाई
बनाये दोस्त पर वो दोस्ती न बन पाई

तस्सवुरात की परछाईयाँ उभरती हैं...

(और आज इस reunion के दिन)
आज फिर मिल के धुन बनायेंगे
आज फिर मिल के गीत गायेंगे
और इस दोस्ती के आलम में
फिर से परछाईयाँ बनायेंगे

+ डॉ.मुथाना प्रथम उपनिदेशक भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

डॉ. विक्रम किनरा
पूर्व छात्र

स्वच्छता, खुशहाली की ओर एक कदम! '

कुछ साल पूर्व शायद मैंने कभी
अपने सपनो में भी नहीं सोचा होगा
कि मुझे और मेरे कुछ मित्रों को
आपके साथ इस तरह रूबरू होना पड़ेगा।

जैसा सारे नौजवान उस आयु में करते हैं,
मैं और मेरे कुछ मित्र एक फार्म हाउस पे
हमारे एक दोस्त की सालगिरह के अवसर पर
देर रात तक रुके हुए थे।
आम तौर पे ये फार्म हाउसेस
शहर से थोड़ी दूर पे ही होते हैं।

निकलते निकलते हम लोगों को
काफी देर हो चुकी थी।
शहर में पहुचने के लिए
99 किलोमीटर का रास्ता
तय करना बचा था। कि तभी
मेरे एक मित्र ने अपने पेट में हो
रही गड़बड़ी के बारे में सबको बताया।

आस पास कोई पब्लिक टॉयलेट न
होने के कारण,
वहां पास के एक छोटे से गाँव में
हमने गाड़ी रोकी।
रात काफी हो चुकी थी और किसी इंसान का
कोई नामो निशाँ नहीं था।
दूर एक झाड़ी के पीछे से कुछ रौशनी आती देख,
मेरे मित्र ने सोचा कि ये अपने पेट में
उत्पन्न हो रही परेशानी से ईजाद पाने के लिए
एक अच्छी जगह हो सकती है।

इसी सोच से जैसे ही मेरे मित्र ने उस झाड़ी को
अपना स्थान बनाना चाहा, तभी पीछे से
उसे एक आवाज़ सुनाई दी।
"भाई साहब, यहाँ क्या कर रहे हैं आप?"

डर के मारे मानो मेरे मित्र के होश उड़ गए।
पीछे मुड़ के उसने एक इंसान को
दायें हाथ में लट्ठ लिए खड़ा देखा
"माफ़ कीजियेगा, मैं एक टॉयलेट ढूंढ़ रहा था"
ये कह के मेरे मित्र ने
परिस्थिति को सँभालने का प्रयास किया।

"भाई साहब, आपको यहाँ कोई टॉयलेट
नहीं मिलेगा" यह कह उस व्यक्ति ने दूर
एक मैदान की ओर इशारा किया।
"धन्यवाद" यह बोल मेरा मित्र जल्दी से
उस मैदान की तरफ जाने लगा.
शायद अब वह कुछ कहने की हालत में नहीं था.
जैसे ही वह उस मैदान के पास पंहुचा,
एक गंदी महक ने उसे चारों ओर से घेर लिया.

कोई और विकल्प ना होने के कारण, उसने
बची खुची जगह में अपना स्थान ग्रहण किया.
जैसे ही वो अपनी सारी तकलीफों से मुक्त होने के
प्रयास को प्रारम्भ करना चाह रहा था,
तभी उसे अपने पैरों पे
कुछ चलता हुआ महसूस हुआ.

अपने मोबाइल की टॉर्च जलाके अपने पैर पे चढ़ते
हुए एक साँप को देख,
वह ज़ोर से चिल्लाया और मानो 100 मीटर की
दौड़ में प्रत्याशी जैसा वो वहां से भाग आया.
बिना कुछ बोले वो गाड़ी में बैठ गया
और हमसे जल्दी चलने का इशारा किया.

हमने भी उस समय उससे कुछ नहीं पूछा.
अपने घर पहुँचते ही वो किसी को
बिना कुछ बोले घर में भागता हुआ
अंदर चला गया। हालाँकि ये थोड़ा अजीब था,
हम लोगों ने उसे वहीं छोड़
अपने-अपने घर जाना उचित समझा.
अगले दिन उसने हमें
पूरी घटना का वर्णन दिया.
एक तरफ तो हम सब हँसते-हँसते
लोट-पोट हो रहे थे, वहीं दूसरी ओर
हम सबके मन में एक ही बात चल रही थी.

कि स्वतंत्रता के छः दशक बाद भी हमारे देश में
599 मिलियन से भी ज्यादा ऐसे लोग हैं
जिनके पास टॉयलेट की सुविधा उपलब्ध नहीं है.
इससे उत्पन्न हो रही बीमारियों-कीटाणुओं से
हमारा देश आज भी जूझ रहा है.

मेरा उद्देश्य पिछली सरकारों की
गलतियां गिनाने या निंदा करने के बजाये आप
सबको इस बात से अवगत कराने
का है कि हम सबको इस समस्या का हल
खुद ही निकालना होगा।
हम उन लोगों को जिनके पास
टॉयलेट बनाने के लिए पैसे नहीं है,
या तो पैसों के माध्यम से या फिर
टॉयलेट तोहफे के रूप में देके,
उनकी मदद कर सकते हैं.

इससे ना सिर्फ हम अपनी सरकार के
स्वच्छ भारत अभियान में भागीदार बनेंगे,
साथ ही साथ एक अच्छे नागरिक होने की
अपनी ज़िम्मेदारी को भी पूरा कर पाएंगे.

कुश श्रीवास्तव
पूर्व छात्र

पात्रता

स्वामी विवेकानंद अमेरिका प्रवास पर निकलने वाले थे। जाने से पूर्व वे माँ शारदा से आशीर्वाद लेने पहुँचे। आशीर्वाद देने के स्थान पर शारदा माँ ने उन्हें सब्जी काटने का चाकू उठाकर देने को कहा। स्वामी विवेकानंद के चाकू उठाकर देने पर माँ शारदा बोलीं- "मेरा आशीर्वाद सदा तेरे साथ है। जाओ, खूब प्रगति करो और अमेरिका में जाकर अपने गुरु का, भारत का नाम रौशन करो।"

स्वामी विवेकानंद ने पूछा-"इस आशीर्वाद का चाकू देने से क्या संबंध है?" माँ शारदा बोलीं-"जब किसी साधारण व्यक्ति से चाकू माँगा जाता है तो वह मूठ अपने हाथ में रखकर धार की तरफ से चाकू दूसरे को देता है, परन्तु तुमने धार अपने हाथ में रखी और मूठ वाला भाग मेरी तरफ किया। सच्चे साधु का यही लक्षण है कि वह स्वयं कष्टों को स्वीकार करता है और दूसरों के कल्याण की कामना करता है। उस छोटे से घटनाक्रम ने बड़े कार्य के लिए तुम्हारी पात्रता सिद्ध कर दी और तुम इस आशीर्वाद के हकदार बने।"

छायाचित्र–2015

श्री रणेन्द्र, संयुक्त सचिव, हिंदी व्याख्यान देते हुए।

जिलाधिकारी रौशन जैकब प्रथम महिला एल्युमनी दिवस पर सभा को संबोधित करते हुए

निदेशक महोदय प्रथम महिला एल्युमनी दिवस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए

प्रथम महिला एल्युमनी दिवस पर दीप जला कर शुभारंभ करते हुए निदेशक महोदय

छायाचित्र–2015

शैक्षणिक श्रेष्ठता पुरस्कार समारोह पर छात्र को पुरस्कृत करते हुए निदेशक महोदय

निदेशक, प्रोफेसर इन्द्रनील मान्ना, अधिष्ठाता शैक्षणिक कार्य, प्रोफेसर नीरज मिश्रा, अधिष्ठाता, विद्यार्थी कार्य, प्रोफेसर ए आर हरीश

आरटीआई पर हिंदी में व्याख्यान देते हुए उप कुलसचिव श्री सी पी सिंह

अन्तर्राष्ट्रीय योगा दिवस पर संस्थान में योग पर कार्यशाला

संस्थान में योग दिवस

काव्य हेतु

हेतु का अर्थ है कारण। कवि में काव्य-प्रणयन की सामर्थ्य उत्पन्न करने वाले साधनों को काव्य हेतु या काव्य का कारण कहा जाता है। ये साधन ही कवि को काव्य प्रणयन में सक्षम बनाते हैं।

काव्य हेतुओं का निरूपण करने वाले आचार्यों में भामह, दंडी, रुद्रट, कुन्तक, मम्मट आदि का नाम उल्लेखनीय है। हिंदी के रीतिकालीन आचार्यों में सूरति मिश्र, श्रीपति तथा आधुनिक युग के जगन्नाथ प्रसाद भानु आदि ने मम्मट के आधार पर ही हेतु निरूपण किया है। इनके विवेचन में मौलिकता का अभाव है।

आचार्य भामह ने तीन काव्य हेतु माने हैं-प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास। दंडी ने भी शब्द भेद से इन्हें ही स्वीकार किया है। रुद्रट तथा कुन्तक ने भामह की प्रतिभा के स्थान पर शक्ति शब्द का प्रयोग किया है। आचार्य वामन की भी यही मान्यता है। राजशेखर ने शक्ति को ही मुख्य काव्य-हेतु माना है। उनके अनुसार समाधि (मन की एकाग्रता) और अभ्यास-ये दोनों कवित्व शक्ति को उद्‌भाषित करते हैं। परवर्ती आचार्य मम्मट ने तीन काव्य हेतुओं का उल्लेख किया है और शेष सभी का अंतर्भाव इन्हीं में माना है। ये हेतु हैं-शक्ति (प्रतिभा), लोक-व्यवहार, शास्त्र तथा काव्य आदि के अनुशीलन से प्राप्त निपुणता (व्युत्पत्ति) और काव्यज्ञ की शिक्षा से अभ्यास। पंडितराज जगन्नाथ ने प्रतिभा को ही काव्य-हेतु माना है व्युत्पत्ति और अभ्यास, प्रतिभा के उन्मीलक हेतु हैं।

इस तरह स्पष्ट है कि संस्कृत काव्यशास्त्र में शब्द-भेद से प्रायः तीन ही हेतु स्वीकार किये गये हैं और ये हैं-प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास।

काव्य हेतुओं में प्रतिभा का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस विषय में प्रायः सभी आचार्य एकमत हैं कि प्रतिभा ही कवित्व का बीज है। जिस प्रकार बीज के अभाव में वृक्ष की कल्पना नहीं की जा सकती, उसी प्रकार प्रतिभा रहित व्यक्ति काव्य-प्रणयन नहीं कर सकता। यदि वह काव्य प्रणयन में प्रवृत्त होता है तो उसकी कृति उपहास योग्य ही होती है। आचार्य जयदेव ने प्रतिभा का महत्व प्रदर्शित करते हुए कहा है कि प्रतिभा रूपी बीज अंकुरित करने के लिए व्युत्पत्ति और अभ्यास मिट्टी और जल के समान है,

"प्रतिभैव श्रुताभ्याससहिता कवितां प्रति,
हेतुर्मृदम्बुसम्बद्ध बीजोत्पत्तिर्लतामिव।"

भट्टतौत ने प्रतिभा की व्याख्या इन शब्दों में की है-"प्रज्ञा

नवनोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता।" अर्थात् नये-नये भावों के उन्मेष से युक्त प्रज्ञा को प्रतिभा कहते हैं। वाग्भट के अनुसार, प्रतिभा वह तत्व है जो कवि के हृदय में नूतन शब्दार्थ-समूह, अलंकार योजना, उक्ति वैचित्र्य तथा कल्पना वैभव आदि को जाग्रत करती है, कवि हृदय को नूतन वस्तुओं का दर्शन कराती है। आचार्य रुद्रट ने प्रतिभा के दो भेद किये हैं-सहजा अर्थात् स्वाभाविक और उत्पाध्या अर्थात् जो किन्हीं साधनों से (यथा शास्त्राध्ययन और अभ्यास) उत्पन्न की जा सके। राजशेखर ने प्रतिभा दो प्रकार की बतायी है-कारयित्री और भावयित्री। कवि का उपकार करने वाली प्रतिभा कारयित्री कहलाती है। इसके भी तीन भेद हैं-सहजा, आहार्या तथा औपदेशिकी। जन्मान्तर के संस्कार की अपेक्षा रखने वाली सहजा होती है, वर्तमान जन्म के संस्कारों से उत्पन्न आहार्या तथा मंत्रतंत्रादि साधनों से उत्पन्न औपदेशिकी होती है। भावक या सहृदय का उपकार करने वाली प्रतिभा भावयित्री कहलाती है। यह प्रतिभा कवि के श्रम तथा अभिप्राय का बोध कराती है।

व्युत्पत्ति शब्द का अर्थ है प्रगाढ़ पांडित्य। राजशेखर ने प्राचीन आचार्यों के मत का उल्लेख करते हुए व्युत्पत्ति का अर्थ बहुज्ञता दिया है। यह बहुज्ञता अथवा ज्ञान दो प्रकार का होता है-शास्त्रीय और लौकिक। शास्त्रीय ज्ञान अध्ययन जन्य होता है। इसके लिए भारतीय आचार्यों ने काव्यशास्त्र, छंदशास्त्र, दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र, शब्दकोष आदि का अध्ययन कवि के लिए आवश्यक माना है। लौकिक ज्ञान के अन्तर्गत लोकव्यवहार का सूक्ष्म निरीक्षण-परीक्षण आता है। कवि का शास्त्रीय ज्ञान तभी सफल हो सकता है, जब उसे लोक-व्यवहार का अच्छा ज्ञान हो।

काव्य कृति में महानता व्युत्पत्ति या लोक-शास्त्र की निपुणता के अभाव में नहीं आ सकती। अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों को रमणीय बनाने के लिए व्युत्पत्ति या निपुणता का होना आवश्यक है।

निरंतर प्रयास करते रहने को अभ्यास कहते हैं। सभी आचार्यों ने अभ्यास को प्रतिभा का पोषक माना है। काव्य में सौष्ठव लाने के लिए अभ्यास आवश्यक वस्तु है। इसके अभाव में अनेक प्रतिभायें कुण्ठित होकर नष्ट हो जाती हैं। अभ्यास से काव्य रचना में परिष्कार आता है। आचार्य दंडी ने अभ्यास का महत्व स्वीकार करते हुए कहा है कि पूर्व वासनाजन्य अद्‌भुत प्रतिभा के न रहने पर भी शास्त्राध्ययन और अभ्यास से वाणी की उपासना करने पर वाणी अवश्य ही अनुग्रह करती है।

तात्पर्य यह है कि प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास तीनों काव्य हेतु एक दूसरे के पूरक हैं। किसी एक के बिना भी काव्य-सृजन कठिन है। कोई एक अपने आप में पर्याप्त नहीं। आचार्य रुद्रट ने इसलिए तीनों को लगभग समान महत्व देते हुए कहा है-"त्रितियमिदं व्याप्रियते शक्तिर्व्युत्पत्तिरभ्यासः।" कुछ लोगों ने समाधि (चित्त की एकाग्रता) को भी काव्य हेतु माना है। पर समाधि न केवल काव्य रचना, बल्कि प्रत्येक रचनात्मक कार्य के लिए आवश्यक है। अतः उसे काव्य हेतु के अंतर्गत स्थान देना उचित नहीं। ■

स-आभार :
हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली
डॉ. अमरनाथ

अधिक सनेही माछरी, दूजा अलप सनेह।
जब ही जलते बीछुरै, तब ही त्यागै देह।।

मछली का जल से गहरा स्नेह होता है, इसके आगे सारे प्रेम-स्नेह बौने हैं। जल से अलग होते ही मछली अपने प्राण त्याग देती है। सच्चे प्रेमी भी ऐसे ही होते हैं।

संत कबीरदास

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निर्देश

राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश नियम, करार, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञप्ति आदि द्विभाषी रूप में ही जारी किए जाएं। किसी प्रकार के उल्लंघन के लिए हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी को जिम्मेदार ठहराया जाएगा।

अधीनस्थ सेवाओं की भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी के अनिवार्य प्रश्नपत्र को छोड़कर शेष विषयों के प्रश्नपत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए और ऐसे प्रश्नपत्र अंग्रेजी तथा हिंदी दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराए जाएं। साक्षात्कार में भी हिंदी माध्यम की उपलब्धता अनिवार्य रूप से रहनी चाहिए।

सभी प्रकार की वैज्ञानिक तकनीकी संगोष्ठियों तथा परिचर्चाओं आदि में राजभाषा हिंदी में शोध पत्र पढ़ने के लिए और प्रोत्साहित किया जाए। उक्त शोध पत्र संबद्ध मंत्रालय विभाग कार्यालय आदि के विषय विशेष से संबंधित होने चाहिए।

सभी मंत्रालय विभाग इस विभाग द्वारा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए चलाई गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का अपने सम्बद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों में भी व्यापक प्रचार-प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक अधिकारी कर्मचारी इन योजनाओं का लाभ उठा सकें और सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो। तिमाही प्रगति रिपोर्ट संबंधी सूचना निर्धारित प्रोफार्मा में ई-मेल द्वारा प्रत्येक तिमाही की समाप्ति के अगले माह की 15 तारीख तक राजभाषा विभाग को उपलब्ध करा दी जाए। हस्ताक्षरित प्रति अलग से भेजी जाए।

सरकार की राजभाषा नीति के प्रति अधिकारियों, कर्मचारियों को सुग्राही बनाने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में हुई प्रगति की समीक्षा को मात्र राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों तक ही सीमित न रखा जाए। इस संबंध में मॉनीटरिंग को और अधिक प्रभावी और कारगर बनाने के लिए यह जरूरी है कि मंत्रालयों विभागों कार्यालय के प्रशासनिक प्रधानों द्वारा ली जाने वाली प्रत्येक बैठक में इस पर नियमित रूप से विस्तृत चर्चा की जाए और इसे कार्यवृत्त की एक स्थायी मद के रूप में शामिल किया जाए।

प्रशिक्षण और कार्यशालाओं सहित राजभाषा हिंदी में कार्य कर रहे अधिकारियों कर्मचारियों को भी कार्यालय में बैठने के लिए अच्छा व समुचित स्थान उपलब्ध कराया जाए ताकि वे अपने कर्तव्यों का निर्वाह ठीक से कर सकें।

राजभाषा विभाग द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मंत्रालय विभाग राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निर्देश राजभाषा विभाग द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मंत्रालय विभाग कार्यालय आदि नियमित रूप से अपने कर्मचारियों को नामित करें और नामित कर्मचारियों को निर्देश दें कि वे नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थित रहें, पूरी तत्परता से प्रशिक्षण प्राप्त करें तथा परीक्षाओं में बैठें। प्रशिक्षण को बीच में छोड़ने या परीक्षाओं में न बैठने वाले मामलों को कड़ाई से निपटा जाए।

सभी मंत्रालय विभाग कार्यालय आदि हिंदी में प्रशिक्षण के लिए नामित अधिकारियों कर्मचारियों के लाभ के लिए लीला-हिंदी प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ आदि सॉफ्टवेयर के उपयोग के लिए कंप्यूटर की सुविधा उपलब्ध करवाएं।

सभी मंत्रालय विभाग कार्यालय आदि अपने-अपने प्रशासनिक दायित्वों से संबंधित विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तक-लेखन को प्रोत्साहित करने तथा अपने विषयों से संबंधित शब्द भंडार को समृद्ध करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।

सभी मंत्रालय विभाग सरकारी कामकाज में तथा गृह-पत्रिकाओं आदि में अहिंदी भाषी शब्दों के स्थान पर अन्य भाषा भाषी अथवा हिंदीतर भाषी शब्दों का प्रयोग करें। ■

हिंदी साहित्य सभा

हिंदी साहित्य सभा–एक परिचय

"माँ" इस शब्द से जुड़ी हर भावना निश्चय ही वर्णनानीत होती है, फिर माँ की गोद में सुने शब्दों से, उन शब्दों की भाषा से लगाव क्योंकर नहीं होगा?

यही विचार हमारी यानि कि हिंदी साहित्य सभा की मौजूदगी के औचित्य को स्पष्ट करता है।

दूरदर्शी कवि भारतेन्दु हरिशचंद्र ने 19 वीं सदी में ही अपनी भाषा पर ये सार्वभौम विचार प्रस्तुत कर दिया था

"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल"

किन्तु आर्दशवादिता की रौ में उन्होंने उसके यथार्थ की परख नहीं खोई।

"अंग्रेजी पढ़ि के जदपि सब गुन होत प्रवीन

पै निज भाषा ज्ञान बिन रहत हीन के हीन।।"

साहित्य समाज का दर्पण होता है, अतएव उससे अनभिज्ञ रहकर हम अपनी सामाजिक समझ का एक बड़ा हिस्सा खो देते हैं।

ऐसे में जिस समाज में हम पले बढ़े, जिसमें हमारी सोच गढ़ी उसी समाज के मानस को परखने के लिए अपनी मात्रभाषा के साहित्य का ज्ञान नितान्त आवश्यक है।

बस ऐसे ही कुछ विचारों से ओत-प्रोत छात्रों का क्लब है हमारी "हिन्दी साहित्य सभा"।

वैसे यह नाम हमारे कार्यक्षेत्र का सूचक तो है किन्तु विगत वर्षों में हमनें कई क्षेत्रों में अपनी गतिविधियों का विस्तार किया है।

हम गंभीर साहित्यिक चर्चाओं से लेकर प्रेम पत्र लेखन, मायाजाल (ट्रेजर हंट), गुपचुप जैसी मनोरंजक गतिविधियाँ भी आयोजित करते हैं। हम लेखन व पत्रकारिता जैसे कार्य क्षेत्रों में स्थापित नामों से विचार विमर्श कर उनकी राय तथा उनके अनुभव जानने की भी कोशिश करते रहते हैं। इसके लिए नामी पत्रकारों एवं लेखकों को हम लोग परस्पर चर्चा हेतु आमंत्रित करते हैं। जहाँ हम उनसे अपने विचार सांझा करते हैं। कैम्पस के विद्यार्थियों का पहला समाचार पत्र 'निर्वाक्' हमारी एक नई पहल है। जिसके पहले संस्करण ने लोगों को प्रासंगिक मुद्दों पर सोचने तथा विचार अभिव्यक्त करने का मंच प्रदान किया।

अहिंदी भाषी कैंपस निवासियों के लिए हमारा क्लब हिंदी शिक्षण कक्षाएं भी आयोजित कराता है।

इसके अतिरिक्त हमारा क्लब राजभाषा प्रकोष्ठ के विविध आयोजनों जैसे हिंदी पखवाड़ा, स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में सांस्कृतिक कार्यक्रम, आदि में भी यथाशक्ति सहयोग देता है। ■

हिंदी साहित्य सभा के वर्तमान समन्वयक

अजय गौतम, अरिंदम राज, मयंक पाठक, नम्रता चौबे

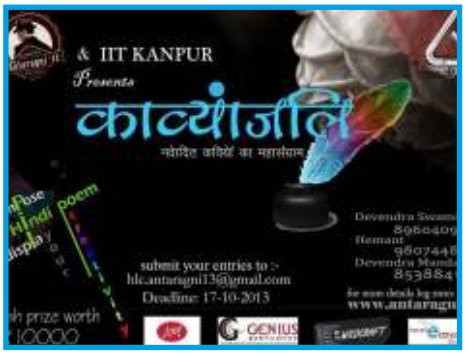

बेईमानी का नतीजा

कस्बे के एक छोटे से बाजार में एक सुनार रहता था। उस बाजार में कोई धनवान मनुष्य नहीं आता था इसलिए सुनार का काम-धंधा बड़ा मंदा चल रहा था।

एक दिन गरीबी से तंग आकर सुनार अपने पड़ोसी ब्राह्मण के घर गया और बोला-लगता है, तुम भी हमारी तरह बड़े दुख में दिन बिता रहे हो पंडित जी! आओ दोनों चलकर किसी दूसरे प्रदेश में नौकरी करें। जब थोड़े रुपये-पैसे इकट्ठे हो जाएंगे, तो फिर वापस आकर सुख-चैन से रहेंगे।"

सुनार की बात मानकर ब्राह्मण उसके साथ विदेश जाने को तैयार हो गया। ब्राह्मण के घर में उसकी माँ थी, जिसे वह यह कहकर घर से निकला कि थोड़े ही दिनों में उसके लिए रुपये भेज देगा।

...इसी प्रकार की बातें सुनार ने अपनी पत्नी और पुत्र से कहीं, और ब्राह्मण के साथ नौकरी की खोज में चल दिया।

एक बहुत बड़े नगर में पहुँचते ही ब्राह्मण और सुनार को नौकरी मिल गई। दोनों ने ही कुछ रुपये इकट्ठे कर लिए। इसके बाद सुनार घर जाने को तैयार होकर ब्राह्मण से बोला- "मैं तो अब नौकरी छोड़कर घर जा रहा हूँ। यदि अपनी माँ के लिए चिट्ठी-पत्री देनी हो तो दे दो!" ब्राह्मण ने एक अशर्फी निकाल कर सुनार को देते हुए कहा- "अच्छा तुम घर ही जा रहे हो तो यह अशर्फी लेते जाओ, और मेरी माँ को देकर कह देना कि मैं अभी छह महीने बाद वापस आऊँगा।"

ब्राह्मण से अशर्फी लेकर सुनार वापस अपने घर आया। उसके आने का समाचार सुनकर ब्राह्मण की माँ अपने बेटे का हाल-चाल पूछने उसके पास गई, तो उसने कहा- "तुम्हारा बेटा बड़े आनन्द से है। अच्छी तरह कमा खा रहा है। उसने छह महीने के बाद वापस घर लौटने के लिए कहा है।"

ब्राह्मण की माँ ने सुनार से पूछा- "बेटा, क्या उसने कुछ रुपये पैसे नहीं दिए? "

सुनार ने कहा-"अरे हाँ, मैं तो भूल ही गया। तुम्हारे लड़के ने मुझे एक पैसा तुम्हें देने को कहा था। वह तुम लेती जाओ।"

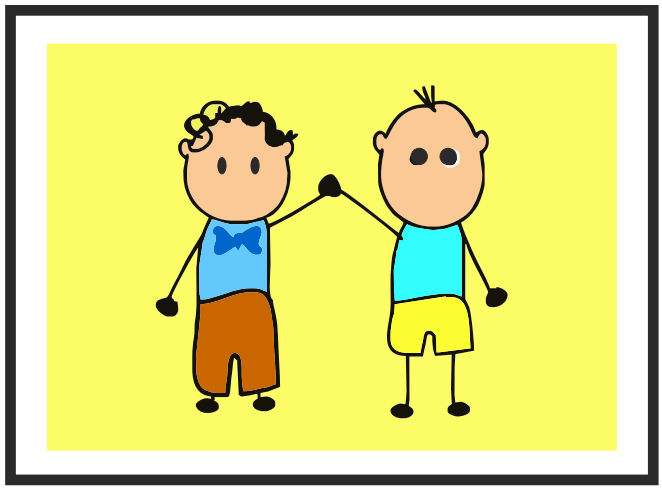

...इतना कहकर सुनार अपने घर गया और एक तांबे का पैसा लाकर ब्राह्मण की बूढ़ी माँ के हाथ पर रखकर जैसे मुक्त हो गया।

बेचारी बूढ़ी ब्राह्मणी गरीबी के दुख में तो वैसे ही जल रही थी। बेटे का भेजा हुआ केवल एक पैसा लेकर वह और भी दुखी हो उठी। किंतु बेचारी कर ही क्या सकती थी। वह चुपचाप मन मारकर घर वापस आई और फिर उसी तरह दुख के दिन काटने लगी।

इसी तरह धीरे-धीरे छह मास बीत गए। जब ब्राह्मण काफी रुपया-पैसा लेकर वापस अपने घर आया, तब तक उसकी माँ गरीबी के कारण सूखकर काँटा हो गई थी। ब्राह्मण ने जब अपनी माँ का इतना बुरा हाल देखा, तो उसने पूछा- "माँ तुम इतनी दुबली क्यों हो गयी हो?"

गरीब ब्राह्मणी ने कहा- "बेटा, तुम्हें यहाँ से गए कितने दिन बीत गए। घर में खाने-पीने को कुछ था नहीं। फिर ऐसी हालत में मैं दुबली नहीं तो क्या होती?"

ब्राह्मण ने कहा-"मित्र सुनार ने आ कर तुम्हें कुछ दिया नहीं था?"

उसकी माँ ने कहा-"अरे पागल, तूने जो उसके हाथ एक ताँबे का पैसा भेज दिया था, क्या उसी से मैं अमीर बनकर पक्का मकान बनवा लेती? तेरा भेजा हुआ पैसा तो अभी उस ताक में ही रखा हुआ है।"

ब्राह्मण उसी समय उसकी चालाकी समझ गया। उसके मन में बदले की भावना जाग उठी। वह अपनी माँ की दशा जानकर सुनार का शत्रु बन गया, परंतु ब्राह्मण शीघ्रता न करके धैर्य से बदला चुकाने की तरकीब सोचने लगा। भोजन की कमी से उसकी माँ बहुत दुर्बल हो गई थी।

कुछ दिनों के बाद ब्राह्मण ने कुछ रुपये लगाकर एक सुंदर पाठशाला बनवाई! आस-पास के अनेक विद्यार्थी उस पाठशाला में पढ़ने-लिखने लगे। एक दिन सुनार भी घर से चलकर पंडित जी की पाठशाला में आया और बोला-"पंडित जी, आप तो हमारे पुराने मित्र हैं। यदि कृपा करके हमारे बच्चे को भी अपनी पाठशाला में भर्ती कर लें तो हमारा बच्चा भी थोड़े दिनों में पढ़-लिखकर होशियार हो जाए।"

पंडित जी ने कहा-"अरे भाई! इसमें कृपा की क्या बात है? यह पाठशाला तो हमनें खोली ही इसीलिए है कि लोग अपने बच्चों को भेजकर पढ़ा-लिखा लें।"

सुनार अपने पुत्र को पंडित जी की पाठशाला में छोड़ आया। दो-चार दिन बीतने पर पंडितजी ने सुनार के लड़के को जान से मारकर बदला चुका लेना चाहा, परंतु, वह यह सोचकर रुक गया कि बेचारे बच्चे ने उसका क्या बिगाड़ा है! ... किन्तु फिर भी पंडितजी ने सुनार के बच्चे को अपने किसी मित्र के यहाँ भेजकर सुनार की नजर से दूर कर दिया।

थोड़े दिनों के बाद एक दिन सुनार अपने बेटे को देखने पंडित जी की पाठशाला में गया, तो वहाँ पंडित जी ने एक बंदर को लाकर सुनार के सामने बैठा दिया।

बंदर को देखकर सुनार बोला-पंडित जी यह क्या है ? यह बंदर कैसा? मेरे बेटे को आपने क्या किया?"

पंडित जी बोले-"अरे मूर्ख! देख नहीं रहा है, यही तो तेरा लड़का है। पहले तो यह ठीक था, पर इतने दिनों में मेरे पास रहकर यह बंदर बन गया तो मैं क्या करूँ?" बेचारा सुनार सिर पीटता हुआ गाँव के मुखिया के पास गया और रोकर कहने लगा कि पंडित जी ने मेरे बेटे को बदल दिया है और उसके बदले में मुझे बंदर दे रहे हैं। कृपा करके आप उनसे मेरा बेटा दिलवा दीजिए।

मुखिया ने पंडित जी को बुलवाकर जब पूछा, तो पंडित जी ने कहा-"यह बंदर ही तो इसका बेटा है। यह मेरे पास आकर यदि बंदर बन गया तो मैं क्या करूँ?"

सुनार ने कहा-"ऐसा कभी नहीं हो सकता। मेरा बेटा इन्होंने कहीं छिपा दिया है। मेरा बेटा भला बंदर कैसे बन सकता है?"

पंडितजी ने कहा-"मुखिया जी! आज से कुछ समय पहले मैं और सुनार एक नगर में नौकरी करने गए थे। वहाँ से चलते समय सुनार को मैंने एक अशर्फी देकर माँ को देने के लिए कहा था। किंतु इस चालाक सुनार ने अशर्फी तो अपने घर में रख ली और बदले में मेरी माँ को एक ताँबे का पैसा पकड़ा दिया। अब इनका बेटा यदि मेरी पाठशाला में आकर मनुष्य से बंदर बन गया, तो भला मैं क्या कर सकता हूँ।"

मुखिया ने डाँटकर सुनार से पूछा-"क्यों जी! क्या पंडित जी की अशर्फी वाली बात सच है?"

बेचारा सुनार गिड़गिड़ाकर बोला-"हाँ, मुखिया जी! पंडित जी की बात बिल्कुल सच है। मैं अभी अपने घर जाकर इनकी अशर्फी लाए देता हूँ। परंतु कृपा करके इनसे मेरा बेटा दिलवा दीजिए।"

...इतना कहकर सुनार अपने घर भागता हुआ गया और अशर्फी लाकर पंडित जी के चरणों में रख दी।

पंडित जी अपनी अशर्फी वापस पाकर प्रसन्न हुए और मित्र के घर से सुनार के बेटे को मँगाकर सौंपते हुए बोले-"चालाक सुनार! मित्र के साथ कभी भी धोखा मत करना। तुमने मेरी माँ को छह महीने भूखों मारा था। इसीलिए तुम्हें इतना कष्ट भोगना पड़ा।" ■

आभार

संग्रह स्रोत
कच्छ की लोक कथाएँ
गौरीशंकर पाण्ड्या

आओ सीखें

बच्चों! आज हम तुम लोगों को आतिथ्य सत्कार के बारे में बताएंगे, तुम सब पढो और जानो कि तुम सही काम कर रहे हो या गलत। तुम्हारे घर कोई आता है तो क्या करते हो? छिपकर घर में चले जाते हो? अपनी माता या पिता के पास चले जाते हो? वह कुछ पूछता है तो मुँह छिपा लेते हो? वह कुछ पूछता है तो सिर हिलाते हो? बच्चों! ऐसा व्यवहार अच्छा नहीं। जब भी घर में संबंधी लोग आते हैं तो तुम उनका स्वागत करो, प्रणाम करो, बैठने को कुर्सी दो। अगर घर पर कोई नहीं तो जल पीने को दो। जब वो जाने लगें तो उन्हें प्रणाम करो।

अभिवादन करने से हमारी आयु, विद्या, यश और बल बढ़ते हैं।

- आलस मत करो।
- असावधानी मत करो।
- किसी की निन्दा मत करो।
- किसी से घृणा मत करो।
- किसी की चुगली मत करो।
- किसी से ईर्ष्या मत करो।

अंधकाल मिटा दे

अंधकाल मिटा दे, हर मानव को रूची दिला दे
दर्शन हों हमें प्रभु के, आशीर्वाद गुरु के।।
हम भक्त हों मीरा की तरह
हम मृदुभाषी हों कृष्ण की तरह
हम चतुर हों तेनाली की तरह,
हम हों अमर, हम हों अमर।।
मित्रता रहे हमेशा रूची प्राप्त करें।
रात की सुंदरता महसूस करें।।
कोटि-कोटि वरदान देना प्रभु।
पशु-पक्षी को रूपवान बनाना प्रभु।।
फूलों वृक्षों की मुस्कान पहचानना प्रभु।
आनंद ही आनंद फैलाना प्रभु।।

गार्गी जोशी
कक्षा -4

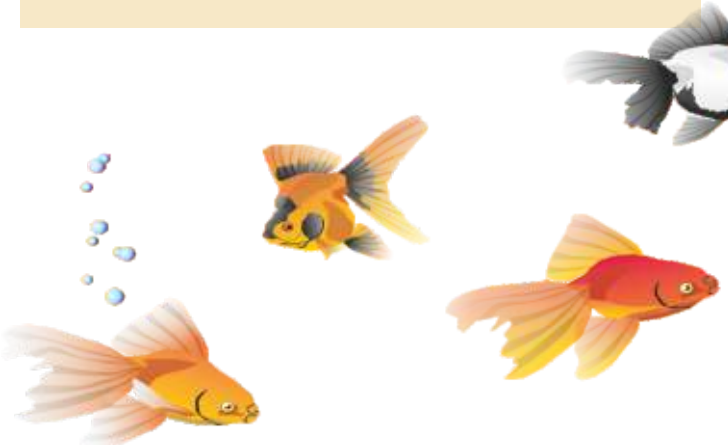

हम अंतस में बच्चों की लिखी कविता या लेख का भी स्वागत करते हैं। बच्चे अपनी रचना हमें जरूर भेजें।

एक बोझ

वक्त कुछ थम सा गया है,
आँखें नम हैं,
चार पैसे कमाने शहर तो आ गया,
इस शहर की चकाचौंध में,
ज़िंदगी की आपाधापी में अपने आप को खो दिया,
पर कुछ थकान,
कुछ बोझ सा महसूस होता है.

चेहरों पे चिंता थी,
आँखो में आँसू भी थे,
जब बस में बैठा था शहर आने के लिए.
तो एक उम्मीद, एक विश्वास भी था,
मंदिर में उधार के पैसों से,
जलाए गये उस दीपक की तरह,
कि एक दिन नया सबेरा होगा,
जब इस गाँव का 'सूरज',
शहर से नवीन रोशनी ले के लौटेगा,
एक बड़ा आदमी बन के लौटेगा.
इस तसव्वुर में ना जाने कितनी आँखें,
बूढ़ी हो चली होंगी.

स्कूल से दो बजे लौटता था मैं,
उस अमरूद के पेड़ के तले बैठ,
अपने हाथों से खाना खिलाती थी वो,
रात भर पंखा झलती, लोरियाँ सुनाती,
मेरे सारे सवालों का जवाब थी वो,
पर उसका एक ही सवाल था,
कब आओगे,
जिसका जवाब भी मैं दे ना सका,
मेरे सपने उसकी जरूरतों से बड़े हो चले थे,
मैं बड़ा आदमी जो बन गया था.

आज एक दर्द एक टीस उठी दिल में,
बहुत दिनों से कोई पत्र नहीं आया,
बहुत दिनों से किसी नें नहीं पूछा,
कब आओगे,
पर आता भी कैसे,
मैंने नया घर जो ले लिया था,
जिसका पता सिर्फ़ बड़े लोगों के लिए ही था..
चार पैसे कमाने शहर तो आ गया,
पर कुछ थकान,
कुछ बोझ सा महसूस होता है.

प्रियंका शर्मा, शोध छात्रा

बातों ही बातों में

उम्मीदों के आइने में कुछ अलग निकला
हर दिल अज़ीज़ शख्स मुसाफ़िर निकला

ग़लत उम्मीद थी अब साथ नहीं छूटेंगे
समझ रहे थे जिसे घर वह कारवां निकला

चले थे किस मक़ाम को पहुँच गए हैं कहाँ
सफ़र समझे थे पर मक़ाम भी वही निकला

किसको उनवान कहें कहाँ शुरू नज़्म करें
मसला एक सवालों का सिलसिला निकला

मुड़ कर देखी जो ज़िन्दगी अपनी हमने
उसी के भेस में सारा यह रास्ता निकला

अरुण श्रीवास्तव, पूर्व छात्र

भा.प्रौ.सं.कानपुर में रासायनिक अपशिष्ट प्रबंधन

रासायनिक अपशिष्ट (Chemical Waste), वह अपशिष्ट पदार्थ है जो प्रयोगशालाओं अथवा रासायनिक उद्योगों में रसायनों के उपयोग से उत्पन्न होता है। भा.प्रौ.सं.कानपुर भारत में शिक्षण एवं अनुसंधान का एक सुप्रतिष्ठित संस्थान है। यहाँ हम रासायनिक अपशिष्ट प्रबंधन के संदर्भ में भा.प्रौ.सं.कानपुर द्वारा किये जा रहे कार्यों पर एक नजर डाल रहे हैं। उल्लेखनीय है कि संस्थान की अपनी स्वयं की प्रयोगशालाओं से ही प्रतिदिन यथेष्ट मात्रा में रासायनिक अपशिष्ट निकलता है। सामान्यतः रासायनिक अपशिष्ट के निस्तारण (Disposal) की ठीक-ठाक व्यवस्था न होने की स्थिति में रासायनिक अपशिष्ट को घरेलू अपशिष्ट की तरह संसाधित (Treated) कर लिया जाता है जो निश्चय ही एक असुरक्षित एवं खतरनाक प्रक्रिया है क्योंकि रासायनिक अपशिष्ट से हमारे निकट के परिवेश एवं पर्यावरण को भारी क्षति पहुंचती है। अब यह हमारे विवेक मात्र पर निर्भर नहीं रह गया है बल्कि इसके विपरीत यह एक कानूनी बाध्यता है कि हम जो रसायन अपशिष्ट उत्पन्न करें, उसका सुरक्षित एवं संतोषजनक ढंग से निस्तारण भी करें । इस विषय पर कार्य करने के लिए भा.प्रौ.सं.कानपुर द्वारा वर्ष 2012 में एक समिति गठित की गई थी जिसके सदस्य प्रो.जितेन्द्र के बेरा (रसायन विभाग), प्रो. संदीप वर्मा (रसायन विभाग), प्रो. बालाजी प्रकाश (बी.एस.बी.ई.) तथा प्रो.शिवकुमार (रासायनिक अभि.विभाग) हैं । इस समिति का कार्यक्षेत्र निम्नवत रखा गया :

1- ठोस एवं तरल अपशिष्ट की प्रकृति एवं मात्रा का अनुमान लगाना
2- रासायनिक अपशिष्ट के निस्तारण के लिए लाइसेंसधारी वेन्डरों का पता लगाना
3- पृथक्करण(Segregation), भण्डारण (Storage) एवं वर्गीकरण (labeling) हेतु दिशा-निर्देश तय करना, तथा
4- संग्रहण (Collection), परिवहन(Transport) एवं अस्थाई भण्डारण सुविधा।

ठोस रासायनिक अपशिष्ट के भण्डारण में जेरीकेन तथा प्लास्टिक की थैली का उपयोग.

क्लोरीनयुक्त विलयनों पर लेबल.

उक्त समिति की अनुशंसा पर भा.प्रौ.सं.कानपुर में एक अपशिष्ट प्रबंधन निर्देशिका बनाई गई है। इस निर्देशिका में भा.प्रौ.सं.कानपुर में विभिन्न प्रकार के रासायनिक अपशिष्ट के चिन्हांकन और भण्डारण तथा संग्रहण एवं निस्तारण की रूप-रेखा दी गई है। अपशिष्ट की प्रभावकारी निस्तारण प्रक्रिया में अपशिष्ट को न्यूनतम किया जाना पहला महत्वपूर्ण कदम है। इसे हासिल करने के दो तरीके हैं- स्त्रोतों में कमी करना (Source Reduction) तथा उसका पुनर्चक्रण (Recycling)। इस हेतु सर्वप्रथम ऐसी प्रक्रिया जो स्त्रोत पर ही रासायनिक अपशिष्ट की उत्पत्ति को कम अथवा समाप्त कर सके, को अपनाया जाना अपेक्षित है। यह कार्य प्रयोगशालाएं समुचित पदार्थ प्रबंधन, कम खतरनाक पदार्थों को अपना कर तथा बेहतर प्रयोगशाला पद्धतियों के उपयोग से कर सकती हैं। इस क्रम में संस्थान में अब प्रयोगशालाओं में रसायनों की खरीद जरूरत के अनुसार ही की जाती है तथा प्रायोगिक कक्षाओं के लिए प्रयोग की ऐसी विधियाँ तैयार की गई हैं जिनमें रसायन का उपयोग कम से कम हो। इसके लिए सुरक्षित विकल्पों पर भी ध्यान दिया जाता है तथा कम विषैले रसायनों के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाता है। साथ ही अपशिष्ट के पुनर्चक्रण अथवा अन्य प्रक्रियायों में इसके अधिकाधिक उपयोग का प्रयास किया जाता है।

संस्थान ने इसी दिशा में यहाँ की प्रयोगशालाओं से निकलने वाले रासायनिक अपशिष्टों के निस्तारणार्थ उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधीनस्थ मे. रैमकी इन्वायरमेंट इंजीनियरर्स लि. की इकाई के साथ एक संविदा करार किया है एवं प्रयोगशालाओं से निकलने वाले ठोस एवं तरल अपशिष्ट पदार्थों के पृथक्करण, भण्डारण, संग्रहण तथा निस्तारण के

लिए एक निर्देशिका तैयार की गई है। सामान्य रसायनों को विभिन्न खतरनाक श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है तथा पृथक्करण के दिशा-निर्देशन तैयार किये गये हैं ताकि दो बेमेल रसायन आपस में न घुल पायें। रसायन के उपयोग से जुड़ी हर प्रयोगशाला के लिए रसायन के अपशिष्ट के भण्डारण में भण्डारण संबंधी दिशा-निर्देशों का कठोरता से अनुपालन किया जाना एक अनिवार्यता है। इसके अंतर्गत वे खतरनाक तथा गैर-खतरनाक अपशिष्ट को अलग-अलग रखती हैं और उच्च प्रक्रियाशील रसायनों (Highly reactive chemical) को निस्तारण के पहले संसाधित करती हैं। भण्डारण पात्र प्रयोगशाला के अंदर ही एक खुले स्थान पर रखे जाते हैं। क्लोरीनयुक्त (Chlorinated) तथा क्लोरीनमुक्त (Non-Chlorinated) ऑर्गनिक घोल या विलयन को 20 लीटर की अलग-अलग जैरीकेन तथा ठोस अपशिष्ट को प्लास्टिक की थैली में रखा जाता है। हर पात्र में रखे जाने वाले पदार्थों तथा उनके रखे जाने की तिथि स्पष्टतः अंकित की जाती है। ठोस रसायन के समकक्ष अनुपयोगी बैटरियों, प्रिन्टर के कॉर्ट्रिजों एवं कंप्यूटर के उपकरणों को रासायनिक अपशिष्ट की श्रेणी में माना जाता है।

हर प्रयोगशाला भण्डारण पात्रों एवं लेबलिंग के लिए संस्थान निर्माण विभाग (सं.नि.वि.) से संपर्क करती है। संनिवि की देखरेख में प्रशिक्षित कर्मचारी प्रयोगशालाओं से रासायनिक अपशिष्ट बराबर उठाते रहते हैं। इसके बाद उन्हें हवाई पट्टी मार्ग के पास एक बेहद हवादार भण्डारगृह में पहुँचा दिया जाता है। विलयन को एक बड़े पात्र में रखा दिया जाता है जहाँ उनका मद्धम गति से वाष्पीकरण होता रहता है। जब पर्याप्त मात्रा में ठोस एवं तरल अपशिष्ट इकट्ठे हो जाते हैं, तब RAMKY के कर्मचारियों को बुलाया जाता है। इसके बाद उनका वजन किया जाता है और तत्पश्चात् RAMKY के लोग उसे निस्तारित करने के लिए संस्थान से 60 किमी दूर अपने अकबरपुर स्थित भण्डारगृह में ले जाते हैं। इस विलयन अपशिष्ट का पुनर्चक्रण करके उसे पेंट एवं अन्य उद्योगों के उपयोग हेतु तैयार कर दिया जाता है जबकि ठोस अपशिष्ट को संस्थान के बाहर गड्ढों को भरने के काम में लाया जाता है।

अपशिष्ट निस्तारण की यह प्रक्रिया फरवरी 2013 से चल रही है। तब से जून 2015 तक संस्थान 10,000 किग्रा से अधिक क्लोरीनमुक्त विलयनों तथा 2500 किग्रा से अधिक ठोस अपशिष्ट का निस्तारण करा चुका है। उपरोक्त आँकड़ें संस्थान से निकलने वाले रासायनिक अपशिष्ट की वृहद् मात्रा की ओर स्पष्ट संकेत करते हैं। यह हमारा लक्ष्य है कि संस्थान में रासायनिक अपशिष्ट के निस्तारण को शून्य स्तर पर ले आया जाए। यह तभी संभव है जब संस्थान के छात्रगण, शोधार्थी, प्रयोगशाला प्रभारी तथा संकाय-सदस्य भली-भाँति रूप से अपनी-अपनी जिम्मेदारी निभायें। हममें से हर एक को देखना होगा कि प्रयोगशालाओं में कोई भी ऑर्गनिक विलयन सिंक में न डाला जाए और न ही कचरे के डिब्बों में ठोस रासायनिक अपशिष्ट डाले जायें। रासायनिक अपशिष्टों से पर्यावरण को होने वाले खतरे को हमें समझना होगा। रासायनिक अपशिष्ट का निस्तारण खर्चीली प्रक्रिया है, किन्तु हमारे पर्यावरण एवं स्वास्थ्य पर इनके विनाशकारी प्रभावों को देखते हुए यह कीमत कोई मायने नहीं रखती। ■

Ramky अकबरपुर, अंबेडकरनगर, उ.प्र. में ठोस अपशिष्ट भरावक्षेत्र.

भा.प्रौ.सं.कानपुर में अस्थायी रासायनिक अपशिष्ट का भंडारगृह

प्रोफेसर जितेन्द्र के बेरा
रसायन विभाग
अनुवाद - राजभाषा प्रकोष्ठ

Presentation:
http://web.iitk.ac.in/newdordint/templates/intranet/data/Chemical_Waste_Management/IITK_Chemical_Waste_management.pdf
Guidelines:
http://web.iitk.ac.in/newdordint/templates/intranet/data/Chemical_Waste_Management/IITK-WMG.pdf

हिन्दी की गौरव – गाथा

भाषा : भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से बोलकर या लिखकर हम अपनी बात दूसरों से कहते हैं और दूसरों के विचारों को ग्रहण करते हैं। पर हिन्दी भाषा में भाव प्रवाह भी है। यह हिन्दी की ही विशेषता है कि बोलते ही चेहरे पर भाव आ जाते हैं और श्रोता प्रभावित होता है।

हिन्दी भाषा : हिन्दी भाषा सुगम - सरल है। पूरे देश में बोली और समझी जाती है। इसमें मिठास है, प्रवाह है, बोधगम्यता है, और नदी की धारा की तरह चंचल है। जन जीवन की गोद में इसका जन्म हुआ। अतः जनता के गले का हार है।

हिन्दी भाषा एक जीवन्त तथा सशक्त भाषा है। इसने अनेक – विदेशी एवं अन्य भाषाओं के अनेक शब्दों को अपनाया। यह बहते नीर की तरह सदा प्रवाहित होती रहती है। हिन्दी एक भाषा ही नहीं, भारत की सांस्कृतिक धरोहर है। हिन्दी कथा-साहित्य ने हमें संस्कार दिये हैं। रात्रि को सोने से पहले दादा - दादी, नाना-नानी द्वारा सुनाई जाने वाली कहानियों से हमारा चरित्र निर्माण हुआ, पारिवारिक संबंध सुदृढ़ हुए।

हिन्दी कथा साहित्य में आचार्य विष्णुशर्मा का पंचतंत्र विश्वविख्यात है जिसने पशु-पक्षियों की छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से मूर्ख राजपुत्रों को भी कुशल शासक बना दिया।

हिन्दी के प्रबल प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने ठीक ही कहा

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति कौ मूल ।
बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय कौ शूल ।।

प्रातः काल माँ कितनी सहजता से बेटे को जगाती है: -

उठो लाल अब आँखें खोलो
पानी लाई हूँ मुँह धो लो।

विश्व की अन्य किस भाषा में ऐसा वात्सल्य मिलेगा; केवल हिन्दी ही इस तरह दुलारती है।

हिन्दी भाषा वैज्ञानिक भाषा है : हिन्दी भाषा में बोलना और लिखना दोनों ही एक समान है लेकिन अंग्रेजी में ऐसा नहीं है। वहाँ तो अंग्रेजी में Put पुट पर but बट, Wife वाइफ पर Knife नाइफ है जब कि हिन्दी की वर्णमाला उच्चारण स्थलों के अनुसार है जैसे कंठ - तालु - मूर्धा - दंत - ओष्ठ के अनुसार। इसीलिए हिंदी में हमारा उच्चारण शुद्ध है।

हिन्दी पद्य साहित्य का अमर कोश है हिन्दी भाषा की गेय शैली अजर-अमर है। इसके द्वारा हमें हमारा पूरा जीवनदर्शन याद रहता है। बड़े-बड़े और छोटे-छोटे आख्यान जैसे रामचरित मानस, सुन्दरकाण्ड, हनुमान चालीसा, सूर के पद, बिहारी सतसई, रहीम के दोहे, मीरा के भजन और ईश प्रार्थनायें हममें सदैव मानवीय गुणों का विकास करते रहते हैं। इसी कारण विदेशियों के लाख प्रयत्नों के बाद भी हिन्दी साहित्य अमर रहकर जन-गण-मन का कल्याण करता रहा। हिन्दी भाषा सरस, कोमल तथा भाव युक्त है इसका साहित्य सहिष्णु है। इससे उदात्त गुणों का विकास होता है। हिन्दी भाषा में प्रवाह है, लालित्य है, इससे प्रेम और भाई-चारे का भाव जाग्रत होता है।

हिन्दी काव्य के पुरोधा - एक लम्बी परम्परा है हिन्दी के ओजस्वी कवियों की जिन्होंने अपनी रचनाओं से समाज का मार्गदर्शन किया और देशप्रेम की ज्वाला जलाई। कबीर-तुलसी-सूरदास से लेकर रहीम-श्यामनारायण पाण्डेय, रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि की - जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में जनमानस का सम्बल बढ़ाया हिन्दी के ये चितेरे राष्ट्र की अनुपम निधि हैं।

हिन्दी के मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ : हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। इसके मुहावरे और लोकोक्तियों ने हिन्दी भाषा की सजीवता में सदैव वृद्धि की है। यदि मुहावरे लोक-मानस की चिरसंचित अनुभूतियाँ हैं, तो लोकोक्तियाँ लोक अनुभव से बनती हैं। भारतीय समाज ने जो कुछ लम्बे अनुभव से सीखा, उसे एक संक्षिप्त वाक्य में बाँध दिया। शिक्षित-अशिक्षित सभी इनका निर्बाध प्रयोग करते हैं। विश्व की किसी अन्य भाषा में ऐसी समृद्धशाली परम्परा नहीं है। इन्हें कहावत या जनश्रुति भी कहते हैं। एक बानगी देखिए:-

नौ दो ग्यारह होना, आँखों में धूल झोंकना
नाक में दम करना, दाँत खट्टे करना
श्री गणेश करना, छक्के छुड़ाना
अधजल गगरी छलकत जाय, घर का भेदी लंका ढाय
चट मँगनी-पट ब्याह, अंधेर नगरी चौपट राजा
थोथा चना बाजे घना, दूध का दूध पानी का पानी

इसी तरह पर्यायवाची (समानार्थी) शब्द हिन्दी की वह निधि है

जो अन्य भाषाओं में नहीं। देखें :- पानी- जल, नीर, वारि, अम्बु, पय आदि ।

पहेलियाँ : (प्रश्नोत्तर से ज्ञानवर्धन) ज्ञानवर्धन के लिए पहेलियों का प्रयोग विश्व को हिन्दी भाषा की अनुपम देन है। प्रश्न, फिर उत्तर देकर हल दे देना-इस भाँति बच्चों का मानसिक विकास सहज में हो जाता है।

पहेलियों में नारी चातुर्य दर्शनीय है। ऐसा हास्य - व्यंग्य किसी और भाषा में कहाँ मिलेगा -

कुँए में चार पनहारिन पानी भर रही थीं। खुसरों ने पानी माँगा। वे पहचान गयीं। बोलीं-पहले पहेली बुझाओ । एक बोली खीर, दूसरी-चरखा, तीसरी-बिल्ली चौथी-बोली-ढोल। ये चारों शब्द पहेली में आयें। खुसरों ने पल-भर पनहारिनों की ओर देखा, फिर मुस्करा कर बोले:-

खीर पकाई जतन से, चरखा दिया जलाय।
आई बिल्ली खा गयी, तू बैठी ढोल बजाय ।।

पनिहारिनों ने खुसरों को पानी ही नहीं पिलाया, भोजन भी कराया। क्या आपने किसी भाषा में आत्मीयता का ऐसा हास-परिहास देखा है? यह केवल हिन्दी में ही सम्भव है।

हिन्दी भाषा की प्रवृत्ति : हिन्दी भाषा में सुर-लय-ताल है जिसे गाते ही मन-मयूर नाच उठता है। इसी से फिल्म उद्योग की धूम मची और फिल्मों ने ऐसा जादू बिखेरा कि अन्य भाषा - भाषी तथा विदेशी लोग भी हिन्दी गुनगुनाने लगे। इस प्रकार फिल्मों ने हिन्दी की बड़ी सेवा की, उसे प्रतिष्ठित कराया। देखिए.....

मेरा जूता है जापानी।
नैन लड़ जैहें तो मनवा में कसक होइबे करी।
आओं बच्चों तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिन्दुस्तान की।

दूरदर्शन पर हिन्दी : हिन्दी ने दूरदर्शन पर 'रामायण' - 'महाभारत' तथा 'हम लोग' जैसे कालजयी धारावाहक प्रस्तुत कर पूरे देश के जन-जन में एकता-अखण्डता का, देवी - देवताओं के प्रति आस्था का, लोगों में प्रेम-दया, परोपकार, सत्य अहिंसा एवं देश प्रेम की भावनायें जाग्रत कर दीं। इन धारावाहिकों के प्रसारण के समय लगता था पूरा देश ठहर गया हो। यह संभव हुआ हिन्दी भाषा की सरलता, सहजता तथा प्रवाह और उच्चारण में अर्थ-बोध के कारण।

हिन्दी भारत की सांस्कृतिक धरोहर : हमारी जीवन शैली ही हमारी संस्कृति है। इन गीतों से हमने दिनचर्या, आस्थाओं, मान्यताओं से हमारे तीज त्योहारों, जन्म से लेकर मृत्यु तक की अपनी परिपाटियों को देश-विदेश और सर्वत्र बचाये रखा, बनाये रखा।

क्यों मनाते हैं हिन्दी दिवस : हिन्दी के विशाल क्षेत्र एवं देववाणी संस्कृत से इसकी निकटता को देखते हुए 14 सितम्बर 1949 को देश की संविधान सभा ने हिन्दी को भारतीय संघ की आधिकारिक राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। तभी से प्रतिवर्ष 14 सितम्बर देश भर में हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हिन्दी है तो भारत है : देश वासियों! अगर आपको अपने राष्ट्र से थोड़ा सा भी प्रेम है और चाहते हैं कि हिन्दी राष्ट्रभाषा बने तो हिन्दी भाषा को अपनाएँ। अपनी भाषा हिन्दी को ध्वजवाहक बनायें। संयुक्त राष्ट्र के आकलन में 1980 में हिन्दी दुनिया में तीसरे स्थान पर थी। दुनिया के 150 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। पश्चिमी देशों में लगभग दो दर्जन पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित की जा रही हैं। हिन्दी भाषा के विकास के लिए यह शुभ संकेत है। बस कमी है तो दृढ़ राजनैतिक इच्छा शक्ति की।

अतः हिन्दी के हित में संकोच त्याग हिन्दी बोलें, लिखें। हस्ताक्षर, नाम तथा बैंक आदि के विवरण हिन्दी में लिखें। हिन्दी बोलने वालों का उत्साहवर्धन करें। ■

याद रखें " हिन्दी का ज्ञान आत्मगौरव।
हिन्दी में काम राष्ट्रगौरव। "

रेवती प्रसाद वार्ष्णेय
अध्यापक, कैम्पस स्कूल

हवा की सीख

हवा जो चली, धूल यों उड़ी, लग ही गयी आँखों में
मलते हुए चक्षु चला जो, मैं ये सोचता रह गया ...पर्दा ही था शायद
मैल का, दृष्टिन पर, पर शायद दिल में
बाहर की मिट्टी भली, दिल तो मैला रह गया!
हवा तो नाचते आगे बढ़ जाती, फिर सामना पेड़ या फिर चट्टानों से
न टस-से-मस पत्थर एक, लेकिन झोंका हट दूसरी तरफ अपना
रास्ता बना ही गया
अंजाने ही एक-दिन, ज्यों टकराया मैं किसी अजनबी से
बदले की भावना ऐसी, मैं तो क्षण-भर में खुद को हवा से पत्थर
बना ही गया!
ले चलती सबको, कहाँ पत्र-पन्ना, किसने पुराना-पत्ता जाना
ज़मीं पर बचा कहाँ कुछ भी, तेज़ हवा में सब कुछ फँस ही गया
जब देखा ये दृश्य, माथा ठनका,अनायास ही जीवन का सार जाना
करवाता कठपुतली-जैसा नाच हमसे ऊपरवाला,
ये सोच मैं अंजाने हँस ही गया!
धब्बे तो मिट जाते, स्वच्छ एवं निर्मल झोंकों से
भला होता उसका जो,
मस्त-चलते खुद हवा से मिल ही गया
पर मैं क्या करूँ? कैसे छोड़ूँ अहंकार, छूटूं जिद-से
ख्याल ही तो था, वो चला, वो चला ही गया!
चलना तो जीवन, संदेश यही देती हवा
अड़ा न रह चलता चल, मंजिल खुद पहुँच ही गया
चलते-चलते न सोच बुरा, न रख क्लेश न ही गिला-शिकवा
स्वच्छ मन सर्वानंद, जीवन बदल ही गया!

प्रोफेसर कांतेश बालानी

समय की सिकता पर...

नीर से उदित,
नीर में विलीन
असंख्य उर्मियों को
देखा है तुमने।
समय की सिकता पर
शब्दों के अशेष
सलनाओं को
टांका-सिया है तुमने।
ऋतुओं के रथ पर
सुनहरी-रुपहली
रेशमी रश्मियाँ
उतारी हैं तुमने।
मीमांसा-अभिवेगों के
सुरभित शुक्तिज
शशि-मणिकों को
कविता माना है हमने।

ओम प्रकाश शर्मा
परिसरवासी

स्वच्छ भारत अभियान और हम

माननीय प्रधान मंत्री के आह्वान पर देश को साफ और सुन्दर रखने हेतु आज समस्त भारतवासी स्वच्छ भारत अभियान में आपना योगदान देने में लगे हुए हैं। परन्तु मेरे मन को यह सवाल विचलित करता है कि क्या हम वास्तव में सफ़ाई के प्रति जागरुक हैं अथवा केवल दिखावा कर रहे हैं?

अपने संस्थान में सफ़ाई दिवस पर उपस्थित सभी लोग उस स्थान में सफ़ाई करने को लालायित थे जहाँ संस्थान के उपनिदेशक अथवा हमारे विभागीय अफसर उपस्थित थे। इस वर्ष दुर्गापूजा पंडाल में पुष्पान्जलि के पश्चात एक सज्जन ने अपने अध्यापक मित्र द्वारा पूजा की शुभकामना दिये जाने पर दुखी मन से बोले "अरे छोड़ो, अभी विद्यालय में सफ़ाई अभियान के लिए जाना है।" प्रथम व्यक्ति ने सन्तोषपूर्वक कहा, "हम बच गए, इस अभियान को हमारा विद्यालय नही मना रहा"। मेरे एक परिचित, गंगा सफाई जागरुकता हेतु शपथपत्र पर लोगों से हस्ताक्षर ले रहे थे। उन्होंने मुझसे भी हस्ताक्षर लेते हुए एक पन्ना जिस पर 15 बिंदुओं पर अमल करने के लिए लिखा हुआ था, मुझे दिया। उनमें से कुछ बातों को अमल करना आम व्यक्ति के लिए सम्भव ही नही, जैसे गंगा में गंदे नाले को न जाने देना। जब मैने उन्हें उन बिंदुओं को दिखाते हुए कहा कि इस पर अमल करना सम्भव ही नहीं तो उनके उत्तर कि 'मैं तो केवल कार्यकर्ताओं के अधिक से अधिक शपथपत्र भरने के अनुरोध को पूर्ण कर रहा हूँ' ने मुझे अचंभित कर दिया। यह सब विवरण सफ़ाई के प्रति हमारी सोच को ईंगित करता है।

कानपुर के इस सर्वाधिक बुद्धिजीवी संस्थान में रहते हुए भी हमारे संस्थानवासी सफ़ाई जैसे महत्वपूर्ण विषय पर उदासीन ही दिखते हैं। संस्थान में होने वाले किसी भी सामूहिक भोज जैसे विवाह, मेला, होली-मिलन आदि के उपरान्त सुन्दर हरा मैदान सफेद गिलास व पत्तलों से पटा रहता है, मानों बगुलों के असंख्य बच्चे हरियाली का आनन्द लेने आ गए हों। कितनी लज्जा की बात है कि कालीपूजा में भोग वितरण के समय बार-बार माईक पर घोषणा करनी पड़ती है कि भोग ग्रहण के पश्चात् अपने-अपने गिलासों व पत्तलों को विशेष रूप से मंगाई हुई कूड़ा गाड़ी में ही डालें। उससे भी लज्जाजनक बात यह कि कुछ लोग दूर से ही अपने गिलास व पत्तल को गाड़ी में फेकते हैं, जिनमें से कुछ गाड़ी के अन्दर पहुँचते ही नहीं है और उस स्थान को दूषित कर देते हैं। दीपावली में हम लक्ष्मी-गणेश की पूजा करते हैं और पिछले वर्ष की मूर्तियों/पूजा-सामग्रियों को पीपल के नीचे अथवा मंदिर के प्रांगण में रख देते हैं। इस प्रकार हम अपने परिसर को गंदा करते रहते हैं। हम तो पूजा स्थल को ही साफ़ नही रखते। आप किसी मन्दिर में जायें तो पाएँगे कि लोग पूजा हेतु मूर्तियों, कागज़ की तस्वीरों यहाँ तक कि उन शीशों (जिसे मूर्तियों की सुरक्षा के लिये लगाते हैं) पर पानी की बूँदे छिड़कते हैं व टीका लगा-लगा कर ऐसा कर देतें हैं कि भगवान का मुख व चरण तक नहीं दिखाई पड़ते। नवरात्रि, शिवरात्रि, हवन आदि उत्सव के दिनों में लोग फूल व मिष्ठान्न से मंदिर के फर्श को इतना गन्दा व चिपचिपा कर देते हैं कि आप का उन स्थानों पर चलना तक दूभर हो जाता है। मूर्तियों आदि पर पानी की बूँदें छिड़कना तथा टीका लगाना पूजा की पद्धति होती है, पर क्या हमारा कर्तव्य नहीं कि बूँदों के छिड़काव के बाद उन्हें तुरन्त पोंछ दें, अन्यथा पानी के दाग उन्हें कुरूप कर देते हैं, इसी तरह टीका केवल एक ही स्थान (मस्तिष्क के मध्य) पर लगायें। इससे न केवल मूर्तियाँ स्वच्छ रहेंगी अपितु पूजन के समय मन भी भक्तिमय रहेगा। भगवान के चरणों में फल एवं मिष्ठान्न लगाने मात्र से ही जब वह सामग्री

प्रसाद हो जाती है तो क्यों हम उसे भगवान के मुँह में ठूँस देते हैं? मिष्ठान्न को मूर्तियों व कागज़ की तस्वीरों पर लगाकर न केवल हम उन्हें गंदा करते है अपितु चींटियों एवं कीटों को भी आमन्त्रित करते है। फिर जीव हत्या को पाप मानने वाले हम अपने पैरों तलें चींटियों की और कीटों की मृत्यु का कारण बनते हैं।

अब प्रश्न है कि परिसर की सफ़ाई के प्रति हमारा कर्तव्य क्या है? कहावत है कि दवा खाकर बीमारी से बचने से अच्छा है कि बीमार न होने के उपाए किये जायें। तो क्यों न हम भी किसी विशेष दिन, विशेष स्थान की सफ़ाई न कर अपने विचार की सफ़ाई करें और छोटी-छोटी बातों, जैसे सार्वजनिक स्थानों पर गन्दगी ना करना, पूजन सामाग्रियों को भूविसर्जित करना, आदि का ध्यान रखकर पालन करें। ऐसी ही कुछ सामान्य व छोटी आदतों को अपनाकर अपने संस्थान के साथ देश की सफ़ाई में हम अपना कुछ योगदान कर सकते हैं।

हम सोचते हैं कि अकेले मेरे करने से क्या होगा, पर हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि कोई भी कार्य चाहे वह अच्छा हो या बुरा, यदि उसको कोई एक व्यक्ति करना आरम्भ कर दे तो उसकी देखा-देखी अन्य लोग भी उसे करने लगते हैं और अन्ततः वह एक आदत बन जाती है। अच्छी आदतें सभी को खुशियाँ देती हैं। जैसे सर्वप्रथम किसी सामान्य व्यक्ति ने ही पत्थर घिसकर आग उत्पन्न की थी, किसी अन्य साधारण मनुष्य ने अपना काम सरल करने के लिए साधारण सा चक्का बनाया फिर दूसरे लोगों ने इन कामों को दोहराते व शोध करते हुए मानव जीवन में क्रमशः क्रान्ति कर दी और हमारे जीवन को सरल व आरामदेह बनाने में योगदान दिया। बुरी आदतें कष्ट ही कष्ट देती हैं। जैसे किसी सार्वजनिक स्थान पर सर्वप्रथम किसी सामान्य मनुष्य ने ही पीक फेंककर उस स्थान को मैला किया और फिर अन्य लोगों ने इसे आदत बनाकर सर्वत्र पीक फेंकना आरम्भ कर दिया और पूरे नगर को ही पीकदान बना डाला। शायद इन्हीं घटनाओं से प्रेरित हो कर कविगुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर ने विश्वविख्यात कविता "जोदि तोर डाक सुने केयो ना आशे तौबे ऐकला चौलो रे" की रचना की होगी। तो आईए, हम भी अपने संस्थान को पहला ऐसा संस्थान बनाएं जहाँ सफ़ाई के लिये अभियान और दिवस की जरूरत ही ना रहे और हम न केवल इस देश बल्कि समग्र विश्व के लिये उदाहरण बन सकें। ■

उदय मज़ुमदार, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग

नर जब तक नतमस्तक हो नाहर करते वार।
नर जो सीना तान दे, झुके शीश संसार।

वक्त रहे कोशिश नहीं, लगातार विश्राम।
अब मेहनत क्या रंग दे, जब बदल गया परिणाम।

धोखा दें चोरी करैं, लूटैं शस्त्र दिखाय।
ते जन उतनै खात हैं, जो रिक्शाचालक खांय।

हसीब मुहम्मद, छात्र

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान–कल, आज और कल

कल्पना कीजिए कि ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के अंतर्गत अनेक नये कॉलेजों की स्थापना हुई है, साथ ही उनमें प्रवेश-प्रक्रिया आरंभ हो चुकी है। इन कॉलेजों में प्रवेश पाने के लिए छात्र बेहद रोमांचित हैं। लेकिन दुविधा यह है कि इन कॉलेजों के पास अब तक स्वयं के अपने कैम्पस अथवा हॉस्टल नहीं हैं, इसलिए निर्णय यह लिया गया है कि अस्थाई भवनों में कक्षा लगाई जायें तथा पुराने कॉलेजों की प्रयोगशालाओं में प्रायोगिक कार्य कराये जायें। इसके साथ अन्य कॉलेजों की फैकल्टी से शिक्षण हेतु अनुरोध किया गया है अथवा कहा गया है। इस क्रम में आपकी भेंट किसी छात्र से होती है और वह आपको बताता है कि मैंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से ग्रेजुएशन किया है तो आप सुनकर ही बेहद प्रसन्न हो जाते हैं। चूँकि ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की दुनिया भर में साख है, इसलिए आपकी नजर में उसका ओहदा बढ़ जाता है। लेकिन इन परिस्थितियों जिनकी हमने ऊपर चर्चा की है, में क्या किसी विश्वविद्यालय अथवा शोध संस्थानों को अपनी साख और गरिमा बचाए रखना संभव है? भारत में हाल के वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में क्राँति लाने का प्रयास किया गया है जो कागजों पर तो आकर्षक लग सकता है लेकिन जमीनी हकीकत तो कुछ और ही बयाँ करती है। देश में शैक्षिक उन्नति की आकांक्षा रखने वाले लोग इस कथित क्राँति के पक्षधर हो सकते हैं किन्तु सुविज्ञ लोगों की दृष्टि में शैक्षिक उन्नति के नाम पर इस प्रकार के अविवेकी एवं अनियोजित कदम देश की शिक्षा-शिक्षण के लिए कतई फलदायी नहीं है। उक्त संदर्भ में हम यहाँ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों से जुड़े ऐसे तमाम पहलुओं को समझने तथा उनका विश्लेषण करने का प्रयास कर रहे हैं जो उनकी प्रतिष्ठा (ब्रैण्ड नेम) से जुड़े हुये हैं।

उल्लेखनीय है कि भा.प्रौ.संस्थानों की संख्या जो वर्ष 2007 में केवल 7 थी, अब बढ़ कर 23 हो चुकी है अर्थात् वर्ष 2008 से लेकर वर्ष 2015 तक 16 नये भा.प्रौ.संस्थानों की स्थापना हो चुकी है अथवा वे स्थापना की प्रक्रिया में हैं। उच्च प्रौद्योगिकी शिक्षा के इस विस्तार को देखकर निस्संदेह देश के शिक्षाविद् आश्वस्त होने के स्थान पर कहीं कुछ आशंकित होने लगे हैं।

भा.प्रौ.संस्थानों के सिस्टम को सूक्ष्मता से जानने वाले लोग इस बात से चिंतित लगते हैं कि पर्याप्त संख्या में फैकल्टी एवं अनुसंधान अवसंरचना के अभाव में नव-स्थापित भा.प्रौ. संस्थान किस प्रकार से अपने छात्रों के साथ न्याय कर पायेंगे और विश्व में कायम अपनी साख को बचा पायेंगे। इस बात से पुराने भा.प्रौ.संस्थानों में पढ़ने वाले छात्र भी चिंतित हैं और सरकार से अनुनय-विनय करने लगे हैं कि धड़ल्ले से खोले जा रहे इन भा.प्रौ.संस्थानों पर विराम लगाया जाए। उनका कहना है कि पहले पुराने भा.प्रौ.संस्थानों को उन्नत किया जाए तथा शोध के क्षेत्र में उन्हें और उत्कृष्ट बनाया जाए। बिना मूलभूत व्यवस्थाओं के इन नये संस्थानों के नाम में आई.आई.टी. का टैग लगा देने से भला क्या फायदा? ऐसे आई.आई.टी. का क्या मतलब जहाँ विद्यार्थियों को प्रयोगशाला में कुछ करने के लिए अन्य कॉलेजों की बसों में बैठकर जाना पड़े!

वस्तुस्थिति यह है कि पुराने भा.प्रौ.संस्थानों को पहले से ही शिक्षकों की कमी से जूझना पड़ रहा है। इन भा.प्रौ.संस्थानों की स्थिति यह है कि वहाँ आज भी फैक्लटी की 43 % सीटें रिक्त हैं और करेले पर नीम चढ़ा यह कि इनको ही नये भा. प्रौ.संस्थानों की देख-रेख या संचालन का जिम्मा दे दिया गया है जहाँ इन्हें अपनी फैकल्टी को पढ़ाने के लिए भेजना पड़ता है। हमारे देश में प्रति वर्ष 10 लाख विद्यार्थी स्नातक की उपाधि प्राप्त करते हैं। अतः इस बात से तो इंकार नहीं किया जा सकता कि उच्च शिक्षा के लिए हमें संस्थानों की जरूरत हैं। देश के शिक्षाविदों एवं जनसामान्य को दो बातें समझ नहीं आ रही हैं। पहली यह कि नये भा.प्रौ.संस्थान खोलने के लिए इतनी हड़बड़ी क्यों मचाई जा रही है और दूसरी यह कि यदि

नये संस्थान खोले भी जा रहे हैं, तो उन पर आई.आई.टी. का टैग क्यों? निस्संदेह हमारा देश लोकतांत्रिक देश है जहाँ जनता के द्वारा चुनी गई सरकार का देश के विकास के लिए नीतियाँ बनाना उचित और स्वाभाविक है लेकिन कितना अच्छा हो यदि सरकार इन नीतियों को बनाते समय यह भी ध्यान रखे कि इन नीतियों को क्रियान्वित करते समय वस्तुजन्य स्थितियाँ क्या है और क्या ये व्यवहार में अपने लक्ष्य तथा अभीष्ट को यथासमय प्राप्त कर पायेंगे? गरीब मेधावी छात्रों को अपने कुशल मार्गदर्शन एवं परिश्रम से आईआईटियन बनाने वाले विद्वानों ने भी अपनी चिंता जाहिर करते हुए आश्चर्य प्रकट किया है कि इतनी संख्या में आई.आई.टी. खोलने का क्या फायदा अगर हम छात्रों को वांछित गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान नहीं कर सकते।

वर्ष 2013 में चल रहे 16 भा.प्रौ.संस्थानों में शिक्षक-विद्यार्थी का औसत अनुपात 1:16:5 का था। जिसमें विजिटिंग फैकल्टी भी शामिल थे। इनमें निम्नांकित चार भा.प्रौ.संस्थानों की स्थिति अत्यन्त दयनीय थीः

आईआईटी दिल्ली	1:19
आईआईटी रूड़की	1:19
आईआईटी खड़्गपुर	1:18
आईआईटी बी.एच.यू.	1:22

शिक्षकों की कमी से अप्रत्यक्ष नुकसान यह होता है कि विद्यार्थियों को पर्याप्त संख्या में पी.एचडी. की ओर अग्रसर करने में बाधा आती है। भारत में प्रतिवर्ष 3,000 इंजीनियर एवं टेक्निकल पी. एचडी. तैयार होते हैं, वहीं अमेरिका और चीन में यह संख्या क्रमशः 8,000 एवं 9,000 रहती है। वर्ष 2008 के बाद स्थापित आई.आई.टी. अभी भी उधारी के कैम्पस में चल रहे हैं। उनके पास अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं एवं आधारभूत अवसंरचना का नितांत अभाव है। इन आई.आई.टी. में हॉस्टलों की समुचित व्यवस्था नहीं है साथ-ही-साथ वहाँ के छात्रों को शिक्षकों के अभाव को भी झेलना पड़ रहा है। तिरूपति एवं पाल्लक्कड़ में इस वर्ष से प्रथम वर्ष का बैच शुरु होने वाला है जो अस्थायी कैम्पस में शुरु होंगे। और तो और, इन संस्थानों के लिए अब तक निदेशक भी नियुक्त नहीं किये जा सके हैं। अतः इनके देख-रेख की जिम्मेदारी आई.आई.टी. मद्रास को दे दी गई है। हालत यह है कि कैम्पस के लिए नियत स्थान पर अभी तक निर्माण कार्य भी चालू नहीं हुआ है।

प्रत्यक्ष रूप से छात्रों में आई.आई.टी. में प्रवेश पाने की होड़ लगी हुई। इस हेतु वे कोचिंग की ओर दौड़ लगाते हैं, फलस्वरूप कोचिंग उद्योग अपने पूरे शवाब पर है। लेकिन तथ्य यह है कि 2008 के बाद की संयुक्त प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थी नये आई.आई.टी. जहाँ स्थाई कैम्पस, प्रयोगशालाओं एवं फैकल्टी का अभाव हैं, के स्थान पर पुराने आई.आई.टी. अथवा विकल्प के रूप में एनआईटी में प्रवेश लेने के लिए अधिक इच्छुक रहते हैं।

इसमें कोई शक नहीं है कि आई.आई.टी. के कारण दुनिया में भारत का नाम हुआ है और ये भारत का गौरव हैं। आई.आई.टी. टैग के कारण यहाँ के छात्रों को बड़ी-बड़ी कंपनियों में सहजता से काम करने का अवसर मिल जाता है तथा उन्हें विश्व के शीर्षस्थ संस्थानों में आगे पढ़ाई करने के लिए प्रवेश भी सुगमता से मिल जाता है, जहाँ से पढ़ाई करने के बाद ये छात्र देश में वापस आने पर अपने अनुभवों के बलबूते रक्षा, रेलवे, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों के विकास में अपनी भागीदारी से निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

शिक्षाविद् इस बात से सहमत हैं कि आई.आई.टी. के आगे बढ़ने में तीन कारण मुख्य बाधक हैं- निधियन (Funding), आधारभूत संरचना एवं अनुसंधान । वे इस बात के पक्षधर हैं कि इन संस्थानों में अनुसंधान एवं विकास के लिए अच्छा वातावरण तैयार किया जाना चाहिए जो उच्च- स्तरीय शोध को बढ़ावा देने में सक्षम हो, अत्याधुनिक आधारभूत संरचना को सुगम बना सके तथा उनकी अच्छे ढंग से फंडिग हो सके। अच्छी संख्या में फैकल्टी को तैयार करना अधिकाधिक शोध कार्यों से ही संभव है। और यदि प्रत्येक फैकल्टी सदस्य अपनी देख-रेख में चार या पाँच भी अच्छे रिसर्च स्कालर प्रशिक्षित करने लगे और उन्हें भावी फैकल्टी के रूप में खड़ा कर सकें तो निस्संदेह हम इस समस्या से पार पा सकते हैं। वैश्विक

परिप्रेक्ष्य में प्रस्तावित पाठ्यक्रमों को भी संशोधित करने की जरूरत है तथा जो पाठ्यक्रम अब प्रचलन में नहीं हैं, उन्हें खत्म कर देना चाहिए। विश्व के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर वर्चुएल क्लासेज एवं ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को शुरु करना भी इस संदर्भ में एक अच्छा विचार हो सकता है। इस हेतु विद्यार्थी एवं फैकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम तथा आपसी सहयोग से शोध कार्य करने की प्रवृत्ति विकसित किये जाने की जरूरत है। इसके साथ-साथ हर आई.आई.टी. में यदि इनोवेशन का माहौल बनाने के निमित्त रिसर्च पार्क भी स्थापित कर दिये जायें तो यह सोने में सुहागा जैसा हो जाएगा और सरकार अपनी मंशा में बहुत कुछ सफल हो सकेगी। ■

भारत देशमुख
कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक (अनुवाद)

आंकड़े आभार-: हिन्दुस्तान टाइम्स

Designed by Srishti Singh

अवगुणों को मिटाने का उपाय

अपना अवगुण अपने को दिखने लग जाय, यह बहुत बढिया बात है यह जितना स्पष्ट दिखेगा, उतना ही उस अवगुण के साथ संबंध विच्छेद होगा-यह एक बड़े तत्व की बात है। जैसे आँख में लगा हुआ अंजन आँख को नहीं दिखता, पर दूसरी सब चीजें दिखती हैं।

स्वामी राससुखदास

आपके नाम की...

रंग-रूप, सौन्दर्य समर्पित आपको,
यह कामिल-काया आपके नाम की
मांग मेरी, सिंदूर आपके नाम का
पाँव मेरे, महावर आप के नाम की
तन मेरा, हल्दी आपके नाम की
करमूल मेरे, चूड़ी आपके नाम की
प्रियतम-प्रेम से पगी हथेलियाँ मेरी
रोही रची मेहँदी आपके नाम की
सकुचाहट, सकल लाज-लज्जा मेरी,
चम-चम चुनरिया आपके नाम की
निशापति बन मस्तक मेरे सजी,
आभा-स्वर बिंदिया आपके नाम की
बन संगीत-जीवन लिपटी मेरे हिय
मंगल-सूत्र शिफा आपके नाम की
निराहार-निर्जला व्रत-उपास मैं करूं,
शुभाशीषें सदा आपके नाम की
निज उदर, निज रक्त-पल्लवित,
सदन, संतति आपके नाम की
नित अर्चना, चरण-वन्दन मैं करूं
सदा-सुहागन, सदा आपके नाम की
नाम, उपनाम, गोत्र सब आपका,
पद-प्रतिष्ठा-प्रतीति सब आपकी
फिर अपमानित हो नारी ही क्यों,
यह अपकीर्ति पुरुष के नाम की

प्रदीप कुमार शिवहरे
सामुदायिक रेडियो

कार्यालयीन उपयोगी टिप्पणियाँ/शब्द

आगे भेजने के लिए	For onward transmission
सहानुभूतिपूर्ण विचार के लिए	For sympathetic consideration
भुगतान के लिए स्वीकृत	Accepted for payment
अवकाश की अनुमति	Leave of absence
अनुमोदित/स्वीकृत	Approved/Sanctioned
पावती पहले ही भेजी जा चुकी है	Acknowledgement has already been sent
विधिवत् पालन किया गया	Duly complied
भुगतान के लिए पास करें	May be passed for payment
सत्यापन के लिए प्रस्तुत करें	Put up for verification
विस्तृत जानकारी दें	Give details
अवलोकनार्थ प्रस्तुत	Submitted for perusal
कार्यभार ग्रहण करना	Take over charge

अलविदा

देखिए, मैं बच्चों को कोई संदेश नहीं देना चाहूँगा, क्यों कि वे खुद एक संदेश के साथ पैदा होते हैं। वे नए, प्रसन्न और ताज़े होते हैं। उनसे कुछ कहने के स्थान पर मैं उनके माता-पिताओं और शिक्षकों से अपील करना चाहूँगा कि वे इन बच्चों पर अपनी कुंठाओं का बोझ न लादें और उनके नए और ताजेपन को बना रहने दें, उन्हें प्रसन्न रहने दें। आपकी निराशाएं और कुंठाएं उनके निर्मल मन को प्रदूषित कर देंगी। उन्हें निराशाएं देने के बजाए आशाएं दीजिए उनके सुनहरे भविष्य की, कुछ करने या बनने की महत्वाकांक्षाएं दीजिए हर तरह से प्रोत्साहित कीजिए। इससे उनका भी भला होगा और देश का भी। यही संदेश मैं अपने पाठकों को भी देना चाहूँगा।

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम
भारत 2020

संपर्क

राजभाषा प्रकोष्ठ
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (उ.प्र.)
दूरभाष-0512-259-7122, 2596192
ईमेल-blohani@iitk.ac.in, vedps@iitk.ac.in, sunitas@iitk.ac.in

http://www.iitk.ac.in/infocell/iitk/newhtml/Antas/

स्वच्छ भारत
स्वच्छता की ओर एक कदम

अभिकल्प (Design)
सुनीता सिंह

SOLAR#9839030452